Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

✶ ओ३म् ✶

पशु चिकित्सा

(इसमें गाय, बैल, भैंस, बकरी, कुत्ता व मुर्गा आदि पशु-पक्षियों के होने वाले रोग एवं उनकी चिकित्सा का वर्णन दिया गया है)

लेखक--
आचार्य श्री शिवनाथराय जी 'तस्कीन'

प्रकाशक—
गर्ग एण्ड को०
४८४, खारी बावली दिल्ली—६

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक :—

गर्ग एण्ड कम्पनी

४८४, खारी बावली, दिल्ली-११०००६
फोन : २३८८४१

आवरण मुद्रक : सैन्टल प्रिंटिंग प्रैस दिल्ली—६

मुद्रक :—
श्री बालाजी प्रिंटिंग प्रैस
बादली दिल्ली-४२

दो शब्द

किसी भी उन्नतिशील राष्ट्र के नागरिकों को रोग रहित एवं स्वस्थ होना जितना आवश्यक है, उतना ही वहाँ के पशु-पक्षियों का स्वस्थ होना भी आवश्यक है। यह एक सिद्धांत की बात है, फिर भारतवर्ष तो कृषि-प्रधान राष्ट है, अतः इसमें तो पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य की और विशेष ध्यान देना परमावश्यक ही हो जाता है। प्रश्न होता है इसके पूर्ण होने का ? तो जहाँ राष्ट्रीय सरकार पर इस कार्य को पूर्ण करने का दायित्व है वहाँ राष्ट्रवासियों का भी कुछ कर्तव्य होता है और उसो कर्तव्य को समक्ष रखते हुए मैंने पशुओ की चिकित्सा सम्बन्धी इस पुस्तक का निर्मांण कुछ समय पूर्व किया था। पुस्तक कितनी लोकप्रिय सिद्ध हुई, इसका उदारण सामने हैं कि इसके अब तक कई संस्करण हाथों हाथ समाप्त हो चुके हैं।

इस पुस्तक के लेखन में मुझे 'श्री मुन्नीलाल जी सम्मल्वाल आफ वैंट्रीनरी हस्पताल हिसार (पंजाब)' का विशेष सहयोग मिला था, अतः जनकल्याण की दृष्टि से किया गया उनका यह सहयोग भी सराहनीय है।

अन्त में मैं अपने राष्ट्रवासियों से अपील करता हूँ कि वह अपने परिवार की स्वास्थ्य-दृष्टि की भांति ही, अपने जीवन सहयोगी पशुओं के स्वास्थ्य की और भी विशेष ध्यान रखें और यदि कोई रोग प्रतीत हो तो इस किताब की सहायना से उसे दूर करने का यत्न करें।

—लेखक

विषय सूची



भारत के उन स्वस्थ ग्रामीणों को

—: जो :—

अपनी व अपने जानवरों की महनत द्वारा भारत की धरती से सोना उगाते हैं।

समर्पित !

—प्रकाशक

नवीन पशु चिकित्सा

प्रथम अध्याय

पशु–घर (मवेशीखाना)

मवेशियों के रहने का स्थान, घर से कुछ हट कर होना चाहिये। घर के समीप मवेशीखाना रखने से घर में तरह–तरह के रोग फैलने का डर रहता है। क्योंकि मवेशियों की देह में होने वाले कीड़े, उनके गोबर और पेशाव की महक की वजह से उत्पन्न होने वाले मच्छर इत्यादि घर में रहने वालों की देह से लिपटने लगते हैं। जिस घर के समीप ही मवेशीखाना होता है उस घर में खाने पीने की चीजों में भी कभी-कभी मवेशियों की देह के कीड़े, मच्छर और उनकी देह के रोये पाये जाते हैं, जो कि स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हैं।

मवेशियों के स्वास्थ्य का ख्याल रख कर ही मवेशीखाना वनाना चाहिये। मनुष्यों के रहने के लिये घर बनाते समय, जिस प्रकार धूप वर्षा और ठन्ड से इनके बचाव का ख्याल रख कर ही घर वनाया जाता है। ढोरों के लिये घर बनाते समय भी ऐसा ही ख्याल रखना चाहिये। भली–बुरी ऋतुओं का भी जानवरों के ऊपर वहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। वहुत से देहातों में वारहों मास पशुओं को खुले मैदान में रखा जाता है।

ऐसा कायदा उनके स्वास्थ्य के लिये बहुत ही बुरा साबित हुआ है। ऐसी जगहों में रहने वाले पशु गरमी में धूप, बरसात में वर्षा और जाडे में ठण्ड के कारण बहुत ही ज्यादा कष्ट पाते, रोगी होते और मर जाते हैं। प्रत्येक ऋतु के बुरे प्रभाव के कारण बेचारे अनबोलते पशुओं के ऊपर क्या बीतती है इस पर लोग विचार करना उचित नहीं समझते। जिस चीज से आराम मिले उसकी रक्षा करना भी मनुष्य का कर्तव्य है।

जानवरों के रहने का स्थान ढंग का हो

जीवन में काम करने के लिए जितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती है अधिकतर वह हमें पशुओं से ही मिलती हैं। दूध दही, मक्खन, घी, जलवान, चर्म और हड्डी इत्यादि ऐसी ही वस्तुओं में से हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के लिए सबसे आवश्यक अन्न के उत्पन्न करने में भीं हमें इन्हीं पशुओं से काफी सहायता लेनी पड़ती है। इतना होने पर हम लोग उनको बड़ी बुरी तरह से रखते हैं, यह बड़ी शर्म की बात है। इनके लिये देहातों में पशु पालने की शिक्षा और उनसे होने वाले लाभ की ओर लोगों को दृष्टि डालनी चाहिए। पशुओं की अवस्था में जब उन्नति होगी देहात के रहने वालों की आर्थिक अवस्था भी तब ही सुधर सकेगी।

पशुओं की आवश्यकताओं का जो हर समय ध्यान रखता है वास्तव में वह सच्चा किसान है। दोनों समय सानी-पानी और खेतों के खुले मैदान में उन्हें चरने के लिए छोड़ना, नदी या तालाब में नहलाना, गरमी के दिनों में दो तीन बार पानी पिलाना इत्यादि ठण्डे पेड़ों के नीचे गरमी ऋतु में दोपहर को बांधना' वर्षा और ठण्ड के समय छप्पर के नीचे रखना और जब रात में ज्यादा ठण्ड पड़ती हो तो उस समय उनकी देह पर टाट इत्यादि

को ओढ़ाये रखना या मवेशीखाने को गरम रखने के लिए आग जलाना इत्यादि उनकी मुख्य आवश्यकताओं में से हैं। पशुओं को भोजन देते समय यह बात जहां तक हो सके जरुर ही ध्यान में रखनी चाहिये कि उन्हें गली सड़ी या झूटी चीजें खाने को न दी जायें । जैसे गली सड़ी बस्तुओं के खाने से मनुष्य का स्वास्थ्य बिगड़ता है ठोक वैसे ही पशुओं का भी स्बास्थ्य बिगड़ता है । उपर वतलाई हुई पशुओं की आवश्यकताओं का बराबर ध्यान रखने से उनका स्वस्य्य ठीक बना रहता है। मवेशियों के जब बछड़े उत्पन्न हों तब उस समय भी धूप से, उन दोनों मवेशी और उनके बछड़े की रक्षा और खान पान पर, उनके स्वास्थ्य के नियम के अनुसार ध्यान रखना आवश्यक है।

कम से कम दिन में दो-तीन वार तो मवेशीखाने की सफाई करनी चाहिए। मवेशीयों के खाने के पश्चात बचे हुए घास-पात सानी या उनके गोबर पेशाब इत्यादि को अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए। जिस प्रकार मल-मूत्र और अपने झूठन से मनुस्य को घृणा है, पशुओं को भी उसी तरह गन्दी चीजों से घृणा होती है। इसलिए मवेशीखाने की सफाई के वराबर ध्यान रखना चाहिए। यदि मवेशीखाने की सफाई न की जायेगी तो वहां रहने वाले पशु भोजन करने, उठने, बठने या सोने में हर समय घिनाते रहेंगे, जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्व पर बुरा पड़ेगा।

गौ सफाई पसन्द करती है

ऐसा भी देखने में आया है कि लोग छोटी-छोंटी कोठरियों में वहुत से पशुओं को एक साथ वाँध देते हैं। ऐसा कदापि न करना चाहिये। ऐसा करना वहुत ही हानिकारक है। प्रत्येक की

प्रकृति एक दूसरे से अलग होती है। आपने देखा ही होगा कि गौ सफाई पसन्द करती है और भेंस कीचड़ और मिट्टी वाले स्थान यानी गन्दी जगह में प्रसन्न रहती है। इसलिए भिन्न २ प्रकृति वाले पशुओं को अलग २ स्थानों पर ही रखना चाहिए।

मवेशीखाने के अन्दर का फश पक्का होना चहिए और जिस और पशु के खूँटे हो उस तरफ का फर्श ऊंचा होना चाहिए और पीछली ओर से नीचा यानी ढालू होना चाहिए ताकि पशुओं का मूत्र आदि नीचे की और बहकर मवेशीखाने के बाहर निकल जावे। यदि गोबर लीद और मूत्र आदि वहां पड़े रहे तो उससे पशु बिमार हो जाते हैं केवल इतना ही नहीं बल्कि मवेशीखाने की गन्दगी और दुर्गन्द पशुओं के रखवाले पर भी, जोकि वहीं पर रहता है बहुत बुरा प्रभाव डालती है। यह दुर्गन्ध उसके स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं; पशुओं के बीमार होंने के साथ ही साथ वह भी बीमार हो जाता है। यह देखने में आया है कि लोग जिस कमरे में ढोर बांधते है उसी कमरे कें एक कोने में गोबर का एक बहुत बड़ा ढेर लगा देते हैं। यह ढेर बाद में खाद का काम देता है।

प्यारे पाठको ! खाद के लिए ढोरों के रहने के स्थान में गोबर का ढेर लगाना बहुत ही हानीकारक है। गोबर उठानें में आलस्य से काम लिया और गोबर का लोभ भी किया, लाभ तो इससे कुछ हुआ नहीं, हां, पशु बीमार अवश्य हो गया और थोड़ा–सा लोभ या आलस्य बहुत बड़ी हानि का कारण बन गया। कहने का तात्पर्य यह है यदि खेती के काम के लिये खाद इकट्ठी करने की आवश्यकता हो तो उसे ढोरों के रहने के स्थान और अपने निवास स्थान से भी कुछ दूर हटकर इकट्ठा करना चाहिए। घर कें समीप खाद रहने से उसकी सड़ी गन्ध

से तरह-तरह की बीमारियों के फैलने का डर रहता है। खाद रखने के लिये गड्ढे खोदने हों तो गड्ढे बनाने और उनके ढकने के कायदे की जानकारी कर लेना अत्यावश्यक है। इनकी जानकारी कर लेने के बाद फिर बरसात के दिनों में खाद बिगड़ने नहीं पाती। यदि गड्ढे और उनके ढकने की ओर ज्यादा ध्यान न दिया जायेगा तो वर्षा ऋतु में जल के गड्ढे के भीतर जाने से खाद सब की सब खराब हो जाएगी। और यदि उसे फिर प्रयोग में लाया जायेगा तो फिर खेतों को उतना फायदा न पहुंच सकेगा जितना कि अच्छे ढङ्ग से तैयार की गई खाद से पहुँच सकता है। इसके सम्बन्ध में क्रियात्मिक सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिये आप मेरी नई पुस्तक 'तरकारी और अनाज की खती" अवश्य पढ़िये।

गोबरकी खाद एक अच्छी रसायनिक खाद है

खाद में मवेशियों का गोबर, गोशालाओं की पेशाव से भींगी हुई मिट्टी और उनके खाने के बाद बची हुई सानी इत्यादि को इकट्ठा करके नित्य प्रति गड्डे में डालते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त साग भाजी की कतरन और अनाज मिले हुये घर के कतवार इत्यादि को भी जमा करके डालते रहना चाहिए। जब उस गड्ढे में गोबर और कतवार इत्यादि हाथ ढेड हाथ ऊंचे हो जायें तब उनके ऊपर थोड़ा चूना और जल छोड़क कर नियम के अनुसार खाद रखते जाना चाहिए, जब खाद से गड्ढा अच्छी तरह भर जाय तब इसको मिट्टी से अच्छी तरह से ढक कर फिर दूसरे स्थान पर खाद रखने के लिए गढ्डे खोदने चाहिए जैसा की मैं ऊपर कह आया हूं, अधिकतर देहातों में घर और मवेशीखाने की बगल में ही खाद रखने का रिवाज हैं, किन्तु यह काम स्वास्थ्य के लिये बहुत ही बुरा है। इस तरह

से घर की वगल में खोद रखने से घर के रहने वालों का ही नहीं वल्कि पशुओं का भी स्वास्थ्य विगड़ता है ।

मवेशीखानों में हवा के लिए भी काफी खिड़कियां होनी चाहिये क्योंकि ऐसे स्थानों में जहां पर कि पर्याप्त हवा का प्रवेश नहीं हो पाता, रहने से पशु बीमार हो जाते हैं ।

पशुओं की खुराक

पशुओं के रहने के स्थान के वाद, उनके स्वास्थ्य के लिए उनकी खुराक की ओर ध्यान देना आवश्यक है । जानवर के स्वास्थ्य को देखते हुए उसको ऋतु अनुकुल हरा चारा देना चाहिये । शहरों की अपेक्षा देहातों में मवेशियों के लिए अच्छी खुराक के मिलने की आसानी रहती हैं। शहरों में ताजी और वैसी घास नहीं मिल सकती जैसी की देहातों में मिल सकती है जगह की कमी के कारण नगरों में चरागाह तो विल्कुल होता ही नहीं, डोरों को वक्त पर अन्दाज से खुराक देनी चाहिए । दूध देने वाले और मेहनत करने वाले मवेशियों की खराक में भेद होता है । दूध देने वाले जानवरों के लिए घास अत्यावश्यक है । उनके लिए हरे चारे के साथ सरसों या तिल्ली की खली और दाना तथा चूनी-चोकर देने की आवश्यकता हैं । पानी में आटा घोलकर भी सानी दी जा सकती है और विनौले को तो आप उसके लिए अत्यन्त लाभदायक वस्तु समझिये ।

गाय का मुख्य भोजन तो घास है किन्तु घास के न होने की दशा में उसको ज्वार, वाजरा की कड़बी, उर्द और जौ का भुस दिया जाता है ।

अच्छी खुराक पशु को अच्छे शरीर की देन हैं

दूध देने वालीं गाय को ज्वार की कड़बी और गेहूँ का भुस,

तिल की खली मिलाकर देनो चाहिए। जाड़े के दिनों में गाय को तिल की खली जो कि मिठो खली के नाम से प्रसिद्ध है देनी चाहिए और सरसों की खली जिसको कड़वी खली कहते हैं। गर्मियों में देनी चाहिए।

गाय की बिमारी दशा में अलसीं की खली देना वहुत ही लाभदायक है।

दूध देने वाली गाय के लिए सव से अच्छी खुराक सूखी घास है।

अमरिका में गऊशालाओं में मवेशियों के लिए सूखी घास इस प्रकार इक्ट्टी की जातो है—फार्म में एक और २० फुट लम्वा १५ फुट चोड़ी और २० फुट गहरा गढ़ा खोदकर उसमें थोड़ी सी गन्धक और चूना डाल देते हैं फिर उस गढ़े को ऊपर तक हरी घास से भरकर ऊपर तक मिट्टी से ढ़क देते हैं ताकि हवा गढ़े में न जा सके। तीन चार मास के पश्चात् ऊपर से मिट्टी हटाकर घास निकालकर ढोरों को खिलाते हैं। भारत में सरकारो कैटल फार्मज में यह तरीका वढ़ता जाता है जिन स्थानों में हरी घास बिल्कुल नहीं मिलती या कम मिलती है वहां पर इसीं सर्वोतम विधि से घास इकट्ठी करके ढोरों को खिलाई जाती है।

सानी—ज्वार की क.वी को वहुत महीन २ गंडासे से कूटकर जल से धोकर स्वच्छ करलें और उसमें चार पहर तक मिट्टी के वर्तन में भिगोई हुई खली मिला देवे बस इसी का नाम सानी है। इसमें थोड़ा सा नमक मिला लिया करें।

गर्मी के मौसम में खलो को दो घण्टे तक भिगोना ही

काफी है। यदि गर्मी की ऋतु में खली को अधिक भिगोया जावे तो वह खराब हो जाती है और खाने के योग्य नहीं रहती।

वर्तन में से भिगोई हुई खली निकालकर वर्तन भली भांति धो देना चाहिये। यही नहीं बल्कि उस स्थान को भी अच्छी तरह से धो देना चाहिये।

गर्मी की ऋतु में खली जिस पात्र में भिगोयें उसे खुली वायु में रखना चाहिये ताकि वह गर्मी के कारण खराब न हो जावे।

घोड़े की खुराक—घोड़े के लिये सबसे अच्छी खाने की वस्तु है घास। यह घोड़े को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाती। हर समय इसे दे सकते हैं। घास खिलाने की विधि यह है कि घास लेकर पहले भली-भांति धो लेवें, बाद को सुखा लेवें। यह घास घोड़े का सर्वोत्तम भोजन है। घोड़े को एकदम पेट भर न खिलाना चाहिए, बल्कि थोड़ी-थोड़ी देर के बाद थोड़ी-थोड़ी घास डालनी चाहिए, इससे घोड़ा पेट के रोगों से बचा रहता है। घोड़े की शक्ति बढ़ाने के लिए उसको दिन में तीन बार दाना देना चाहिये। दाने से मुराद चना है और उसके देने की विधि यह है कि दला हुआ चना लेकर कुछ देर तक भिगों देवें फिर तोबड़े में भर कर घोड़े को खिलावें। तोबड़े में थोड़ा नमक भी भर लेना चाहिए।

घोड़े के लिए अच्छे चारे और अच्छे स्थान के अतिरिक्त स्वच्छ पानी भी अत्यावश्यक है। मेरे देखने में आया है कि गांव में मवेशी प्रायः गढ़ों में इकट्ठा हुआ वर्षा का जल और ऐसे छोटे-छोटे बच्चे जोहड़ों का पानी पीते हैं जहां पर धोबो

कपड़े धोते हैं। ऐसे पोखरों में से ढोरों को जल पिलाया जाता है जहां पर कि भैंसों को नहलाया जाता है, जहां पर कि मनुष्य शौच जाते हैं—ऐसा गन्दा पानी पशुओं को पिलाया जाता है और इस तरह से मवेशियों के स्वास्थ्य से खेला जाता है। यदि थोड़ी सी मेहनत से काम लेकर ढोरों को कुओं से जल खींचकर पिलाया जावे तो इससे वह सदा स्वस्थ रहकर अच्छा काम दे सकते हैं।

जिस तरह मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए स्नान एक आवश्यक चीज है इसी तरह जानवरों को उनकी तन्दुरुस्ती के लिए नहलाना अत्यावश्यक है, परन्तु जल स्वच्छ होना चाहिए न कि मैला और गन्दा, जिसका कि हम ऊपर वर्णन कर आये है। गन्दे जल में नहलाने से घोड़ा हो या बैल, गाय हो या भैंस उनको तरह-तरह के रोग घेर लेते हैं। जैसे कई किस्म के चर्म रोग खून व आंव के दस्त इत्यादि। यदि जानवरों को नहलाने का जल स्वच्छ हो तब तो फिर कहना ही क्या है, त्वचा के रोग उन्हें छू नहीं सकते।



आग से जलना

गोले का तेल एक भाग और लाईम वाटर (चूने का पानी) दो भाग, हिला कर मिलाकर लगायें।

अधोवायु का बन्द हो जाना

इन्द्रायणी का फल डेढ़ छटांक लेकर जल में गर्म करके मल कर ठण्डा होने पर पशु को पिलाये।

गले की सूजन

अलसी का तेल एक पाव, गन्धक आध पाव, सोंठ एक तोला सबको मिलाकर पशु को खिलावें।

घाव के कीड़े

तारपीन के तेल में कपूर डालकर गुनगुना करके घाव पर छिड़कें।

आँख दुखना

छोटी हरड़ घी में भूनकर नमक के साथ पीस लें और आंख के आस पास उसका लेप करें।

जूएं पड़ना

नीम, सरसों का तेल, प्याज और नीला थोथा चूल्हे पर चढ़ाकर गरम करलें। ठण्डा होने पर मालिश करें।

फेफड़े, बच्चेदानी और आंतों से खून आना।

आम की हरी छाल का अर्क दो तोला, दो अण्डों की सफेदी, एक माशा अफीम दिन में तीन बार दे।

पेचिश

तेल अरण्डी का एक पाव, गोंद बबूल का एक छटांक, अफीम तीन माशा, पानी आधा पाव, खरल करके दिन में दो बार दें।

खाने को केवल चावलों का मांड दें।

बदहज़मी

अजवायन दो तोला, हींग एक तोला, सोंठ दो तोला, काला नमक दो तोला, आध सेर गर्म जल मिलाकर दिन में दो बार दें।

पेट का अफारा

काली मिर्च दो तोला, हींग एक तोला, तारपीन का तेल पांच तोला, अलसी का तेल दस छटांक। यह एक खुराक है दिन में एक बार दे।

पेट का दर्द

कपूर चार माशा, अजवायन एक तोला, हींग एक तोला, भंग एक तोला, शराब देशी आध पाव, गर्म जल आध सेर। छ:-छ: घण्टा बाद दें।

—॰—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

पशुओं के रोग, लक्षण, कारण और चिकित्सा



घोड़े के रोग और उनका इलाज

कुरकुरी

कुरकुरी घोड़े को बहुत दुःख देने वाली बीमारी है। इस बीमारी की सात किस्में हैं। मैं यहां सातों किस्मों का वर्णन करूंगा।

कारण और लक्षण:—यह रोग बहुधा खाने-पीने की खराबी से पैदा हो जाया करता है। इसमें घोड़े के पेट में बहुत दर्द रहता है, न खा सकता है और न पी सकता है। कभी लेटता है और और कभी खड़ा होता है। उसको पसीना बहुत आता है और मुख से पानी भी बहुत बहता है।

पहली किस्म की कुरकुरी की चिकित्सा—पहली किस्म कुरकुरी में घोड़े का मूत्र बन्द हो जाता है और शरीर में बार-२

तनाव पैदा होता है। और वह अपनी मूत्रेन्द्रिय को कभी बाहर करता है और कभी भीतर। इसमें लाल मिर्च लेकर पहले पीसें और फिर सूत की बत्ती बनाकर उस पर वह पिसी हुई मिर्चें छिड़क कर घोड़े के मूत्र मार्ग में दाखिल करें। इससे उसे खुल कर पेशाब आ जायेगा।

यदि घोड़ी हो तो बत्ती उसकी योनि में रख देने से उसका पेशाब उतर आता है।

यदि बत्तो रखने से पेशाब न उतरे तो उसको थोड़ा सा कतीरा खिला देवें।

या

एक छटांक शोरा जल में घोलकर पिलादें।

या

बेर की पत्ती पीसकर, लुगदी बनाकर मूत्र द्वार में रक्खें।

या

नासिक द्वारा खालिस सरसों का तेल पिलावे।

या

उसके सिर में से दो चार जुएं निकाल कर उसके कान में डाल देवें।

या

राई जल में पीसकर उसके अण्डकोशों पर मलें।

या

एक सेर जल में थोड़ी सो इमली घोल कर उसे पिलादें।

या

खीरा और ककड़ी के वीज समान भाग लेकर पानी में पीस कर उसे पिलादें।

या

लोटे में पानी भरकर, टोंटी में से घोड़ी की योनि के पास जमीन पर गिरावें और मुख से सीटी वजाते रहें।

दूसरी किस्म की कुरकुरी

लक्षण :—कुरकुरी की इस किस्म में घोड़े का मूत्र और लीद दोनों ही व द हो जाते हैं। वर वार-वार पृथ्वी पर लेटता है, वगलों की ओर झांकता है। उसके पेट में पोड़ा वहुत मालूम होती है।

चिकित्सा:—सोंठ और काजल सम भाग लेकर गऊ मूत्र में रगड़े और वत्ती वनाकर घोड़े व घोड़ी के मूत्र स्थान में रख देवें।

सेंधा नमक, पीपल, नीम की छाल, नागरमोथा, सरसों इन सव औषधियों को तेल में पीसकर नल द्वारा गुदा में भर देवें।

काला जीरा, काली मिर्च, भुना हुआ सुहागा, सब्जी कुटी हुई राई अजवायन। इन सव दवाओं को वरावर लेकर कुट डालें। अदरक के रस में छटांक भर की गोलियां तैयार करलें और जव तक घोड़े को दस्त न हों तव तक देते जावें।

हाथी की लीद और पीपल की छाल लेकर छः सेर जल में डाल आग पर चढ़ायें और औटायें। जब पानी तीन सेर वाकी

रह जावे तो छानकर, काढ़ा घोड़े को पिला देवें। दूसरी किस्म की कुरकुरी की सर्वोतम चिकित्सा है।

दूसरी किस्म की कुरकरीं की चिकित्सा

एक और नुस्खा—सौंठ दो माशा, गुड़ चार माशा, हींग चार माशा।

तीनों दवाओं को कूटकर गोली बनाकर घोड़े को खिलावें।

कंजे का गूदा भुना हुआ पैसा भर, काला नमक पैसा भर सफेद जीरा पैसा भर,। इन सब औषधियों को पीसकर देवें।

सूखा तम्बाकू और कंजे का गुदा चने के चूने में मिला कर खिलावें।

दो-दो घण्टा बाद मुर्गी के दो अण्डे जौं के आटे में मिला कर खिलावें।

यदि घोड़े की लीद बन्द हो तो उसको नीचे लिखें जुलाब देवें।

पहिला नुस्खा—पीपल डेढ़ तोला, पोपलामूल डेढ़ तोला, कसोंद के बीज डेढ़ तोला, काली मिर्च डेढ़ तोला, सोठ डेढ़ तोला। तमाम दवाओ को कूटकर कपड़ छन करें और गऊ के दूध में मिलाकर पिलावें।

दूसरा नुस्खा—१ छटांक सूखी तम्बाकू लेकर आधा सेर जल में खूब कूट मसल कर जल को छानकर घोड़े को पिला देवें। इस दवा को घोड़े को पिलाने के पश्चात चाहे उसे पसीना आवे या न आवे, उसे बैठने बिल्कुल न देवें यानी गद्दा मार देवें।

शोरा का पानी मूत्रेन्द्रिय पर डाले। पाव भर सरसों का तेल पिलाकर घोड़े को कुछ देर तक टहलावें।

पाव भर अलसी का तेल घोडे को पिलाकर उसे थोड़ीं देर तक टहलावें।

यदि दस्त जल्दी न हो तो पाव भर सरसों के तेल में दस बूंद जमालगोट के तेल का मिलाकर पिलादें।

एक और नुस्खा—गुड़ तीन छटांक, हींग दस रत्ती, सौप एक छटांक।

इन सब दवाओ को मिलाकर तीन गोलियां तैयार करें और जब तक घोड़े को दस्त न हों एक-एक घण्टा बाद एक गोली देतें जावे।

तीसरी किस्म की कुरकुरी की चिकित्सा

कारण—यह तीसरी किस्म की कुरकुरी घोड़े को दाभ (दर्भ) खा लेने पर हो जाया करती है।

लक्षण—इसमें घ ड़ा बार-२ अपनी दुम मलता है और जमीन पर लेट जाता है -

चिकित्सा -- आठ छटांक कडवा तेल एक सेर गर्म दूध में मिलाकर पिला देवें।

चोथी किस्म की कुरकुरी

लक्षण--चौथी किस्म को कुरकुरी मैं घोड़ा हाठो को थपथपा कर मलता है और हवा पी-पाकर राह चूकता है। अपनी स्वा-भाविक बातों को भूल जाता है। उसके मुख की शक्ति बन्द हो जाती है।

चिकित्सा-भुना सुहागा छः माशा, गुड़ आध पाव दोनों को मिलाकर पिला देवें।

नीम की हरी लकड़ी की लगाम घोड़े के मुख में लगावें। घोड़े के तालू में गुड़ की छकती चिपका देवें।

पांचवीं किस्म की कुरकुरी

पांचवीं किस्म कीं कुरकुरी में घोड़े की आंते अपने स्थान से हट जाती हैं। इसमें उंगलियों से दवाकर आंतों को धीरे-२ उनकी जगह पर करना चाहिये।

छटी किस्म की कुरकुरी

लक्षण: छटी किस्म की कुरकुरी में घोड़े को उठने बैठने में बड़ा कष्ट होता हैं।

पाव भर नरकचूर को मोठ के आटे में मिलाकर दोनों समय आधा-आधा खिलावें।

कोई-२ चतुर मनुष्य अपने हाथ को घी से चुपड़ कर घोड़े की गुदा में डालकर उसकी लीद निकाल लेते हैं यह काम अच्छा तो नहीं, परन्तु आवश्यकता मनुष्य से सब कुछ करवा लेती है।

कुरकुरी की सातवी किस्म

सातवीं क़िस्म की कुरकुरी में घोड़े की आंतो में सख्त दर्द होता है। पेशाब और लीद कठिनता से होते है। कभी-२ तो यह दशा हो जाती है कि पेशाब और लीद होती ही नहीं। घोड़ा बेसूध होकर जमीन पर बार-२ लेटता है और उसके मुख का रंग लाल हो जाता है। यदि घोड़े को यह रोग हो जावें तो आप उसे दाग देवें। यदि दाग न देना हो तो निम्नलिखित नुस्खे तयार करके देवें।

आध सेर कड़वा तेल, दो सेर दूध में मिलाकर जरा गरम करके घोड़े को पिलावें। जो दस्त हो जावें तो ठीक, वरना फिर

पिलावें। प्रभु की कृपा से घोड़ा जरूर स्वस्थ हो जायेगा।

घुड़ बच, गेरु, हींग, वायविडंग इन सब औषधियों को चार चार दिरम लेकर खरल करें, जब चूर्ण बिल्कुल खाली मैदा की नांई हो जावे तो नाल में रखकर पिलावें भगवान की कृपा से घोड़े का कष्ट दूर हो जावेगा।

खुजली

लक्षण:—यह रोग संक्रामक होता है। इससे देह में घाव पड़ जाते हैं। जहां अश्वशाला के एक घोड़े के यह रोग हुआ बाकी के सब घोड़े भी फँसे। वैसे ही जैसे की एक मनुष्य को खुजली की बिमारी होने पर बाकी घर वाले सबके सब काबू मे आ जाते हैं अतः सबसे अच्छा तो यह है कि ज्योंहो आपके किसी घोडे में आपको इस छत वाली बीमारी के लक्षण दिखाई दे, उसको आप दूसरे घोड़ो से बिल्कुल अलग वांध दे और उसके खान–पान का प्रवन्ध अलग कर दें ताकि बाकि के जानवर कष्ट पाने से बच जायें।

चिकित्सा=आध सेर खट्टे दही में पाव भर नमक मिलाकर घोड़े के सारे शरीर पर मल दें। और चौबीस घण्टे के बाद घी डालें। भगवान की कृपा से तीन ही दिन में घोड़े की बीमारी दूर होकर वह पीड़ा से मुक्त हो जावेगा।

पैसा भर नील, पाव भर कड़वे तेल में मिलाकर घोड़े की सब देह में मले पहर पीछें चिकनी मिट्टी लगाकर शरद ऋतु में गरम जल में नहला देवें। यदि गर्मी का मौसम हो तो ठँडे जल से नहला देवे। अवश्य लाभ होगा।

खट्टे दही में बेद अंजीर मिलाकर तीन दिन घोड़े के शरीर में मलें। तीसरे दिन घोड़े की देह पर पीली मिट्टी मल दे और चौथे दिन जल से धो डालें।

वाकुची, गंधक, मैनसिल और वायविडङ्ग इन सबको बराबर लेकर पहले तो काटें फिर रात को जल में भिगो दें। प्रातःकाल थोड़ा सा कढ़वा तेल मिलाकर घोड़े की देह म मलें। तीन घन्टे तक घोड़े को धूप में खड़ा रखें। बाद की उसके शरीर में मिट्टी लगाकर नहला दें। भगवान की कृपा हुई तो यह छूत भी भयंकर बीमारी अवश्व दूर हो जांयगी।

सफेद सखेर एक छटांक, सुरती एक छटांक, जल एक सेर चूने का जल डेड़ पाव मिलाकर घोड़े के शरीर पर लगावें।

याद रहे कि पहली दो दवाओं को चूने के पानी में मिलाने से पहले अच्छी तरह से औटा लेवें।

गवारपाठे को नमक मिलाकर खिला देवें।

★ घोड़े की खुजली के लिये एक बहुत अच्छी दवा ★

खट्टा दही चार सेर नीम की पत्तियां आध सेर, काला जीरा एक पाव, लहसुन एक पाव, काली मिर्च आध पाव।

तैयार करने को विधि—सब औषधियों को भली भाँति कूट-पीसकर बिलकुल बारीक कर लेवें फिर दही में मिलावें और तीन दिन तक पड़ी रहने दें। तीन दिन के पश्चात् घोड़े को साबुन से नहला कर उसके शरीर पर यह दवा लगाकर धूप में खड़ा कर दे। भगवान् की कृपा से कैसी भी खुजली क्यो न हो, जाती रहेगी।

घोड़े की देह में जहां २ खुजली हो उस स्थान को हुक्का के जल से दिन में तीन बार धोने से खुजली दूर हो जावेगी।

नमक एक भाग और साबुन चार भाग लेकर भलीभांति कूटकर पोटली बना लें और घोड़े को नहलाते समय इस पोटली को घोड़े के शरीर पर मलते रहें, जब तक दवा सूखे नहीं तब तक उसे धूप में खड़ा रहने दें किन्तु गर्मी के मौसम में जरा सोच विचार कर करें।

धेला भर गन्धक और धेला भर सेंधा नमक जौं के आटे के साथ घोड़े को खिलायें परन्तु इस दवा के करने से पहले दही में बारूद घोलकर घोड़े के शरीर पर मलना चाहिए और पांच घन्टे तक लगा रहने देना चाहिए। पांच घन्टे के पश्चात साबुन से घोड़े को स्नान करवा कर ऊपर से दवा खिलानी चाहिए।

भगवान श्री हरि की दया से घोड़े का कष्ट जरूर दूर हो जाएगा।

घोड़े को प्रतिदिन बासी जल पिलाया करें।

बरस रोग कीं चिकित्सा

लक्षण—इस रोग में घोड़े के मुख पर सफेद दाग हो जाते हैं।

चिकित्सा—बेंगन के टुकड़े करके जल में मसलें और उस पानी को घोड़े के मुख में दागों पर दिन में दस बारह बार थोड़ा-२ लगावें।

गुलसुरा

लक्षण—इम रोग से घोड़े के कान से लेकर हलक तक सूजन हो जाती है।

चिकित्सा—अदरक एक पाव, काली मिर्च आठ छटांक, पान के पत्ते एक सो, कालेसर एक पाव।

तयार करने की विधि—सब दवाओं को कूट छानकर

बारीक करलें। तथा एक सप्ताह तक प्रतिदिन सांयकाल के समय खिलावें।

सूजन

पहला नुस्खा

सज्जी खार सरसों, लोहा खार, सेंधा नमक, पीपल, आमा हल्दी, प्रत्येक चीज को पांच २ तोला लें।

तैयार करने का तरीका—सब दवाओं को कूट-पीटखर जल में मिलाकर लेप करें।

दूसरा नुस्खा

अजवायन एक भाग, संधा नमक एक भाग, हरड़ एक भाग, घुडवच एक भाग, चिरायता एक भाग, सरसों का तेल आवश्य-कतानुसार।

तैयार करने की विधि—पहली पांच औषधियों को सरसों के तेल में चाशनी करके दोनों समय घोड़े को खिलावें। प्रभु की कृपा से वह अवश्य स्वस्थ हो जायेगा।

यदि सूजन ऐसे स्थान पर हो कि घोड़े का उठता बैठना कठिन हो तो उसे पकाने का उपाय करें। सूजन पकाने के लिए दवा मैं नीचे लिख रहा हूं।

सूजन पकाने के लिए दवा

जितनी वड़ी सूजन हो उतनी वड़ी एक उड़द के आटे की रोटी पकावें। इस रोटी को एक तरफ से सेकना चाहिए। वाद को जिस तरफ से कच्ची है उस पर वारीक काली मिर्च डालकर सूजन वाले स्थान पर बांध देवें। आठ पहर पीछे खोल दें। इतनी देर में सूजन पक अवश्य जावेगी।

घोड़े के सारे शरीर की सूजन की दवा

काली या लाल मिर्च दो छंटाक लेकर खूब कूट-पीसकर महेले में मिलाकर खिलावें।

नीम को पत्ती दही के मठे में पीस कर तीन दिन तक घोड़े के सारे शरीर में मलें।

घोड़े की पीठ की सूजन के लिए नुस्खा

मैंदा वीस तोला, हल्दी बीस तोला, सुज्जी बींस तोला। सब दवाओं को कूट-पीस छानकर और आग पर पकाकर लेप करे।

पत्ती की चिकित्सा

साँप की केचुली गुड़ में मिलाकर खिलावें।

गजचर्म का इलाज

लक्षण—इस रोग में घोड़े का चमड़ा हाथी के चमड़े की तरह खरखरा हो जाता है।

चिकित्सा—कासनी, काली वच और भिलावा इन सब औषधियों को पात्र में मिलाकर पाताल यन्त्र में रखकर तेल खींच ले और उस तेल में तिल का तेल मिलाकर घोड़े के शरीर में लगाते रहें, प्रभु की कृपा से घोड़े का गजचर्म रोग दूर हो जावेगा।

घोड़े का अतिसार

जिस घोड़े का पेट चलता हो उसको निम्नलिखित औषधियां सेवन करायें।

पहला नुस्खा—सोंठ (आधी भूनीं हुई) एक दाम, भंग की लुगदी (आधी भूनी हुई) एक दाम, माई (घी में तली हुई)

एक दाम, लौंग एक, इन्द्र जौं (माठा) एक दाम, मोचरस एक दाम, बेलगिरी दो दाम, भंग चार दाम, धाय के फूल एक दाम, मोठ एक दाम।

सबको कूट पीस छानकर एक सेर खट्टे दही में मिलाकर घोड़े को खिलावें। यह घोड़ों के अतिसार की अचूक दवा है।

घोड़े के अतिसार में टोटका—भङ्ग की लुगदी खिलावे।

घोड़े को जुलाब देना

साल में एक बार घोड़े को जुलाव जरूर देना चाहिए। इससे यह लाभ होता है कि वह कभी बिमार नहीं होता।

याद रहे कि वह जुलाब जिस दिन देंवे उस दिन घोड़े को दाना धोकर जल में सानकर खिलावें और दूसरे दिन कुछ न देवें, सन्ध्या समय चोकर देवें और तीसरे दिन मामूली दाना देवें।

जुलाब के नुस्खे

पहला नुस्खा—एक पाव कैस्टर आयल यानी अरण्डी का तेल, एक पाव नमक। दोनों को एक सेर मांड में मिलाकर घोड़े को देवें।

दूसरा नुस्खा—काला नमक एक पाव, सनाय के पत्ते आधा पाव, सोंठ का चूर्ण आधो छटांक।

इन औषधियों को चावल के एक सेर गरम मांड के साथ खिलावें।

तीसरा नुस्खा--ऐलुआ पांच तोला, हल्दी पांच तोला, काला नमक पांच तोला।

इन सब द्रव्यों को लेकर बहुत बारीक पीसकर दो गोले बांधो। एक गोला घोड़े को शाम को दे दें। यदि जुलाव न

लगे तो दूसरा गोला भी दे दें। यदि दस्त ज्यादा हो जावें तो तुलसी कीं पत्ती की गोली बनाकर दें या नींबू का पुत्ती में चार तोला मिर्च मिलाकर खिलावें।

घोड़े के जुलाब के दस्तों को बन्द करना

यदि घोड़े को जुलाब देने से वहुत दस्त आ जायें और बंद करना चाहें तो निम्नलिखित नुस्खा तैयार करके घोड़े को खिलायें अवश्य लाभ होगा।

नुस्खा—सौफ, सफेद जीरा, काला मिर्च ४–४ तोला इन तीनों औषधियों को लेकर कच्चीं पक्की करके गोलियां वना ले और एक गोली घोड़े को दें। थोड़ी देर के पश्चात दूसरी गोली दें दस्त वन्द हो जायेंगे। यदि वन्द न हों तो फिर नीचे लिखा नुक्सा तैयार करके खिलायें।

जुलाब के दस्तों को बन्द करने दूसरा नुक्सा

हींग चार तोला, घी चार तोला, सांठी चावल ८ तोला। इन सव औषधियों को पीसकर, गोलो बना घोड़े को खिलावें। दस्त अवश्य बन्द हो जावेंगे।

जहरबाद की चिकित्सा

बन्दाल २ धेला भर, सौठ दो धेला भर। मिर्च २ धेला भर पीपल 2 धेला भर, काकड़ा सिंगी 2 धेला भर, कुटली 2 धेला भर, चिरायता २ धेलाभर, सफेद जीरा २ धेला भर चीता की छाल २ धेला भर, काकड़ासिगी २ धेला भर, लहसुन २ धेला भर, गेरू २ धेला भर, सोया के बीज २ धेला भर।

कर चूर्ण बनालें और आध सेर सत के साथ खिलायें। घोड़े के जहरबाद के लिए अक्सीर दवा है।

घोड़े के जहरबाद के लिये एक और नुस्खा

मिर्च, कसौंदी, अदरक और पान बराबर-२ काटकर रख लें और एक छटांक भर घोड़े को दें। अवश्य लाभ होगा।

घोड़े को चोट लग जावे

तो निम्नलिखित लेप पीठ या रीढ़ की हड्डी पर यानी दर्द वाले स्थान पर लगाकर पटुआ या सन से बांध दें।

नुस्खा—पीच आध पाव, पत्थर के कोयले का तेल तीन छटांक, मोम आधी छटांक, तेलिन मक्खी का चूर्ण आधी छटांक।

तैयार करने का तरीका—पहली तीन दवाओं को पिघला कर तेलिन मक्खी का चूर्ण बनाकर लेप करें।

दूसरा नुस्खा—पीच दो सेर, तारपीन का तेल तीन छटांक, अलसी का तेल आध पाव।

तैयार करने की विधि—तीनों औषधियों को आग पर पिघला कर लेप करें।

तीसरा नुस्खा—पीच आधं पाव, तारपीन का तेल आधी छटांक। दोनों को मन्दी आग पर पिघलाकर लेप करें।

घोड़े को कुत्ता काटने का इलाज

याद रहे कि यदि घोड़े को पागल कुत्ता काट खाये तो घोड़ा पागल हो जाया करता है। निम्न में मैं जो नुस्खा लिख रहा हूं यदि उसे इसका प्रयोग करवाया जाये तो फिर उसके पागल होने का भय नहीं रहता।

नुस्खा—मनुष्य की खोपड़ी का चूर्ण एक छदाम, मकाय की जड़ एक रत्ती, गुड़ आवश्यकतानुसार।

सब औषधियों को मिलाकर एक गोली प्रातः काल खिला देवें, डेढ़ मास तक प्रतिदिन ऐंसा करते रहें और इसके पश्चात घोड़े के पागल होने का कोई भय न रहेगा।

घोड़े के दस्तों और आंव की चिकित्सा

पहला नुस्खा—अफीम दुकरा भर, छुहोमुहो का चूर्ण अधी छटांक, बबूल का गोंद आधी छटांक, पोदीने की पत्तीं आधी छटाक।

सब औषधियों को कूट कर दिन में दो बार खिलावें। घोड़े के दस्त में यदि आंव या खून आता हो तो जरूर बन्द हो जावेगा।

दूसरा नुस्खा—बतख या मुर्गी का अण्डा एक, अफीम दुकरा भर, सोंठ का चूर्ण दुकरा भर, कत्था वारीक पीसा हुआ धेला भर।

इन सब औषधियों को पीस कर आधा सेर मांड के साथ घोड़े को खिलावें।

तीसरा नुस्खा—सफद जीरा आधी छटांक, कतीरा आधी छटांक, बेलगिरी (सूखी) एक छटांक, वरगे हिना (मेंहदी के पते) आधी छटांक।

इन सब औषधियों को कूट कर मिला लें। आधी दवा प्रातःकाल घोड़े को दें और आधी शाम को। दस्त, आंव खून के अवश्य बन्द होंगे।

मोच का इलाज

यदि घोड़े का पांव मोच आ जाने के कारण फूल गया हो तो निम्नलिखित घोल में करड़ा तर करके उस पर बांध दें ओर कपड़े को हर समय तर रखें, अवश्य लाभ होगा।

घोल का नुस्खा—नौशादर आधी छटांक, शोरा एक छटांक, जल आधा सेर

तैयार करने की विधि—पहली दोनों औषधियों को जल में मिलाकर घोल तैयार करें।

यदि सूजन और दर्द दोनों अधिक हों तो उस स्थान पर जोंक लगवा दें। आवश्यकता हो तो आप घोड़े को फस्द भी खुलवा सकते हैं।

घोड़े के पेट में कीड़े पड़ जाना (कृमि रोग)

जब घोड़े के पेट में कीड़े पड जाते हैं तो उसकी भूख बन्द हो जाती है। यह कीड़े उसके दस्त में निकला करते हैं। निम्नलिखित नुस्खों को प्रयोग करवाने से घोड़े की यह बीमारी जाती रहती है।

(१)

काली जीरी की पत्ती में नमक मिलाकर खिलावें। लाभ होगा।

(२)

नमक दो पैसा भर, जुन्तआना अेसा भर, लोहे का जंग पैसा भर, समैना धेला भर, थोड़ा सा शीरा। इन सब औषधियों को मिलाकर गोली बनावें। एक सप्ताह तक हर रोज प्रातः एक गोली घोड़े को खिलावें। इसके बाद उसे जुलाब देवें।

घोड़े का प्रमेह रोग यानी धातु का गिरना

इस रोग के लिये मैं दो तीन टोटके लिख रहा हूं। इसके प्रयोग से यह रोग जरूर अच्छा हो जाएगा।

● पहला टोटका ●

कत्था, केला की जड़ और कतीला प्रातःकाल देवें।

● दूसरा टोटका ●

सफेद जीरा देवें, अवश्य लाभ होगा।

● तीसरा टोटका ●

मूली की जड का चूर्ण देवें। यह घोड़े के प्रमेह के लिये रामबाण औषधि है।

● चौथा टोटका ●

कतीरा देवें। प्रभु-कृपा से घोड़े का प्रमेह अवश्य दूर हो जायेगा।

(JAANDICE)

घोड़े का कमल रोग, पीलिया या यरकान

लक्षण—कमल रोग में घोड़े के नेत्रों का रंग पीला पड़ जाता है। मूत्र का रंग भी पीला हो जाता है और वह गाढ़ा हो जाता है। भूख कम लगती है। हरारत कभी कम हो जाती है और कभी अधिक। प्यास घोड़े को बार-बार सताती है ओर शरीर दुर्बल हो जाता है।

निम्न में मैं इस रोग के दो अक्सीरी नुस्खे लिख रहा हूं। इनके प्रयोग से पीलिया का रोग अवश्य जाता रहता है।

(१)

मुसब्बर धेला भर, केलोम्यल एक ड्राम, शीरा आवश्यकतानुसार।

तैयार करने की विधि—पहली दो औषधियों को शीरा में मिलाकर गोली तैयार करें। ऐसी दो गोलियां, दिन में दो बार एक प्रातः एक सायंकाल घोड़े को देवें। अवश्य लाभ होगा।

कैलोम्यल एक ड्राम, सुर्मा टुकरा भर, मुनब्बर धेला भर, शीरा आवश्यकतानुसार।

तैयार करने की विधि—सब दवाओं को शीरे में मिलाकर एक गोली तैयार करें। ऐसी एक गोली हर चार पांच घण्टे के बाद घोड़े को देते रहें और जब तक उसको दस्त न हो खिलाते रहें।

ज्वर (FEVER)

कारण—घोड़े को खराब और गदी आबहवा, मच्छर, मक्खी, चीचड़ी आदि के काटने, ख़ुराक की अधिकता, कब्ज के होने से, पसीने के बन्द होने और ज्यादा सरदी या गरमी से ज्वर हो जाया करता है।

लक्षण—ज्वर में घोड़े का शरीर गरम हो जाता है, वह सुस्त हो जाता है, खाता पीता कुछ नहीं। मूत्र क रङ्ग बदल जाता है।

चिकित्सा—ज्वर के लिए मैं निम्न में कुछ नुस्खे लिख रहा हूं। इनके प्रयोग से घोड़े का ज्वर अवश्य दूर हो जाता है

स्मरण रहे घोड़े को ज्वर में दवा देने से पहले जुलाब दे लेवें।

● पहला नुस्खा ●

सुर्मा धेला भर, शीरा डेढ़ पैसा भर और काला नमक पैसा भर लेकर इनमें थोड़ा सा शहद मिलाकर गोली बनावें। दिन में दो बार यह गोली घोड़े को खिलायें। यह गोलियां इनफ्लुएंजा नामक ज्वर के लिए रामबाण औषधि है।

दूसरा नुस्खा

कपूर और सुर्मा प्रत्येक धेला भर और शोरा तीन पैसा भर, इनमें शोरा और मैदा या आटा मिलाकर गोली बना लें प्रतिदिन एक या दो गोली खिलायें।

तीसरा नुस्खा

टारटार एमेटिक आधा ड्राम, कपूर आधा ड्राम और शोरा दो ड्राम इनमें थोड़ा सी खली और शीरा मिलाकर गोली बनालें और दिन में दो बार खिलावें।

सन्निपात ज्वर

सन्निपात ज्वर बड़ा बुरा रोग है। यदि इसके इलाज की ओर जल्द ध्यान न दिया जावे तो पशु का मृत्यु का भय रहता है। अत: लक्षण दिखाई देने के साथ जल्दी से चिकित्सा करनी चाहिए।

लक्षण–सन्निपात ज्वर में घोड़े की नाड़ी बहुत तेज चलने लगती है, नाक का भीतरी भाग लाल हो जाता है। अगली दोनों टांगें तन जाती हैं, श्वांस भी तेज चलने लगता है।

पहला नुस्खा

कार्बनेट आफ अमोनियां डेढ़ ड्राम, अफीम एक ड्राम, सौंफ आधा औंस, शीरा आवश्यकतानुसार। पहली तीन औषधियों को शीरे में मिलाकर गोली तैयार करें और यह गोली दिन में दो बार घोड़े को खिलायें।

रोग की अधिकता में यह नुस्खा बरतना चाहिए।

दूसरा नुस्खा

क्यलम्यल ४५ रत्ती, टार्पटयमोटिक ४० रत्ती, डिजिटेलिस १० रत्ती मुलहटी चार पैसा भर, शहद आवश्यकतानुसार।

पहली चारों औषधियों को शहद में मिलाकर एक गोली तैयार करें और ऐसी एक-एक गोली प्रत्येक छः घण्टा के पश्चात घोड़े को खिलावें।

● तीसरा नुस्खा ●

दो पैसा भर शोरा और धेला भर टार्पटरमोटिक, दोनों को शीरा और मैदा में मिलाकर एक गोली तैयार करें। ऐसी दो गोलियां, दिन में दो बार यानी एक गोली प्रात और एक सायंकाल घोड़े को खिलावें, तन्दुरुस्त हो जावेगा।

● सन्निपात का चौथा नुस्खा ●

धेला भर सुरमा, पैसा भर डिजिटेलिस, पैसा भर शोरा, पैसा भर काला नमक, इन सब औषधियों को थोड़े से शहद में मिलाकर गोली तैयार करें। ऐसी दो गोलियां दिन में दो बार एक प्रातः और एक सायंकाल, आठ घण्टे के अन्तर से देवें।

कफ ज्वर की चिकित्सा

लक्षण—कफ ज्वर में घोड़े के मुंह से कफ निकलता है। वह कांपता है और उसका शरीर गर्म हो जाता है, निम्न में कफ ज्वर के दो चार नुस्खे लिख रहा हूं। जिनके प्रयोग से बीमारी जरूर दूर हो जाती है।

पहला नुस्खा ●

तारपीन का तेल ढाई तोला, मुलहटी बारीक पिसी हुई ढाई तोला, हींग ढाई तोला, गन्धक दो पैसा भर।

तैयार करने की विधि—सब औषधियों को मिलाकर चार गोली तैयार करें और प्रतिदिन रात को एक गोली घोड़े को खिलावें। कफ ज्वर को अवश्य आराम होगा।

● दूसरा नुस्खा ●

छदाम भर अफ़ म, पसा भर सिंघाड़ा और छदाम भर बंगाली बेर।

सब दवाओं को मिलाकर एक गोली बनायें। कफ ज्वर जरूर दूर हो जायेगा।

● कफ ज्वर को दूर करने के लिये तीसरा नुस्खा ●

डिजिचेलिस आधा ड्राम, कपूर एक ड्राम, रुरका एक ड्राम, असली खली एक ड्राम, शोरा तीन ड्राम।

तैयार करने की विधि—सब औषधियों को मिलाकर एक गोली बनावें और ऐसी दो गोलियां दिन में दो बार यानी एक गोली प्रातः और एक गोली सायं घोड़े को खिलावें। भगवत् कृपा से घोड़ा जरूर तन्दुरुस्त हो जायेगा।

● चौथा नुस्खा ●

हींग (भुनी हुई) तीन पाव, हल्दी डेढ़ सेर, असखार आध पाव, सेंधा नमक आध पाव।

तैयार करने की विधि—सब औषधियों को चक्की में खूब बारीक पिसवा लें। बस दवा तैयार है इसके इक्कीस भाग करलें। नित्य एक खुराक आध पाव गुड़ में मिलाकर घोड़े को खिलाया करें।

● पांचवां नुस्खा ●

चार पैसा भर अमर बेल लेकर कूट लें और गुड़ में मिला-कर दाना खिलाने के बाद खिलाया करें।

जानुआ रोग व चिकित्सा

घोड़े के घुटने की हड्डी के उभर जाने को "जानुआ कहा जाता है।

पहला नुस्खा

आध पाव जमालगोटे की मिंगी लेकर उसे चालीस बार नींबू के रस में घोटकर सुखावें। अब जिस स्थान की हड्डी उभरी हुई है उस स्थान पर नींबू के रस की चार बूंदे डालकर, धूप में रखकर, जरा गर्मी पहुंचने के बाद लेप करें। अब उस पर अरण्ड के पत्ते रखकर ऊपर से ऐसी कसकर पट्टी बांधे जो जोकि तीन दिन तक न खुले। तीन दिन के पश्चात् पट्टी को खोल दें और पोली मिट्टी पानी में घोल कर उस स्थान पर लेप करें। किन्तु जब तक घोड़ा पूर्ण रूप से स्वस्थ न हो जाय उसको खूँटे से न खोलें।

यदि सूजन अधिक न हो तो दूसरे नुस्ख को प्रयोग में लावे।

दूसरा नुस्खा

नीलाथोथा, उरद का चून, अरण्डी के बीजों की मिंगी और सेंधा नमक, इन चारों औषधियों को चार-चार ताला लेकर कूट कर उर्द के आटे में सान कर टिकिया वना लें और उसे एक ओर से लोहे के तवे पर सेक कर, दूसरी ओर से हड्डी पर रख कर बांध देवें और तीन दिन तक पट्टी न खोलें। तीन दिन के वाद पट्टी खोलकर फिर उसी तरह फिर टिकिया तैयार करके बांध देवें। यदि सूजन बाकी रहे तो तीसरी वार उसी तरह से बांध देवें। घाव फटने लगे तो घी को धोकर उसका लेप करें।

अरमन के फूल और डालो को आग में जलाकर राख करले फिर उस राख को पानी में डालकर सात गोलियां तैयार करलें। प्रतिदिन प्रातः काल एक गोली नींबू के रस में भिगो कर खिलावें

सेक के लियें पोटलियां

अज्जीर के बीजों का गूदा, भिलाले, काले तिल, कठ, मोम, उँट की हड्डी ।

सब औषधियों को पीसकर सिदूर और सेंदा नमक मिलावें और दो पोटलियां बनायें । कड़वा तेल आग पर गरम करें और दोनों पोटलियों को उसमें डालकर बारी-बारी से सेक करें ।

बीर हड्डी

लक्षण-इस रोग में घोड़े का चलने फिरने में बहुत कष्ट होता है । हाथ की कलाई में नश्तर या तार के समान एक हड्डी उत्पन्न होती है ।

चिकित्सा-अरणडी की मिगी और काला तिल दोनों को बराबर भाग कर लें और इनको कूटकर टिकिया तय्यार करके गरम-गरम बांध ।

बकरी का गुर्दा लेकर आग में भुलभुलाकर थोड़ा सा नमक मिलाकर हड्डी पर बांधे ।

बकरो के गुर्दे को थूहर के डंडा के साथ आग पर भून लें और साबुन लगाकर बाँधे ।

वीर हड्डी वाली जगह के चमड़े को काट कर उसमें सेंहड़ का दूध भर देवें ।

बीर हड्डा वाली जगह पर धतूरे के पत्ते औटा कर बांधें और पट्ठी को उसी पानी से तर रक्खें । पट्टी सात दिन तक एकसार बँधी रहे और इस बात का ध्यान रक्खा जावे कि घाड़ा अपने मुंह या पांव से पट्टी को खोलने न पाये । जो

मवाद रहे उसे कपड़ से पोंछ देवं पोंछते समय भी ध्यान रखें कि पट्टी अपने स्थान से खिसके नहीं। एक सप्ताह में रोग दूर हो जावेगा।

एक तोला मिश्री कूट कर नित्य वीर हड्डी पर बांधे।

बताशे एक भाग और अफीम दो भाग दोनों को मिलाकर फिटकरी के टुकड़ों पर लगाक उस टुकड़े को आग पर पकायें और गरम-गरम वीर हड्डी पर बांध देवें। थोड़ी देर तक बंधा रहने देवें। घोड़े का कष्ट दूर हो जावेगा।

किरमक

कारण—घोड़े को यह रोग गरमी से हो जाता है।

लक्षण—किरमक में घोड़ा बेहोश हो जाता हैं। बेचैनी बहुत बढ़ती है। मुँह सूख जाता है पसीना अधिकता से आता है। प्रायः कांपता रहता है। **नींद** बिल्कल नहीं आती। गरदन पर दाने पड़ जाते हैं।

यह रोग अच्छा नहीं। दानों को चीर कर देखें यदि उनकी रंगत पिस्ते के समान हो तो फिर समझ लें कि रोग असाध्य है।,यदि दाने हरे रग के न हों तो जान लें कि रोग असाध्य नहीं, फि.र उसका इलाज निम्नलिखित विधि से करें।

किरमक की चिकित्सा

● पहला नुस्खा ●

चोबचीनी एक सेर, गंधक आधा सेर, पारा एक पाव, सुर्मा आधा पाव, शहद आवश्यकतानुसार।

तैयार करने की विधि—पहले गन्धक को आग पर गरम करें फिर उसमें चोबचीनी कूट कर मिला देवें। खूब

पीसकर शहद मिलाकर डेढ़ तोले की गोलियां बना लेवें दोनों समय घोड़े को एक-एक गोली खिलावें।

● दूसरा नुस्खा ●

सहजना की छाल एक पाव लेकर लाल मिर्च आध पाव लें दोनों को खूब अच्छी तरह कूट छानकर महेला में मिला कर दाने के साथ दोनों समय खिलावें और जब तक घोड़ा तन्दुरुस्त न हो जावे यह औषधि देते रहें।

● तीसरा नुस्खा ●

मेंढ़क और मछलिया लेकर उन्हें भली भांति सुखा कर पीस लें और कपड़छान कर पाव भर चने के सत्तू में मिलाकर घोड़े को बयालीस दिन तक लगातार खिलावें।

● चौथा नुस्खा ●

दानों का नश्तर से चीरकर उनका मवाद निकाल कर इनमें सेंहुड़ का दूध भर लेवें। घाव के भर जाने पर आधा सेर कड़वा तेल लेकर गरम करके उसमें आधा सेर नीलाथोथा मिला कर घाव के ऊपर लेप करदें।

● पाँचवाँ नुस्खा ●

काली जीरी दस माशा, अफीम दस माशा, कुचला दस मासा, धतूरे आवश्यकतानुसार।

पहली तीनों दवाओं को धतूरे के अर्क में पीस कर दानों पर लगाए और ऊपर से अञ्जीर का पत्ता बाँध दें। इस दवा के प्रयोग से तीन दिन में कष्ट दूर हा जाता है।

● छटा नुस्खा ●

थोड़ी सी लौंग पीसकर, दोनों को चीरकर उनमें भर देवें और थोड़ा सी लौंग पानी में घोलकर घोड़े को पिलावें। भग-वान की कृपा से थोड़े दिनों में आराम हो जावेगा।

दूसरें किस्म के किरमिक रोग का इलाज

लक्षण—किरमिक रोग दो प्रकार का होता है। इसकी पहली किस्म जैसे कि मैं ऊपर कह चुका हूं अच्छी नहीं, उसमें बीमारी असाध्य होती है। दूसरी किस्म की किरमिक साध्य होता है। इस किस्म में घोड़े की सारी देह में छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं। इन दानों में से अपने आप खून बहने लगता है। यदि दानों को चीरा जावे तो उसमें सूत सा निकलता है।

● पहला नुस्खा ●

आंवला, हरड़, कच्चे चावल, तीनों आध-आध सेर लेकर कूटें, पीसें और छानें सिर सात भाग करके उसकी सात खुराक वनायें और एक सप्ताह तक प्रदिदिन एक खुराक आध सेर तेल में मिलाकर खिलाव।

● दूसरा नुस्खा ●

त्रिफला एक सेर, काली मिर्च एक सेर, बकायन (खुशक) आध सेर, नीम की छाल (मुश्क) आध सेर, शहद आवश्यकतानुसार।

तैयार करने को विधि—पहली चारों दवाओं को कूट छान कर, शहद में मिलाकर ८० गोलियां तैयार करें। और प्रातः तथा सायं एक-एक गोली घोड़े को चालीस दिन तक खिलावें।

सीना बन्द

कारण—यह रोग अजीर्ण से होता है।

लक्षण—इसमें घोड़े के कन्धे सूज जाते हैं।

● पहला नुस्खा ●

हींग एक पाव, मिलावा एक पाव, काली मिर्च एक पाव,

बड़ी पीपल एक पाव, कूठ एक पाव, जोरा एक पाव, सुहागा एक पाव, गूगल एक पाव, गुजराती वाल एक पाव, हल्दी एक पाव ।

इन सब औषधियों को कूट छानकर चुर्ण बना लें और पांच तोला यह चूर्ण नित्यप्रति घोड़े को खिलावें। सात दिन में घोड़े का रोग जाता रहेगा । यदि न जावें तो दवा बदल देवें ।

दूसरा नुस्खा

सुहागा छः तोला, अजवायन खुरासानी छः तोला, फिटकरी छः तोला, गूगल छः तोला, वेद अन्जीर को कली छः तोला,

सब दवाओं को कूटें, पीसें और छानें। दस तोला यह दवा तीन दिन तक घोड़े को खिलायें। प्रभु कृपा से उसे जरूर आराम हो जावेगा। घोड़े को गश्त दें और दूसरे जल न पिलाकर केवल नदी का जल पिलावें।

तीसरा नुस्खा

भैसा गूगल एक सेर, माल कंगनी एक सेर, हल्दी एक सेर, तिबरसा गुड़ एक सेर।

सब औषधियों को मिलायें ओर नित्यप्रति पाव भर यह दवा घोड़े को दाना डालने से पहले खिलायें।

चोथा नुस्खा

नीलाथोथा एक तोला, हलेला कलां यानि बड़ी हरड़ एक पाव। इन दोनों को सिरके में महीन पीसकर चालीस गोलियां बनायें और सवेरे और शाम एक गोली घोड़े को खिलादें।

पांचवां नुस्खा

जौ का आटा गूंध कर टिकिया बनाये और उस टिकिया में टका भर आंवा हल्दी, टका भर सज्जी, गूगल दो टका भर,

पैसा भर अफीम भर कर, भूभल में दवाकर सेक लें। टिकिया के भली-भाँयि सिक जाने पर दवा निकाल कर, उसको कूट पीस कर छः खुराकें बनाकर घोड़े को खिलावें।

छटा नुस्खा

आक की जड़ की छाल भुलभुलाई हुई टका भर गूगल टका भर, दोनों औषधियों को एक पाव गुड़ में मिलाकर घोड़े को खिलावें। भगवत कृपा से जरूर आराम हो जाएगा।

घोड़े की हिकची की चिकित्सा

घोड़े को हिचकी आती हो तो मोमयाई की एक गोली प्रातः काल के समय दें।

दूसरी दवा यह है-मोर पंच की राख शहद में मिलाकर दें।

जीकुलनफस

कारण—यह बीमारी पित्त के विकार से उत्पन्न होती है।

लक्षण—जीकुलनफफ में घोड़े की आंखें लाल हो जाती है। उसकी देह गरम हो जाती है और श्वास बड़ी कठिनाई से लेता है। उसके शरीर की नसें फूल जाती है तथा बार-बार पसीना आता है।

पहला नुस्खा

अरण्ड की जड़ का छिलका आध सेर, इन्द्रायन आध सेर, गुजराती गोल आध सेर, काली मिर्च आध सेर, लाल मिर्च आध सेर, हल्दी आध सेर, कुलिजन आध सेर, फुलेखा आध सेर, लौंग आध सेर, थूहर का दूध पाँच सेर, शराब चार पैसा भर, जौ का आटा आवश्यकतानुसार।

तैयार करने की विधि—थूहर के दूध में जौ के आटे का खमीर कर उसको कण्डों की आग पर जलालें और पीस लें और पहली नौ दवाओं को भी उसमें पीस लें। फिर शराब में भिगोकर नाल में भर कर घोड़े को पिलावें। घोड़े को यदि गर्मी मालम हो तो चार पैसा भर आंवले भी बढ़ा लेवें।

अनुपात-घोड़े को खाने के लिए चना, मोठ और सूखी घास देवें।

सुर्फा

कारण—घोड़े को यह रोग सरदी में हो जाता है।

लक्षण-घोड़ा के पतला कफ निकलता है बहुत अधिक धांसता है। कफ पतला होकर निकलता है।

● पहला नुस्खा ●

आक के पके हुए ढाई पत्ते घोड़े को **खिलावें**।

● दूसरा नुस्खा ●

अदरक में अफीम भर कर ऊपर से गेहूं का आटा लपेट कर आग में दबा दें। सिकने पर निकाल कर मोंठ के चून में तीन दिन तक खिलावें, परन्तु अफीम अनुमान से लेवें।

● तीसरा नुस्खा ●

पानी पिलाने के पश्चात तीन दिन तक घोड़े को मलाई खिलावे।

● चौथा नुस्खा ●

अजवायन एक सेर लेकर मनुष्य के पेशाब में पांच छः दिन तक भिगो कर रक्खें। इसके बाद साफ करके कूट लें, और दो भर दाना खिलाने के बाद तीन दिन तक घोड़े को खिलावें।

● पाँचवाँ नुस्खा ●

छः माशा चंग, अदरक को गाँठ में रखकर आग भुलभुला कर तीन दिन तक घोड़े को खिलावें तो घांस बन्द हो जावे।

● घटा नुस्खा ●

शहद आध सेर, बकरी का दूध आध सेर, सौंठ बेतरा नौ दिरम। तीनों आषधियों को मिलाकर घोड़े को पिलावें।

किनार

इसमें घोड़ा बहुत छींकता है और उसके नाक से बहुत पानी बहता हैं। दाना पानी की तरफ देखता नहीं।

● पहला नुस्खा ●

तीन चार तोला कड़वा तेल गरम करें और उसमें चार तोला शहद और चार तोला कायफल मिलाकर घाड़ के नथनों में डालें।

● दूसरा नुस्खा ●

बारूद दो पैसा भर, सेंधा नमक एक पैसा भर, केसर धेला भर। तीनों औषधियों को दूध में पीसकर चार दिन तक घोड़े को नास दें।

● तीसरा नुस्खा ●

सोंठ और पीपल समान भाग लेकर पीस लेवें, इस चूर्ण में सम्हालू और और सेमर दोनों के पत्तों का रस निकाल कर उसमें मिला लेवें, फिर सुखा दें। जब सूख जाय तब पीस कर बांस की नली में भरकर घोड़े को नास देवे या औषधि को टाट के टुकड़े या नीले कपड़े में लपेट कर जलायें और नाक में धूनी देवें।

कायफल पीस कर उसकी नास दें।

गुह्येन्द्री के रोगों का इलाज

यदि घोड़े के उपस्थ पर गरमी से दाने निकल आवें और खजली हो तो इस रोग की चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देवें। यदि ऐसा न करेगें तो कीड़े पड़ जायेंगे।

१—घोडे के जान् में नस्तर लगावें।

२—उपस्थ को ठण्डे पानी के छींटें देवें। छहारे या नीम का लेप कर देवें।

३—नीम के पत्तों को औटाकर उस पानी से उपस्थ को धोवे।

४—घी को एक सौ बार धोकर उसमें पपड़िया कत्था और कपूर मिलाकर लेप करें।

● फाजिल ●

लहसुन के बीज, अमलतास, सौठ इनको समान भाग लेकर दो सेर जल में औटावें और जल जब आधा सूख जावें तो उसे छान लेवें। अब इस जल के सात भाग करके, सात दिन तक घोंड़े को एक खुराक पिलावे।

तिल का तेल घोड़े की गर्दन पर मलें और जब तेल सूख जावें तो अरण्ड के पत्ते गऊ के गोबर में पीसकर मलें।

कुचला को सात सात रत्ती लेकर उसकी चालिस गोलियां तैयार करें। दोनों समय एक-एक गोली देवें और लिनिमेंट एमोनिया मलें।

घोड़े के अण्डकोष की सूजन

यदि वादी से अण्डकोष सूज जावें तो उसमें निम्नलिखित नुस्खे प्रयोग में लावें।

दालचींनी ओर गऊ का गोबर दोनों को पीसकर लेप करें।

अबलूत, जीरा, जवाखार, साथरी इन सबको कूट छानकर घी में मिलाकर मरहम बनाकर दिन में सात बार लगावें।

एक सेर जल में मछली पकावें चौथाई जल रह जाने पर तीन दिन तक पिलावें।

बाकगीरा

कारण—यह रोग बादी के कारण होता है।

लक्षण—इस रोग से घोड़े की कमर में सख्त दर्द होता है इसमें उसकी पीठ और पेट दोनों सूखने लगते है।

चिकित्सा—१ कुटकी आधा पाव, सोंठ आधा पाव, कमीला आधा पाव, काली मिर्च आधा पाव, गूगल डेढ़ तोला। सब दवाओं को जल में पीसे और गर्म करके लेप कर।

२. सरसों को पानी में पका कर लगावें।

३. सरेश को पानी में पका कर लगावें।

४. दूध और नमक को औटा कर मलें।

५. गरम पानी से साबुन मल कर धोवें।

एक और रामबाण औषधि

कड़वा तेल आधा पाव, भिलावा आधा पाव, नीला थोथा दो तोला, रस कपूर दो तोला।

पहली दोनों दवाओं को गरम करें। दूसरी दोनों दवाओं का पीसकर दो पोटलियां तैयार करें। इन पोटलियों को पहली दवाओं में भिगोकर रोढ़ से पीठ तक सेकें।

यह दवा केवल एक ही बार करनी चाहिए यदि आराम न आवे तो फिर दूसरी दवा की और ध्यान देवें।

आग से जल जाने की चिकित्सा

लाइमवाटर तीन भाग और अलसी का तेल एक भाग दोनों को एक बोतल में मिलाकर खूब हिलावें। हिलाते २ जब गाढ़ा हो जावे तब जली हुई जगह पर लगा दें।

लायम वाटर यानीं चूने का पानी

तयार करने की विधि—दो औंस पत्थर का चूना, क्वाटर पौंड जल में डालकर अच्छी तरह से हिलावें। हिलाने के बाद रख देव, थोड़ी देर के बाद चूना नीचे बैठ जाएगा। अब पानी को निथार लेवें। बस लाइमवाटर तैयार है जो कि ऊपर नुस्खे में पड़ता है।

जली हुई जगह पर प्याज का रस लगा देवें।

घोड़े की आंख में फूली पड जाने का इलाज

फूली हुई फिटकिरी और उसके बराबर सिन्दूर मिलाकर पीस लें। इस दवा में से छः रत्ती दवा घोड़े की आंख को फूला पर लगायें, लाभ होगा।

पहला नुस्खा

साठी चावली को आक के दूध में भिगो कर छाया में सूखा लें। अब इन्हें मिट्टी के बर्तन में भरकर आग पर चढ़ा कर राख करें, उस राख को निम्नलिखित नुस्खा न० २ में मिला लें और कपड़ छान करके घोड़े की आँख को फूली पर लगावे।

दूसरा नुस्खा

सिरस के बीज दो तोला, हरे कांच की चूड़ी दस माशा, लाहौरी नमक दो तोला।

सब औषधियों को कूट पीसकर छानकर फूली पर लगावें

घोड़े की खांसी और जुकाम की चिकित्सा

जिस प्रकार मनुष्य का जुकाम बिगड़ने से उसके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है इसी तरह घोड़े का जुकाम बिगड़ने से उसकी तन्दुरुस्ती पर बहुत बुरा असर पड़ता है। अतः ज्योंही यह पता लगे कि घोड़े को खांसी या जुकाम हो गया है तो फोरन उसकी चिकित्सा की ओर ध्यान देवें ताकि रोग बढ़ने न पावे और उपद्रव खड़ा न हो जावे।

कारण—सरदी का लग जाना या वक्त बेवक्त पानी पिलाना।

लक्षण—बहुत खांसता है, उसकी नाक टपकती है।

● पहला नुस्खा ●

बड़े घोड़े को एक बादाम की मिगो और छोटे को आधी, दिन में दो चार बार दें।

● दूसरा नुस्खा ●

कागज पर हींग पोत कर, उस कागज को धूनी दें, जरूर लाभ होगा।

● तीसरा नुस्खा ●

केवल प्याज खिलायें लाभ होगा।

● चौथा नुस्खा ●

प्याज और घी खिलायें, प्रभू की कृपा से जरूर फायदा होगा।

● पांचवां नुस्खा ●

एक सेर अजवायन को मनुष्य के पेशाब में तीन दिन तक भिगोयें और पैसा भर जौ के आटे में मिलाकर गोली बनायें और पाँच दिन तक शाम का दाना देने के बाद खिलायें।

छठा नुस्खा

भटकटैया की जड़, फल फूल और पत्ते आग में जलावें। बाद में बारीक चूर्ण बनाये। दो छटांक यह चूरण जौ के आटे में मिलाकर गाला बनाकर प्रतिकाल और सायंकाल घोड़े को खिलावें।

सातवां नुस्खा

पानी पिलाने के बाद घोड़े को एक प्याज खिलावें और उसके पश्चात वांस की कुछ पत्तियां खिलायें।

आठवां नुस्खा

आधा सेर प्याज, पाव भर घी और बकरे की सिरी, इन तीनों को कूटकर ढाई सेर पानी में डाल कर चूल्हे पर चढ़ावें। बारह घण्टे तक मन्दी आग पर पकने दें। आग इतनी मन्द होनी चाहिए कि बारह घण्टों में केवल दो सेर जल सूखने पाये। बाकी के आधा सेर पानी में थोड़ा सा नमक मिलाकर, इसे बेलन से गूँध कर रोटी तैयार करके घोड़े को खिलावें। जिस दिन वह दवा देवें घोड़े को पानी बिल्कुल न पिलायें।

नौवां नुस्खा

संभालू के पत्ते का अर्क (रस) निचोड़ कर तीन-२ चार-२ बूंद दोनों नथनों में टपका कर उन छिद्रों को रुई से बद कर दें। चार पाँच मिनट के बाद रुई को निकाल लें।

चार पांच दिन तक ऐसा करें कफ गिर कर घोड़ा बिल्कुल तन्दुरुस्त हो जावेगा।

दसवां नुस्खा

अदरक के एक छोटे से टुकड़े में एकत्र दो चने के बराबर हींग भरकर भूनें फिर उसको मल कर रखलें। पुनः

जौ का आटा लेकर उसका छोटा गोला बनायें । उस गोले में वह अदरक रख कर, यह गोला प्रतिदिन सांयकाल का दाना देने के पश्चात पांच दिन तक दें । प्रभु-कृपा से घोड़ा रोग मुक्त हो जायेगा ।

जुकाम से घोड़े की नाक टपकना

● पहला नुस्खा ●

छः रत्ती हीग, चार माशा सोंठ, दोनों को खूब बारिक पीसकर जौ के आटे में मिलाकर दाना देने के पश्चात चार पांच दिन तक देते रहें ।

● दूसरा नुस्खा ●

पहले दो दिन दाना देने के पश्चात् भुना अदरक जौ के आटे में मिलाकर दें । इसके बाद दो दिन तक एक-एक छुहारा देते रहें । निश्चित लाभ होगा ।

✶ सरसबूला रोग यानि खून की वमन की चिकित्सा ✶

जो घोड़ा खून को वमन करता हो उसको जामुन की छाल छाया में सुखाकर तीन अण्डे की सफेदी मिलाकर गोला बनाकर सात दिन तक प्रातःकाल खिलावें ।

शाहतरा, हरड़, आंवला इन तीनों को समान भाग में लेकर प्रातःकाल ओर सायकाल दाना देने के एक घण्टा पहले दिया करें लाभ होगा ।

घोड़ें की खुराक हजम हो

जिस प्रकार मनुष्य को भोजन पचाने के लिए चूर्ण दिया जाता है उसी तरह घोड़े को भी खुराक हजम करने के लिए हाजमा की दवा दी जाती है । इस दवा को आप घोड़ों के हाजमा के लिए रामवाण ही समझे । नुस्खा निम्न प्रकार है ।

अदरक आधा पाव, काली मिर्च आधा पाव, पीपलामूल आधा पाव, नारियल आधा पाव, बादाम की गिरी आधा पाव लौंग एक छटांक, जायफल एक छटाँक, जावित्री एक छटाँक, गुजराती इलायची ८ दाना, सोंठ ६ दाना, तज एक छटांक, पान के पत्ते सात सौ। इन वस्तुओं को काटकर तीन भाग करें और एक-एक भाग दिन में तीन बार घोड़े को खिलावें।

हजमूम

जिन घोड़ों की पाचनशक्ति ठीक न हो, यदि उनको ये चूर्ण खिलाया जायें तो कुछ दिनों में ही उनका हाजमा ठीक हो जाता है।

नुस्खा—कचरी एक पाव, राई एक पाव, बंग एक पाव, आंवला एक पाव, सोंठ एक पाव, घुड़बच एक पाव, सेंधा नमक एक पाव, काला नमक एक पाव। सब दवाओं को कूट पीस और छानकर चूर्ण बनालें। ये आधा पाव चूर्ण महेले में मिलाकर घोड़े को खिलावे।

हुदे संबुलखार

घोड़ों के लिये यह प्रसिद्ध यूनानी दवा है जो कि जहरवाद और कुरकुरी के लिये अक्सीर प्रमाणित हो चुकी है।

नुस्खा—बच्छनाग एक तोला, सम्बूल एक तोला, हरताल एक तोला, सिगरफ एक तोला, संगरेजा एक तोला, सोंठ एक तोला, सुहागा एक तोला, काली मिर्च एक तोला, कत्था ३ तोला अदरक पांच सेर। सब दवाओं को अदरक के रस सात दिन तक खरल करें और बाद में चने के बराबर गोलियां तैयार करलें।

मात्रा—गेहूं के छटांक भर आटे की रोटी तैयार करके एक गोली पीस कर उसके बीच में रखकर घोड़े को शाम का दाना खिलानें के बाद खिलावें।

गाय भैंस के रोग
और
उनकी चिकित्सा

खांसी

● पहला नुस्खा ●

सूखी खांसी–बबूल का गोंद टका भर, कतरी एक टका भर लेकर दोनों को बारीक पीसकर, जौ के आटे में मिलाकर जल का छींटा देकर तैयार कर लेवें और दिन भर में एक लड्डू खाने को देवें।

● दूसरा नुस्खा ●

गाय का खालिस घी और शहद दोनों समान भाग लेकर मिलायें, उनमें थोड़ा सा कपूर डालें और थोड़ा गरम करके गाय के नथनों में डालें।

● तीसरा नुस्खा ●

एक छटांक अरूसे के पत्त, एक टका भर सांभर नमक, जौ के आटे में मिलाकर लड्डू बनाकर गाय को खिलायें।

सर्दी की खांसी के लिये चौथा नुस्खा

सोंठ आधा पाव, सुहागा आधा पाव जायफल आधा पाव, कुटकी आधा पाव, वायविडङ्ग आधा पाव, हींग (भुनी हुई) आधा पाव, फिटकरी (फूली हुई) आधा पाव, काली मिर्च आधा पाव, सफेद जीरा आधा पाव, मेथी का आटा आवश्यकतानुसार।

सब दवाओं को कूट पीसकर और छानकर मेथी के आटे में मिलाकर छटांक भर की गोलियां तैयार करें और गाय को एक-एक करके दिन में दो-तीन बार गोली खिलायें।

पाँचवा नुस्खा

पाव भर गाय का खालिस घी और पाव भर मलाई खिला दें।

सर्दी की खांसी के लिये छटा नुस्खा

खांसते २ गाय का शरीर कांपे और मुख से रक्त निकले तो उसको पक्का केला खिलाये।

सर्दी की खांसी के लिये सातवां नुस्खा

केले के खम्भे को कूटकर उसका अर्क (रस) निकाल कर गाय को पिलाये।

आठवां नुस्खा

थोड़ी सी ब्राँडी लेकर गाय को पिलायें।

नौवां नुस्खा

आटे को मांडकर उसमें दस लाल मिर्च मिलाकर खिलायें।

नोट—यह मालूम होने पर कि गाय को खांसी हो गई हैं उसको किसी बन्द स्थान पर बांधना चाहिये। खांसी आगे चलकर बड़ी हानिकारक प्रमाणित हो सकती है, अतः इसकी

चिकित्सा की ओर फौरन ध्यान देने की आवश्यकता है। सर्दी की खांसी की दशा में गाय के ऊपर कपड़ा जरूर डाल दें।

अजीर्ण

जब यह मालूम हो जावे कि गाय को अजीर्ण रोग हो गया है तो उसको सबसे पहले जुलाब दें। उसके बाद उसको औषधि दें। ऐसा करने से रोग जल्दी मिट जाता है।

जुलाब

आधा पाव मुसब्बर और एक छटांक अलसी का तेल दोनों दवाओं को एक साफ बर्तन में रख लें। फिर एक कढ़ाई में जल भर कर चूल्हे पर रख देवें उस जल में दवाओं वाला बर्तन रख लेवें और नीचे आग जला देवें इस तरीके से दवा तैयार करने को वाटर-बाथ सिस्टम (Water Bath System) कहते हैं। जब दोनों औषधियां अच्छी तरह मिलकर एक हो जावें तो उतार लेवें।

तेज जुलाब

यदि पशु के लिये तेज जुलाब की आवश्यकता हो तो ऊपर वाली दवाओं में दो-तीन मिगियां जमालगोटा को डाल देनी चाहिए और डेढ़ छटांक शीरा मिला देना चाहिये।

मात्रा—पशु की शक्ति के अनुसार दो तीन तोला तक यह औषधि उसको देनी चाहिये।

नोट—किसी भी दवा में जमालगोटा डालने से पहिले उसको शुद्ध करना आवश्यक है। जमालगोटा को शुद्ध करने का तरीका यह है कि पहिले भैंस का गोबर लेकर उसमें उसके दाने डालकर उबालें और जल से दो-तीन बार जरूर धोवें

ताकि उसमें से गन्ध जाती रहे। दानों में से हरियाली भी निकाल देनी चाहिये। दाने की गन्ध जब जाती रहे तो उनको खरल करें। खरल करके बाद में पक्के खिपड़ा पर थोप देवें ताकि चिकनाई खिपड़ा चूस जावे। इसके वाद जमालगोटा पीसकर नुस्खा में डाल सकते हैं।

अजीर्ण की दवा

● पहला नुस्खा ●

देशी शराब आधा पाव, भांग (पिसी हुई) सवा तोला, काली मिर्च (पिसी हुई) सवा तोला, जीरा (पिसा हुआ) पांच तोला, गुड़ डेढ़ छटांक।

इन सब औषधियों को एक सेर गरम जल में घोलकर दो–दो घण्टा के वाद पिलावें। भगवत कृपा से कष्ट जरूर दूर हो जाएगा।

● दूसरा नुस्खा ●

त्रिकुटा, काली जीरा, सफेद जीरा, चीता, वच, हींग सौंफ, देशी राई, कचरी, अजवायन, हल्दी सुहागा (भुना हुआ) फिटकरी (भुनी हुई) सेंधा नमक, काला नमक, हरड़, बहेड़ा, आंवला, वायविडङ्ग, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार प्रत्येक वस्तु दस–दस तोला लेनी चाहिये।

सब दवाओं को कूट पीस और छानकर रखलें। अजीर्ण के लिये अचूक दवा है।

● तीसरा नुस्खा ●

झिकवारी का गोंद एक पाव, अदरक एक पाव, हरड़ वहेड़ा, आंवला, कचरी, अजवायन, काली मिर्च, पीपल हल्दी, राई, गूगल, भांग, सेंधा नमक, काला नमक, इन्द्रायन की जड़

प्रत्येक वस्तु ५-५ तोला लेनी चाहिए। सब औषधियों को कूट छानकर रख लेना चाहिए।

यह दवा ५ तोला की मात्रा में दही के साथ हर रोज गऊ को खिलाएं। यह रामवार्ण औषधि अजीण, अफारा, बदहजमी —इत्यादी के लिए अक्सीर है।

शूल

कारण— खराब चारे और गन्दे जल के कारण यह रोग हो जाता है। मेदे में चारा अड़ जाने के सबब से भी शूल की बिमारी हो जाती है।

लक्षण— इस रोग में गाय बहुत बेचैन हो जाती है। पिछले पैर पेट पर मारती है। दांत पीसती है। जगाली करना बन्द कर देती है। पेशाब बार-२ करती है। कब्ज भी हो जाती है और पेट में अफारा रहता है।

पहला नुस्खा

एक छटांक कास्टर आयल (Castor Oil) यानी अरण्ड का तेल गरम जल में मिलाकर गाय को पिलाने से कब्ज और शूल मिट जाते हैं।

दूसरा नुस्खा

हींग एक तोला, अफीम पांच रत्ती, सोंठ (पिसी हुई) एक छटांक, गरम जल एक सेर, सब दवाओं को मिलाकर, दो-दो घण्टा के बाद देवें।

शूल के लिये गोलियां, तीसरा नुस्खा

इन्द्रायन की जड़ टका भर, अजवायन टका भर, बायविडङ्ग टका भर, भटकटैया टका भर, सेंधा नमक टका भर,

पुराना गुड़ आध पाव, निर्गुण्डो दो तोला, हल्दी दो तोला, अजवायन ५ तोला, हलेला खुर्द (छोटी हरड़) पांच तोला, हींग (भुनी हुई) एक तोला।

तैयार करने की विधि—इन सब दवाओं को कूट पास छान कर नौ गोलियां तैयार कर लेवें।

सेवन विधि—प्रातः और सायंकाल १-१ गोली खिलाये।

गाय के शूल के लिये चौथा नुस्खा

सौठ दो तोला, गुड़ पांच तोला, हींग (भूनी हुई) चार माशा इन सबको मिलाकर अनुमान से गोलियां बनाकर गाय को खिलावें।

पांचवाँ नुस्खा

पीपल के पेड़ को छाल आधा पाव, अरण्ड की जड़ तीन छटांक, भटकटैया की जड़ चार तोला, तीतली का पत्ता एक तो० इन सब औषधियों को जल में औटाकर गाय को पिला दें।

आप यह दवा, रोग अधिकता व न्यूनता और गऊ की अवस्था के अनुसार घटा बढ़ा सकते हैं।

छटा नुस्खा

हींग एक तोला, भांग एक तोला, जीरा एक छटांक।

तीनों वस्तुओं को पीस कर गरम जल में मिलाकर एक-एक घण्टा के बाद दें।

सातवां नुस्खा

गाय के दूध में गाय का खालिस घी मिलाकर गाय को पिलावें और भगवान की लीला देखें। शूल का रोग इस तरह से मिटेगा जिस तरह हवा में फूंक मार दी हो।

आठवां नुस्खा

आधा तोला तमाखू (पीने का) हुक्का के जल में मिलाकर गाय को पिलायें।

● नौवा नुस्खा ●

कन्जे की मिगी और तमाखू का पत्ता दोनों को पीसकर गीले आटे में मिलाकर एक-एक तोला, की गोलियां बनायें और गाय को खिलायें।

● दसवां नुस्खा ●

कन्जे की मिगी निकाल कर किसी ठीकरे पर सेक लें, सेकने के पश्चात् महीन पीपकर, काला जीरा, सफेद जीरा और काला नमक समान भाग लेकर उसमें मिलाकर दो-दो घण्टे के बाद गाय को खिलाएँ।

● ग्यारहवां नुस्खा ●

शुरू में निम्न का नुस्खा पिलाएं।

तारपीन का तेल पांच तोला, हींग एक तोला, मीठा तेल तीन पाव, तीनों औषधियों को मिलाकर गाय को दें।

अगले दिन निम्नलिखित नुस्खा दिन में दो बार दें।

लहसुन एक तोला, प्याज पांच तोला, काला नमक दो तो० काली मिर्च एक तो० अजवायन दो तो०, हींग दो तो०, अदरक दो तो०, गरम जल तीन पाव।

सब दवाओं को गरम जल में मिलाकर गाय को दिन में दो बार पिलाएं।

✱ पुराने शूल से उत्पन्न पेट की सूजन की चिकित्सा ✱

● पहला नुस्खा ●

मकोय (जड़ समेत) दस तोला, लहसून तीन तोला, हरड़ तीन तोला, हल्दी पांच तोला, पुराना गुड़ दस तोला।

सब दवाओं को कूटें, पीसें और छानें फिर पुराने गुड़ में मिलाकर गोलियां तैयार करें। इन सब गोलियों से गाय के पेट की सूजन और शूल मिट जाते हैं।

● दूसरा नुस्खा ●

भैंस का ताजा गोबर लेकर सूजन वाले स्थान पर लेप करें, सूजन जाती रहेगी।

● तीसरा नुस्खा ●

संभालू के पत्तों का वफारा देवें। भगवत कृपा से शूल मिट जाएगा।

मसाला बदहजमी के लिए

काली मिर्च पैसाभर, हींग पैसाभर, बड़ा बंत्र पैसाभर, अजमोदा पैसाभर, सेंधा नमक एक छटांक।

सब दवाओं को कूट पीस छानकर आटे में मिलाकर गोला बनाएँ और गाय को खिलाएं।

अजीर्ण के लिए मसाला

सेंधा नमक एक पाव, भांग एक पाव, अजवायन एक पाव, नागौड़ा असगन्ध एक पाव, सौंचर नमक आध सेर, खुरासानी अजवायन एक पाव, सांभर नमक सवासेर, लोटा सज्जी एक पाव।

इन सब दवाओं को कूट पीस छानकर चने के आटे में मिलाकर रख लें और प्रतिदिन प्रातः काल टका भर गाय को खाने के लिये दें।

अतिसार (DIARRNOEA)

कारण—खराब दाने, खराब जल के कारण यह रोग हो जाता है। गर्मी या सर्दी की अधिकता से भी इसकी शिकायत

हो जाती है। बहुत सूखे कच्चे चारे से भी यह बीमारी लग जाती है। आंतों की खराश या पेट में कीड़ों के कारण भी यह शिकायत हो जाती है।

लक्षण—अतिसार में दस्त पतला आता है। गाय जुगाली या तो कम करती है या बिल्कुल नहीं करती। जल्द खुश्क हो जाती है। प्यास बहुत लगती है।

चिकित्सा—सबसे पहले गाय को एक पाव कास्ट्रायल देकर जुलाब दें। इसके निम्नलिखित नुस्खों में से कोई एक प्रयोग में लाये।

● पहला नुस्खा ●

कत्था ढाई छटांक, अदरक एक तोला, अफीम साढ़े चार माशा, देशी शराब एक छटांक इन सबको मिलायें तीन दिन में कई बार थोड़ो-थोड़ो देवें।

● दूसरा नुस्खा ●

माजूफल दो तोला, चिरायता दो तोला, खड़िया मिट्टी तीन तोला इन सब दवाओं को अलग-अलल कूट पीस छानकर मिलायें और चावल के मांड के साथ दिन में दो बार देवें।

● तीसरा नुस्खा ●

खड़िया मिट्टी (पिसी हुई) ५ तोला, कैथ का अर्क ढाई तोला, सोंठ (पिसी हुई) डेढ़ तोला, देशी शराब पांच तोला इन सबको मिलाकर गर्म मांड के साथ दिन में दो बार देवें।

● चौथा नुस्खा ●

खड़िया मिट्टी बारीक पिसी हुई पाँच तोला, चिरायता (बारीक पिसा हुआ) ढाई तोला, अफीम दस रत्ती। तीनों औषधियों को दें। भगवान की कृपा से रोग मिट जाएगा।

● पांचवाँ नुस्खा ●

प्याज पक्का हुआ पांच तोला, कत्था दो तोला, अफीम तीन माशा, सोंठ सवा तोला, देशी शराब एक छटांक। इन सब औषधियों को शराब में मिलाकर तीन पाव चावलों के मांड में डालकर देवें।

● छटा नुस्खा ●

सौंफ तीन तोला, केले का फल पांच तोला, अनार का बक्कल तीन तोले, देशी शराब दस तोले। इन सब दवाओं को आध सेर चावल के मांड में मिला कर गाय को देवें। प्रभु की कृपा से आराम हो जायेगा। चिन्ता करने की आवश्यकता नही।

● सातवाँ नुस्खा ●

नमक दो तोला, दालचीनी एक तोला, रेवटचीनी एक तोला, शोरा पांच तोला। पहली तीन औषधियों को बारीक पीस-कर शहद में मिलाकर गाय को चटाये और भगवान श्री हरि की लोला देखें। गाय जरूर तन्दुरुस्त हो जाएगा।

● आठवां नुस्खा ●

आम की गुठली पांच तोला, सौंफ ढाई तोला, दालचीनो पांच तोला, बेलगिरी पांच तोला। सब दवाओं को कूट पीस और छानकर तीन पाव मांड में दिन में दो बार गाय को दें।

● नौवा नुस्खा ●

जामुन का अर्क दस तोले, सौंफ ढाई तोला, गोंद बबूल ढाई तोला, अफीम तीन माशा।

आधा सेर चावल के मांड के साथ दिन में दो बार दें।

● दसवां नुस्खा ●

गन्धक का तेजाब तीन माशा, जल आधा सेर। दिन में दो बार दें।

यदि कमजोरी अधिक बढ़ जाये तो निम्नलिखित औषधियों में से कोई प्रयोग में लावें।

● ग्यारहवाँ नुस्खा ●

सौंठ (बारोक की हुई) सवा तोला, चिरायता (बारीक किया हुआ) सवा तोला, नमक एक छटांक, गुड़ आधा तोला। इन सब औषधियों को कूट पीसकर दिन में दो बार दें।

● बाहरवां नुस्खा ●

सफेदा दो आना भर, खड़िया मिट्टी दो तोला, अफीम बारह आना भर,। सब को मिलाकर दिन में तीन बार दें।

● तेरहवां नुस्खा ●

कच्चे बेल को जलाकर गुड़ के साथ खिलावें।

● चौदहवाँ नुस्खा ●

खड़िया मिट्टी आधा तोला, चीनी सवा तोला, दोनो को एक सेर चावलों के मांड के साथ दें तो निश्चय ही गाय तन्दुरुस्त हों जायेगी।

● पन्द्रहवाँ नुस्खा ●

कसीस साढ़े चार माशा, देशी शराव सवा तोला। दोनों को आधा सेर चावल के मांड में मिलाकर दे।

पेट की बीमारीयों के लिए कुछ टोटके

पांच तोला खारी नमक, पाव भर गुड़ में मिलाकर जल में औटाकर देने से गाय का पेट हल्का हो जाता है

पाव भर कास्ट्रायल यानी अरण्डी का तेल साफ किया हुआ गाय के दूध में मिलाकर देने से वायु खुल जाती है।

इन्द्रायन के फल का गूदा, उतने हीं वजन का साबुन, किसी कपड़े की पट्टी से चिपका कर गुदा के भीतर रखने से पशु का पेट साफ हो जायेगा।

कुलंजन रोग के लिए इन्द्रायणी का फल डेढ़ छटांक लेकर गरम करके मथ लें ओर ठण्डा होने पर पिलायें।

एकाएक पेट के फूलने पर छटांक भर सरसों का तेल लेकर दोनों कानों में भर दें ऊपर से हुक्के का पानी डाल दें इससे पेशाब खुल कर आयेगा और पेट ठीक हो जायेगा।

लाल चींटियों की मिट्टी आधा पाव जल में घोलकर देने से वायु बन्द होने से जो कष्ट हो वह दूर हो जाता है।

सफेद जीरा और धनियां पीसकर जौ के आटे में मिलाकर देने से फूला हुआ पेट ठीक हो जाता है।

कुटकी, लहसुन और काला जीरा पीसकर गोला-सा बना लें और गाय के गले में उतार दें तो बदहजमी के कारण फूला हुआ पेट ठीक हो जाता है।

खुरहा

(खुरपका, जीभ और मुंह का रोग)

खुरहा (Contagious Diseases) में से है। इस रोग से गायें मरती नहीं, पर जहां यह रोग एक गाय को लगा तो बस यह समझ लें कि सारी गौशाला में फैल गया। इस रोग में गाय के मुंह, खुरों और थनों में कीड़े पड़ जाते हैं। उसको बुखार हो जाता है। वह जुगाली बन्द कर देती है।

उसके मुंह से झाग गिरने लगते हैं। जीभ ओर मसूडों पर जख्म हो जाते हैं।

गाय को यदि यह रोग हो जाये तो उसके आराम का पूरा पूरा ध्वान रखें। उसको नमक बिल्कुल न दे, क्योंकि नमक से घाव में सुरसुराहट और कटाव उत्पन्न हो जाता है। नरम ताजा खाने को दें। चावल का मांड और जौ का सत्तू पीने के जल में घोलकर दें।

चिकित्सा—खारी नमक पांच तोला, चिरायता दो तोला, कलमो शोरा छः माशा, गुड़ नौ माशा, कपूर ७॥ तोला। इन सबको सेर भर जल में घोलकर दिन में कई वार थोड़ा-थोड़ा करके पिलायें।

घाव धोने के लिए

नीला थोथा ढाई तोला, फिटकरी पांच तोला, जल दो सेर पहली दोनों औषधियों को जल में घोलकर उससे घावों को धोयें।

नीम की हरी पत्ती एक पाव लेकर दो सेर जल में डालकर चूल्हे पर चढायें। जल ठण्डा हो जाये तो उससे घावों को धोयें और धोने के पश्चात निम्नलिखित माहमों में से कोई एक घावों पर लगा दें।

आधा पाव अलसी का तेल गरम कर उसमें आधा पाव मोम डाल दें। फिर नोला थोथा पांच माशा और पांच माशा तारपीन का तेल डालकर मरहम बनायें।

तम्बाकू आधा पाव, पत्थर का कोयला आधा पाव, सरसों का तेल एक पाव, नीला थोथा एक छटाँक। सबकों मिलाकर मरहम बनायें।

आवश्यकतानुसार जल लेकर उसमें तमाखू घोलकर धूप में रख दें। जब यह धूप से गरम हो जावे तो उसमें नीला थोथा और कोयला को बारीक पीसकर मिलायें फिर सरसों का तेल मिलायें। बस मरहम तैयार है।

खुरहा रोग में खाने की औषधियां

● पहला नुस्खा ●

कपूर डेढ़ छटांक, नमक एक छटांक, चिरायता दो तोला, कलमी शोरा आधा तोला, गुड़ नौ माशा सब औषधियों को गुड़ में मिलाकर गाय को पिलायें।

● दूसरा नुस्खा ●

एक भाग कच्चा सुहागा, चार भाग शहद में मिलाकर दें। खाने के लिए मांड और हलका चारा दें।

● तीसरा नुस्खा ●

आधा सेर घी में छटांक भर काली मिर्च मिलाकर दें।

कुछ अन्य इलाज

एक तोला फिटकरी, आधा पाव कीकर की छाल. ढाई सेर जल में डालकर गुनगुना करके दें।

कड़वे तेल और तारपीन के तेल में कपूर डालकर पैरों के नाखूनों पर लगायें।

मिट्टी के तेल या फिनायल से धोयें अथवा नीम की पत्तियों को गरम पानी में डालकर घाव धोये।

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं खुरहा रोग यदि एक

बीमारी अपने आप हो जाया करती है। यह छूत वाली बीमारी एक जानवर को लग जाने से उससे दूसरे और दूसरे से तीसरे को लगकर इस प्रकार सारी गौशाला में फैल जाती है। चूंकि इसके परमाणु वायु में फैल जाते हैं अतः बिमारी जानवरों को अलग कर देने पर भी यह दूसरे पशुओं को लग जाती है। जहाँ वह किसी जगह पर किसी एक पशु को हुई बस फिर यह वहां के सारे पशुओं में फैली। इसलिए २० फुट लम्बा और नौ फुट चौड़ा और छः फुट गहरा एक तालाव वनवाकर उसमें जल डलवा कर उस जल में फिनायल, फिटकरी आदि कीड़े मारने की औषधियाँ डलवा देनी चाहिए। प्रातःकाल जब मवेशी जंगल में चरने के लिये जायें तो एक-एक करके उसमें उनको गुजारना चाहिए और साँयकाल जब वह वापिस आंये तो फिर उनको उसी प्रकार उस तालाब के जल में गुजारे। केवल तीन चार दिन तक ऐसा करने से जिन मवेशियों को खुरहा होगा उनका रोग मिट जायगा और गौशाला में वाकि ढोर इस भयानक रोग के काबू में न आकर कष्ट पाने से वच जायेगे।

वात रोग

कारण—गाय यदि वहुत दिनों तक एक ही स्थान पर बंधी रहे या खराव घास खाये तो उसको वात रोग हो जाता है।

लक्षण—गाय को ज्वर हो जाता है। उसको उठने में पीड़ा होनी है। उसके जोड़-जोड़ में दर्द होता है।

चिकित्सा—वात रोग में सबसे पहले गाय को जुलाव दे। नीचे मैं जुलाव के नुस्खे लिख रहा हूँ, उनमें से कोई सा जुलाब गाय को दे सकते हैं।

जुलाब का पहला नुस्खा

एक पाव अरण्डी का तेल गाय को पिला दें।

दूसरा नुस्खा

नमक आधा सेर, जीरा (बारीक किया हुआ) आधी छटांक मुसब्बर पैसा भर। तीनों दवाओं को मिलाकर सेर भर चावलों के मांड के साथ गाय को दें।

तीसरा नुस्खा

नमक तीन छटांक, सरसों (बारीक) एक छटांक, सोंठ (बारीक) आधी छटांक, देशी शराब आधा पाव।

सब औषधियों को मिलाकर चावलों के सेर भर के लगभग मांड में मिलाकर गाय को खिलायें।

चौथा नुस्खा

काला नमक एक पाव, सनाय के पत्ते आधा पाव, सोंठ का चूर्ण आधी छटांक।

इन तीनों औषधियों को सेर भर चावलों के मांड के साथ, जो कि गरम हो, गाय को दें।

पांचवाँ नुस्खा

एपसम साल्ट एक पाव, गन्धक (बारीक) आधी छटांक। तीनों दवाओं को एक सेर चावलों के गरम मांड के साथ दें।

जिस दिन गाय को जुलाब दें, उस दिन उसे दिन में दो बार डेढ़ तोला शीरा जल में घोलकर पिलायें। तीन दिन के बाद उसे निम्नलिखित औषधि खिलायें।

● वात रोग के लिये औषधि ●

गन्धक आध पाव, अदरक एक तोला। दोनों दवाओं को एक सेर चावल के मांड के साथ दें।

तारपीन का तेल आध पाव और अलसी का तेल आधा सेर मिलाकर दिन में दो-तीन बार गाय के शरीर पर मलें।

खुजली

खुजली दो प्रकार की होती है। एक खुश्क, दूसरी तर। तर खुजली मैले स्थान पर रहने के कारण, गन्दे जल में लेटने से या मैले जल में लेटने से हो जाया करती है।

● तर खुजली की चिकित्सा ●

१—देशी साबुन, राई और सिंदूर, इन तीनों दवाओं को समान भाग लेकर ईख के सिरके में मिलाकर लेप कर दें।

२—मुलतानी मिट्टी जल में घोलकर लगायें।

३—तेल पिलायें।

४—साबुन, राई और सिंदूर शराब में मिलाकर लेप करें।

५—फिनायल से स्नान करायें।

६—दूध में मिट्टी का तेल मिलाकर मालिश करें।

● खुश्क खुजली की चिकित्सा ●

१—हरताल और नमक गाय के खालिस घी में मिलाकर मलें।

२—बकरी के आधी छटांक दूध का टीका यानी इन्जेक्शन करें।

आंख के रोग (DISEASES OF EYES)

आंख का दुखना

कारण—चोट के लगने से या किसी चीज के पड़ने से, सख्त गर्मी या सर्दी के कारण, गन्दे स्थान पर रहने से, मक्खी या मच्छर के काटने से आँखे दुखने लग जाती है।

लक्षत—आंख सुर्ख रहती हैं, उनमें से पानी वहता है, उनमें कीचड़ आ जाती है।

चिकित्सा—(१) फिटकरी के पानी से आंखो को धो दें।

(२) हलेला खुर्द यानि छोटी हरड़ घी में भूनकर नमक के साथ पीसकर आंख के आस-पास लगायें।

(३)टकाभर सुअर की विष्टा खिलायें।

(४) रविवार या मंगलवार रजस्वला स्त्री के रूधिर में भीगे हुए वस्त्र का थोड़ा सा टुकड़ा खिला दें।

(५)भुजवल पक्षी के पंख आटे के वीच में रखकर खिला देते से यह रोग जाता रहता है

(६) खाने को चने का दाना बन्द करके चोकर व हरो घास दें।

(७) पीने के जल में नमक आधा पाव, कलमी शोरा एक तोला, मिलाकर सात दिन तक खिलायें।

आँख में फूली पड़ना

यह रोग आंख के वहुत देर तक दुखने के वाद होया करता है या चोट लगाने से हो जाता है।

लक्षण—इस रोग में आंख फूल जाती है। उसमें से पानी टपकने लगता है। सुर्खी रहने लगती है और पुतली पर सफेदी छा जाती है। यदि इस ओर जल्दी ध्यान न दिया जाये तो आँख से दिखाई देना बिल्कुल बन्द हो जाता है।

चिकित्सा—(१) कटेरी का रस आंख में टपकायें अथवा गेरू और शोरा पीसकर आंख में डालें।

(२) साठी चावल, आक के दूध में भिगोकर एक मिट्टी के बर्तन में डालकर बर्तन का मुंह आटे से बन्द करके चूल्हे पर चढ़ायें। जब चावल जलकर राख बन जायें तो उस राख को सुरमे की नाई आंख में लगायें।

(३) धेला भर आक के दूध में सात बूँद शोरा डालकर अंगुली से गाय की फूली वाली आंख के चारों ओर सात चक्करों में लगायें, किन्तु यह चक्कर एक के ऊपर दूसरा होना चाहिए। ऐसा करने से उस जगह की खाल उड़ जाएगी और फूली को आराम आजायेगा।

(४) फिटकरी बहुत बारीक खरल करके फूली वाली आंख में थोड़ी-थोड़ी करके डालें।

(५) काला सुरमा एक तोला, चाकसू इमली के पत्तों में पकाया हुआ और साया में सुखाया हुआ ३ माशा, कलमी शोरा छः माशा, हाथी दांत का बुरादा तीन माशा, कागजी नीबू का रस आवश्यकतानुसार।

सब दवाओं को नीबू के रस में खरल करें। फिर चने के बराबर गोलियां बनालें। एक गोली पत्थर पर घिसकर दिन में दो बार गाय की फूली वाली आँख में डालें।

रतौंध (रात को दिखाई न देना)

इस रोग में गऊ को दिन में तो सब कुछ दिखाई देता है परन्तु वह रात को कुछ नही देख सकतो।

चिकित्सा—(१) हुक्का की मैल आंखों में लगायें।

(२) चीनी का टूटा बर्तन आग में जलायें, उतनी ही मात्रा लाल फिटकरी को लें। अब दोनों को खरल करके सुरमा बनायें और गाय कीं आखों में लगावें।

(३) मछली का पित्त और शहद दोनों बराबर लेकर पांच दिन तक आंखों में लगायें।

(४) अरण्डी के नेल (कॉस्ट्रायल) की कुछ बूँदे आंखों में डालें।

आंख का जाला

१—गोलीदार कटेरी के फलों का रस गाय की आँख में टपकायें।

२—कांच की काली चूड़ी, हल्दी, सांभर नमक, कच्ची फिटकरी, कबूतर की वीट: इनको महीन पीसकर कागज की नलो द्वारा आंख में फूँकने से गाय की आंख का जाला जाता रहता हैं।

३—कलमी शोरा, हाथी का दाँत और नीबू का रस इनको खरल करके चने के बराबर गोलियाँ बनाकर पानी में घिसकर लगाने से गाय की आंख का जाला मिट जाता है।

४—गेरू और शोरा पीसकर कागज की नली द्वारा गौं की आंख में फूँकें।

५—सिंगरफ और मिश्री समान भाग लेकर सुरमे की तरह पीसकर मोर के पंख से गाय की आंख में लगाये तो जाला दूर हो जाएगा।

५—जाले के लिए सुरमे का नुस्खा—सिंगरफ दो तोला, लाल फिटकरी (फूली हुई) दो तोला, मिश्री दो तोला, खरिया छः तोला चारों औषधियों को खरल करके सुरमा बनाये और गाय की आंखों में लगायें।

७—मनुष्य की बहुत पुरानी खोपड़ी को जल में घिसकर गाय की आंखों में लगायें।

८—हाथी का नख, खिरनी के बीज, नीबू के रस में घोट कर लगाने से जाला दूर हो जाता है।

९—ममीरा दो तोला, नीला थोथा दो तोला, सिन्दूर दो तोला, नीबू का रस आवश्यकतानुसार। तीनों औषधियों को नीबू के रस में पीसकर सुरमा बनाकर सोलह दिन तक गाय की आंखों में लगायें, जाला कट जाएगा।

आंख उठना

कारण—आंख में चोट लगने या गर्द पड़ने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण—इस रोग में आंख सुर्ख हो जाती है। हर वक्त आंख से पानी बहता है। कम दिखाई देता है।

नोट—इस रोग का इलाज जल्दी करना चाहिए नहीं तो आंख में फूली पड़ जाती है।

चिकित्सा—१. सन्दल सुर्ख (लाल चन्दन), आम के पत्ते, हल्दी और अफीम, यह चारों औषधियां समान भाग लेकर सेंहुड़

के रस में पीसकर गर्म करके आंख के चारों तरफ दिन में दो–तीन बार लेप करते रहें। याद रहे कि यह दवा आंख के अन्दर न जाने पावे।

२. छोटी हरड़ को घी में भून लें फिर उसे थोड़े से नमक के साथ जल में पीसकर दिन में दो बार आंखों के चारों तरफ लेप करें।

नोट—(१) याद रहे इलाज से पहिले फिटकरी के पानी से दो बार आंख को धो लेना चाहिए।

(२) यह भी ध्यान रखें कि आंख में धुआं न लगे। गौ को धूप के समय बाहर न निकालें। उसे अधिक प्रकाश वाले स्थान म न रखकर अन्धेरी जगह में रक्खें।

परिहुल

लक्षण—दांत और ओष्ठ के बीच वाले मसूडे फूल जाते हैं, जिनके कारण गाय न तो चारा ही चर सकती है और न पानी पी सकती है। खान–पान के समय उसको अत्यन्त कष्ट होता है।

चिकित्सा—मेथी १० तोला, सांभर नमक १० तोला, अलसी १० तोला। इन तीनों औषधियों को मिलाकर दिन में २–३ बार मलें। यदि फूले हुए स्थान के बीच में मवाद पड़ गया हो तो उस जगह को नश्तर से चिरवाकर मवाद निकलवा दें और उस के बाद उस जगह पर निम्नलिखित दवाओं में से कोई एक छिड़कते रहें।

पहली दवा

सोंठ दस तोला, काली मिर्च दस तोला, पास दस तोला। तीनों को कूट पीसकर बुरकें।

● दूसरी दवा ●

हल्दी और सांभर नमक, समान भाग लेकर कूट पीसकर सूजन पर लगावे।

कामला, पीलिया (यरकान)

कारण—इस रोग का प्रधान कारण, जिगर की खराबी हुआ करती है।

लक्षण – पीलिया रोग में गौ के मुख और आँखों में पीलापन छा जाता है। मूत्र का रँग भी पीला होता है। गोबर खुल कर नहीं आता।

चिकित्सा—धेला भर कसीस, चिरायता बारीक पीसा हुआ पैसा भर, सौंठ बारीक पीसी हुई। तीनों दवाओं को चावल के सेर भर मांड में मिलाकर दें।

खारी नमक एक पाव, सौंठ आधी छटांक भली भांति पीस कर उसमें नमक मिलायें और चावलों के मांड के साथ गौ को पिलाएं।

गाय को लाल या काला पेशाब आना

जब ऋतु बदलने का समय आता है तो गाय को यह रोग हो जाया करता है। विगड़े हुए और गन्दे पानी के पीने से यह बीमारी लग जाया करती है। चारा अधिक खा जाने पर जब खून में खराबी पैदा हो जाती है तब यह रोग हो जाता है।

इस रोग में गाय जुगाली अच्छी तरह नहीं कर सकती। गोबर और पेशाब उसे खुलकर नहीं आता। पेट में दर्द रहता है। पेशाब का रंग खून की तरह लाल हो जाता है और कुछ

दिन के वाद काला पड़ जाता है। उसके पेशाव में से दुर्गन्ध आने लगती है।

इस रोग में घास और नमक मिलाकर देवें। ध्यान रहे कि एक गाय को जब यह रोग होता है तो सारी गऊओं को हो जाता है। अत: सबको हो नमक देते रहें। और इस बात का भी ध्यान रखें कि गायों को स्वच्छ पानी ही पिलाया जाये।

इस बीमारी का इलाज शुरू करने से पहले गऊ को जुलाब देना आवश्यक है।

जुलाव की औषधियां—(१) तीन पाव अलसी का तेल देवें।

(२) आध सेर गुड़ और आध सेर नमक देवें।

(२) नमक आधा सेर, कास्ट्रायल आधा पाव, चावल का मांड आधा सेर देवें।

जुलाव के वाद इलाज शूरू करें,

पहला नुस्खा

कत्था धेला भर, अफीम दस रत्ती, फिटकरी धेला भर, गोंद पेसा भर, चावल का मांड डेढ़ पाब, शराव आधा पाव।

सब औषधियों को मिला दिन में दो बार देवें।

दूसरा नुस्खा

कसीस छः आना भर, चिरायता (बारीक) सवा तोला, अदरक (महीन) सवा तोला, चावल का मांड आधा सेर।

पहली तीनों दवाओं को चावल के मांड में मिलाकर दिन में दो बार गाय को देवें।

तीसरा नुस्खा

अदरक (पिसा हुआ) सवा तोला, चिरायता (पिसा हुआ) सवा तोला, काली मिर्च (महीन की हुई) सवा तोला, अजवायन (बारीक की हुई) सवा तोला, नमक एक छटांक, गुड़ एक पाव।

सब दवाओं को मिलाकर गाय को दिन में दो बार देवें।

मोच आना

जिस प्रकार मनुष्य का चलते समय ऊंची-नीची भूमि पर पांव पड़ने से उसके पांव में मोच आ जाती है उसी तरह गाय का पैर भी ऊंचो नीची जगह पर पड़ जाने से उसमें मोच आ जाती है।

वह लंगड़ा कर चलती है और मोच वाला स्थान सूज जाता है।

चिकित्सा—पहले आधी छटांक नमक, आधी छटांक नौशादर डेढ़ पाव पानी में मिलाकर कपड़ा भिगोकर उसको बांधते रहें। जब दर्द कम हो जावे तो एक छटांक तारपीन का तेल, पाव भर अलसी के तेल में मिलाकर, मोच वाली जगह पर मालिश करें।

दाद

"दाद" प्रसिद्ध रोग हैं जिस तरह मनुष्य को हो जाता है उसी तरह से ढोरों को हो जाता है। यह रोग जब एक बार उत्पन्न हो जावे तो फिर बढ़ता ही जाता है।

कारण—खान पान में व्यतिक्रम होने से खून में बिगाड़ पैदा होकर, यह रोग उत्पन्न हो जाता है। इस रोग में पीने के लिये भी औषधि दी जाती है और लगाने के लिए भी।

● खाने के लिए औषधि ●

चिरायता (महीन किया हुआ) तीन तोला, अदरक तीन तोला, शराब आधा पाव, पानी (स्वच्छ) आधा सेर।

सब को मिलाकर दिन में दो बार पिलावें।

● लगाने की औषधि ●

पीने की औषधि के साथ निम्नलिखित दवा दाद वाली जगह पर लगायें।

धूप पांच तोला, गन्धक पांच तोला, सुहागा पांच तोला, जल आवश्यकतानुसार।

सब दवाओं को पानी में पीसकर लगायें।

गाय के गले का घाव

गाय के गले के अन्दर घाव हो जाने पर लोहा गरम करके बाहर से सेक देवें।

गायकी जीभपर सर्दी से छाले पड़ जाना

यदि गाय की जीभ पर छाले पड़ जाएं और उसको चारा और जल पान करने में कष्ट हो तो निम्नलिखिन दवा दें।

नुस्खा—गुर्च एक सेर, उरद आफा सेर, पके पान बीस नग, कच्ची हल्दी आधा पाव, धनिया आधा पाव, नीम के पत्ते एक छटांक, खारी नमक आधा पाव, गुड़ आधा सेर, अजवायन एक पाव।

सब दवाओं को कूट पीस और छानकर लड्डू छटांक २ भर के तैयार करलें।

दिन में तीन बार एक-एक लड्डू दें।

जीभ पर लगाने की दवा

हल्दी और नमक यह दोनों चीजें नमक में मिलाकर जीभ पर लगाकर झाबे से रगड़ दें।

खुरपा

इस रोग में नीचे ऊपर के होठो पर छाले पड़ जाते हैं और उन छालों में मवाद भर जाता है।

चिकित्सा – नश्तर से चीर कर मवाद निकाल दें, इसके बाद हल्दी, पत्थर का कोयला और नीम की छाल, कूट पीस और छान कर घाव में भर दें तथा हल्दी और नमक इस घाव पर लगायें। भगवान की कृपा से रोग मिट जायेगा।

गाय को नजर लगना

यह रोग खून के बिगड़ने से पैदा हो जाता है। इसमें दुहने के वक्त पहले थोड़ा-सा दूध निकलता है फिर उसमें से खून निकलता है। इस बिमारी का नाम "नजर लगना" है।

चिकित्सा—गाय के नाक और कण्ठ में से थोड़ा सा खून निकाल देवें।

पांच छटांक अलसी के तेल में बत्तख का एक अण्डा मिला कर खाने को दें।

मृतिका के पात्र में अग्नि रख कर उस पर थोड़ा सा नमक डाल कर गाय के थनों को धुआं दें।

गाय के स्तन फटना

दूध दुहने वाले की असावधानी से प्रायः गाय के थन फट जाते हैं। जब ऐसा हो जाता है तो फिर गाय न तो दूध ही

निकालने देती है और न ही बछड़े को पीने देती है, क्योंकि ऐसा करने से उसे बहुत कष्ट होता है।

चिकित्सा—नीम की पत्तीयां डालकर जल को औटायें और उससे स्तनों को धोएं। इसके पश्चात निम्नलिखित मरहमों में से कोई एक लगाएं, निश्चय ही गाय तन्दुरुस्त हो जायेगी।

मरहम का पहला नुस्खा

घी और मोम को गर्म करके पिलायें, मरहम-सीं बन जाएगी। इस मरहम को स्तनों पर लगावें।

मरहम का दूसरा नुस्खा

बकरी की चर्बी दस तोला, मोम दस तोला, नारियल का तेल दस तोला। तीनों औषधियों को मिलाकर मरहम तैयार करें और गाय के थनों पर लगावें, लाभ होगा।

तालु रोग

लक्षण—इस रोग में दांत की जड़ से तालु तक मुंह का भाग फूल जाता है। कई बार छाला पड़ जाता है। गाय खाने पीने में कष्ट मानती है। अतः खाना पीना त्याग देती है और दिन-ब-दिन निर्बल होती चली जाती है।

चिकित्सा—सोया के बीज ओर अजवायन दोनों को दो-दो तोला लेकर औटायें और जल को ठण्डा करके छानकर गाय को पिलायें तथा नश्तर लगायें।

गाय के स्तन में जलन होना

इस रोग में गाय का स्तन फूल जाता है, सख्त हो जाता है और उसकी रङ्गत सुर्ख हो जाती है। ज्वर भी हो जाता है।

गाय को चलने फिरने से बहुत कष्ट होता है। दूध बिगड़ जाता है। अक्सर फोड़ा भी हो जाता हैं। चूंकि इस रोग में गाय की मृत्यु का भय रहता है अतः चिकित्सा की ओर फौरन ध्यान देने की आवश्यकता हुआ करती है।

चिकित्सा—थनों से दूध निकाल कर उन्हें गरम पानी से सेंक कर कम्बल से बांध दें और इलाज करने से पहले उसे जुलाव दें लें।

● जुलाब का पहला नुस्खा ●

नमक आधा सेर, गुड़ एक पाव, एक सेर चावल के मांड में मिलाकर जुलाव दें।

यदि ज्वर हो तो निम्नलिखित दें:—

सुरमा आधा तोला, कपूर पैसा भर, जेठी मधू आधी छटांक हल्दी आधी छटांक, सरसों एक छटाँक चावल का मांड़ आधा सेर।

सब वस्तुओं को मिलाकर दिन में एक बार दें।

● दूसरा नुस्खा ●

सुरमा पैसा भर, कपूर पैसा भर, अदरक एक तोला, आधा सेर चावल के मांड़ के साथ दिन में एक वार दें।

धनुष्टंकार

धनुष्टंकार रोग में गाय के पांव ऐसे हो जाते है जैसे कि जकड़े हुए हो। उसको चलने में बड़ा कष्ट होता है। गाय अपना मुंह लम्बा किये रहती है। मुंह खुल नहीं सकता। गोबर खुल कर नहीं होता।

चिकित्सा—पहले दिन गाय को १० बूंद जमालगोटे का तेल थोड़े से जल में घोल कर जुलाब के लिए पिलावें।

दूसरे दिन एक तोला हींग पानी में घोलकर उसे दें।

तीन दिन तक ऐसा करें। यदि आराम न आवें तो बैलोडोना का सत छः माशा और हीग ३ माशा आधा सेर जल में घोलकर गाय को पिलायें।

अर्द्धांग

अर्द्धाङ्ग को असाध्य रोग कहा गया है। पशु के रोग ग्रस्त हो जाने पर उसका बचना कठिन है। इसमें पशु के कान लकड़ी की तरह तन जाते है शरीर जकड़-सा जाता है। न खड़ा हो सकता है न बैठ सकता है।

चिकित्सा—एक मरा हुआ काला सांप लाकर मिट्टी के घड़े में डालकर ढाई सेर चने डाल दें और घड़े का मूंह बन्द करके गोबर में दबा रखने के पश्चात् निकाल कर उन चनों में से एक-एक चना पशु को जब तक कि वह स्वस्थ्य न हो जायें देते रहें।

यह चने ढोर पालने वालों को हर समय अपने पास तैयार रखने चाहिए।

अर्द्धांग रोग में दागना

अर्द्धाङ्ग रोग में दागना बहुत गुणकारी है। दो-दो दाग चारों पुट्ठों पर एक-२ ठठरी के नीचे, दो दाग दोनों कनपुटियों पर, दो दोनों नितम्ब पर लगा दें।

सन्निपात ज्वर

ज्वर होने पर गाय अपने पैरो को सिकोड़ कर खड़ी रहती है। उसकी जांघो, पंजर, गले और जींभ के नीचे सूजन हो

जाती है, जिससे श्वास बड़ी कठीनता से लिया जाता हैं इसके कारण बहुत से पशु मर जाते हैं इसलिए इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही बड़ी साबधानी के साथ इलाज शुरू कर देना चाहिये।

चिकित्सा—सन्निपात ज्वर में गाय को पहले जुलाब देना चाहिये उसके पश्चात् खाने को दवा दें।

यदि जुलाब न दें सकें तो निम्नलिखित नुस्खा की दवा पिचकारी से दें।

पिचकारी का नुस्खा

अलसी का गरम माँड दो सेर, खारी नमक एक छटांक, तारपीन का तेल आधी छटांक।

यह सब दवायें मिलाकर हिचकारी करें और निम्नलिखित नुस्खे को दवा खाने के लिये दे।

खाने की औषधि का नुस्खा

सुरमा १ तोला, देशी शराव १ छटाँक, अलसी का गरम मांड २ सेर।

पहली दोनों औषधियों को मिलाकर मांड के साथ पिलायें।

खाने की दवा का दूसरा नुस्खा

कपूर नौ माशा, देशी शराव एक छटांक, अलसी का गरम मांड २ सेर।

पहली दोनों चीजों को पूर्वोक्त रीति से मांड के साथ दे।

नोट—स्मरण रहे कि जिस स्थान पर बिमार गाय को रक्खे वह हर तरह से खुश्क होनी चाहिए। दरवाजें और खिड़कियां भी बन्द रक्खें ताकि वायु भीतर प्रवेश न करें।

प्रात: और सायं दोनों समय कच्ची लकड़ी जलाकर उस पर थोड़ा सा गन्धक डालकर धुआँ देना भी अत्यावश्यक है। बीमार गाय को दूसरे पशुओं से विल्कुल अलग रखें। दूसरी गाय को आधी छटांक नमक पानी में मिलाकर खिलातें रहे। विमार गाय को विल्कुल खुश्क घास, पात, अलसी का मांड, जौ का चून और जौ का पानी देते रहें।

कम्पन

कारण—गाय को यह रोग वादी के कारण हों जाया करता है।

लक्षण—इस रोग में गाय खड़ी-खड़ी अपने आप कांपने लगती है।

चिकित्सा—गेरु को जल में घोलकर पिलावें, तूम्बे की बेल उसके गले में बांध देवें।

अनछरा

लक्षण—इस रोग में गाय की जीभ पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं। खाने को इच्छा करती है, परन्तु खा नहीं सकती। जीभ के कांटों की चुभन उसे खाने नहीं देती।

चिकित्सा—१. सबसे पहले बांस को एक खपच से गौं की जीभ के कांटों को तोड़े।

२. नमक और हल्दी लेकर जीभ पर मलें और एक हाथ से जीभ पकड़कर दूसरे हाथ से झांवा देकर जीभ को रगड़ें।

३. काला नमक, जीरा, काली मिर्च और आंवा हल्दी समान भाग लेकर महीन करके जीभ पर लगावें।

४. रात को दो तोला धाय के फूलों को जल में भिगो दें। प्रातः काल सेंधा नमक एक तोला, रसौत ६ माशा, कलमी शोरा एक तोला, समुद्रफेन एक तोला। इन तीनों औषधियों को पीस कर उस जल में सान कर जीभ पर मले।

५. धाय की जड़, छाल, फूल, पत्ती इन सबको सोलह गुनां जल में औटाकर पानी के आधा रह जाने पर चूल्हे पर से उतार ले, ठण्डा करके इस जले को दिन में दो-तीन बार गाय की जीभ पर लगाते रहें।

घाव और उसकी चिकित्सा

● पहला नुस्खा ●

कच्ची राल और सफेद कपड़े की भस्म घाव में भरने से बहता हुआ खून बन्द हो जाता है।

● दूसरा नुस्खा ●

घाव पर कपड़े की गद्दी भिगोकर बांध दें और जल से उसे तर करते रहे।

● तीसरा नुस्खा ●

यदि घाव गहरा हो तो इमली की छाल को जलाकर राख करलें और उसे पीस कर घाव के ऊपर छिड़क दें। इससे खून बन्द होकर जल्द आराम आ जावेगा।

● चौथा नुस्खा ●

यदि घाव बहुत गहरा हो गया हो तो लाल मिर्च और सांभर नमक महीन पीसकर सरसों के तेल में डालकर चूल्हे पर चढ़ा कर पकावें और घाव पर वांध द।

● घाव धोने का तरीका ●

नीम की हरी पत्ती दो सेर पानी में डाल दें और थोड़ी फिटकरी डालकर चूल्हे पर चढ़ा दें। जब जल भली भांति औट जावे तो ठण्डा करके इससे घाव धोवें।

● घाव साफ करने के लिये ●

घाव पर यदि पपड़ी पड़ती हो और दवा असर न करती हो तो गाय के खालिस घी में सांभर नमक भली भांति पीसकर घाव के ऊपर चुपड़ते रहें। इस तरह करने से पपड़ी नरम पड़ जायेगी।

● घाव से वहता हुआ खून बन्द करने के लिये ●

मकड़ी का जाला घाव में भरने से खून वहना वन्द हो जाता है।

● घाव अच्छा हो जावे ●

नारियल का तेल चुपड़ने से भी अच्छा हो जाता है।

● जिस घाव में पीप पड़ गई हो उसके लिये मरहम ●

नुस्खा—मुरदासन पैसा भर, नीलाथोथा पैसा भर, राल पैसा भर, नीमकी कौंपल तीन तोला, गायका खालिस घी दस तोला चारों पहली औषधियों को खूब महीन पीसकर घी को चूल्हे पर चढ़ाकर उसमें डाल दें। जल जाने पर उतार लें, इस मरहम को कपड़े पर रखकर घाव पर रखने से घाव जल्दी ठीक हो जाता है।

● घाव अच्छा हो गया हो परन्तु खुरन्ड न आवे ●

जो घाव अच्छा हो गया हो परन्तु न तो उस पर खुरंड ही आता हो और न ही उसकी सुर्खी ही जाती हो उस पर पुराने

मकान का चूना खूब बारीक पीसकर छिड़कते रहें। अच्छा हो जावेगा।

जहर दिया जाना

खाल के लालच से लोग गायों को जहर दे दिया करते हैं। यह कम आपके लिये, मेरे लिये और गौ–भक्तों की दृष्टि में पाप है परन्तु जो नीच लोग या चर्मकार खालों को सप्लाई का ठेका लेते हैं उनके लिये काम पाप नहीं और वह लालच में अन्धे होकर अक्सर यह अकर्म किया करते हैं। भगवान ऐसे मनुष्यों को सद्–बुद्धि प्रदान करें। अब जहर दिये हुए पशु को चिकित्सा का वर्णन करता हूं।

संखिया का जहर

लक्षण—पशु की जीभ और होठ सूख जाते हैं। दांत बेठ जाते हैं। जीभ सूख जाती है, आंखें लाल हो जाती हैं और शरीर गरम हो जाता है। गुदा से स्याह रंग का खून निकलता है, मूर्छा आ जाती है। पशु हाथ पांव फैलाकर पड़ जाता है।

चिकित्सा—(१) लोहे का जङ्ग एक तोला, चूना एक तोला, नौशादर एक तोला, जल आवश्यकतानुसार। पहली तीनों दवाओं को जल में मिलाकर दो तीन बार दें।

(२) केले की जड़ का रस निकाल कर पिलावें।

(३) हड्डी का कोयला आधा पाव, आधा सेर जल में घोल कर पिलाना चाहिए।

(४) ईसबगोल ५ तोला, गाय की दही एक सेर, गुलाब जल एक पाव सबको मिलाकर पिलावे।

(५) गाय का असली घी और दूध अधिक मात्रा में पिलायें।

(६) विही दाना का जुलाब दें।

(७) गुलाब का जल में सफेद कत्था घोलकर पिलायें।

(८) दूध में अण्डे फेंटकर पिलायें।

बछनाग का जहर

लक्षण—पशु की जीभ और होठ सूख जाते हैं। यह मूर्छित हो जाता है और उसके मुंह से दुर्गन्ध निकलने लगती है।

चिकित्सा—(१) बकरी का गरम दूध पिलायें।

(२) खट्टे मिट्ठे नीबू का रस डालकर पिलायें।

(३) गाय का दूध पिलायें।

(४) वथुआ के साग का अर्क निकालकर पिलायें।

सींगिया विष

इस जहर से पशु के दाँतों और जीभ का रंग नीला पड़ जाता है। पशु मूर्छित हो जाता है गुदा और मूत्र मार्ग से खून निकलने लगता है।

सीकुर

इस रोग में गाय के चारों पांव सूज जाते हैं और वह चलने में लंगड़ाने लगती है। चारा कम खाती है और दिनोंदिन कमजोर होती चली जाती है।

चिकित्सा—बरजतिया नमक और सांप की पांजर एक से दो तोला तक खिलाने से गाय स्वस्थ हो जाती है।

निर्घन्ट

लक्षण—गाय के गले और कण्ठ में दोनों और आंवले की नाई दो गोलियाँ सी हो जाती हैं। इस रोग में गाय खान पान त्याग देती है।

यह रोग हेमन्त ऋतु में होता है तो गाय का मल मूत्र बन्द हो जाता है।

चिकित्सा—इन्द्रायन के फल का गूदा दस तोला, पीपल दस तोला, काली मिर्च दस तोला, नमक दस तोला, अदरक दस तोला, पान सबके बराबर।

सब दवाओं को कूट और पीसकर रख लो थोड़ी-थोड़ी दवा ग्यारह दिन तक गऊ को खिलायें। भगवान ने चाहा तो रोग अवश्य मिट जायेगा।

गाय के पेट का फूलना

पेट का फूलना बहुत ही भयानक रोग है। यदि शीघ्र इसके इलाज कीं और ध्यान न दिया जाए तो मामला बहुत खराब दशा को पहुँच कर पशु की मृत्यु हो जाती है। यह रोग अधिक खाने से हो जाता है। पेट का वाँया और पीछला भाग फूल उठता है। उंगली मारने पर ढब ढब की आवाज सुनाई देती है और पेट के अन्दर का पीलापन साफ मालूम पड़ता हैं। गाय इस रोग के कारण न तो श्वांस ही ले सकती है न हीं इधर उधर हो सकती है। इसका खान-पान भी रुक जाता है।

चिकित्सा—१ पहले गायें को दस्त कराने चाहिये। सेर भर छाछ में आधी छटांक नमक, आधी छटांक भर कचरी पास

कर मिलायें नाल से गाय को पिलावे। थोड़ी देर में उसे दस्त होने लगेंगे।

२. गर्म जल में साबुन और कड़ुवा तेल मिलाकर गोबर के मार्ग से पिचकारी करने से दस्त हो जाते हैं।

३. हुक्के के सड़े पानी की पिचकारी से दस्त हो जाते हैं।

जुलाब के वाद निम्नलिखित औषधियों में से कोई एक देवे। प्रभु कृपा से अवश्य आराम होगा।

१. आधा पाव राई पीसकर गरम जल के साथ पिलावें।

२. एक तोला अजवायन, एक तोला नौशादर, आधा पाव शराब के साथ दें।

३. खारी नमक एक तोला, पाव भर सरसों के तेल में मिलाकर नाक के द्वारा पेट में पहुंचाएं।

४. काला नमक दो तोला, काली मिर्च दो तोला, हींग आधा तोला, आक के पत्तों के साथ कूट कर गाय को दें।

५. पिसी हुई लाल मिर्च आधा तोला, अदरक एक छटांक, और भूनी हुई हींग एक तोला लेकर सबकी लुगदी बनाकर तीन-तीन घण्टे के बाद गरम जल के साथ दें।

अफारा की सर्वोत्तम औषधि

तारपीन का तेल ५ तोला, अलसी का तेल आधा सेर दोनों को मिलायें दवा तैयार है।

गन्धक (महीन) आधा पाव, सोंठ (बारीक की हुई) आधा पाव, अलसी का तेल तीन पाव, तीनों मिलायें, दवा तैयार है।

आक के फूल पानी में पीसकर खिलायें ऊपर एक पाव सरसों का तेल पिलायें, भगवान नाम का जप करे ताकि भगवान गौ माता का कष्ट दूर करें।

सोंठ डेढ़ तोला, काली मिर्च डेढ़ तोला, अलसी का तेल पाँच तोला, शराब दस तोला, स्वच्छ जल (गरम) आधा सेर।

पहली चारों औषधियों को गरम जल में मिलाकर गाय को दें। निश्चय ही आराम होगा।

सोंठ १।। तो०, एलुआ १।। तो०, नमक १।। पाव, अलसी का तेल आधा पाव, शराब आधा पाव, सबको मिलादें।

देशी शराब आधा पाव, सोंठ पिसी हुई एक तोला, काली मिर्च पिसी हुई एक तोला, स्वच्छ जल आधा सेर। दिन में दो बार दें।

जब पशु का पेट कुछ नरम पड़ जाय तब थोड़ी-थोड़ी नरम घास खाने को दे और जब तक वह अच्छी तरह से चारा न खाने लगे तब तक उसको अन्नादिक कुछ न दें।

बीमार गाय के पास जो दूसरे पशु रहते हों उनको भी नित्य प्रति थोड़ा-थोड़ा नमक देते रहें।

आग से जल जाना

आग से जल जाने पर फफोके पड़ कर घाव हो जाया करते हैं। इस दशा में चूने का पानी पाव भर, अलसी के तेल में भलीभांति हिलावें और उसमें कपड़ा भिगोकर जली हुई जगह पर लगादें।

मस्तिष्क प्रदाह

जो बेदर्द लोग यह नहीं जानते कि दया और धर्म के क्या अर्थ हैं वह पापी प्रायः गायों को बुरी तरह से मारा करते हैं।

गाय को बहुत मारने से उसको 'मस्तिष्क प्रदाह' रोग हो जाता है। इस रोग में गाय सुस्त हो जाती है और ऐसी दिखाई देती है जैसे कि ऊंघ रही हो। इसको बेहोशी हो जाती है। उसे प्यास बहुत लगती है।

इस रोग में गाय को घास चरने के लिए देनी चाहिए जो कि शीघ्र पचने वाली हो।

चिकित्सा—पहले फस्द खोलें। नश्तर द्वारा नाक व गले से खून निकालने के बाद जुलाब दे दें।

आधा सेर नमक, जल व चावल के मांड के साथ खाने को देवें।

अलसी का तेल एक सेर, जमालगोटा का तेल दस बूंद, दोनों को मिलाकर देवें। जुलाब हो चुकने के पश्चात मीठे विष का अर्क तीन बूंद थोड़ से जल के साथ मिलाकर दें।

गाय के थन कटना

कभी-कभी दूध पीते समय बच्चे के दांत लग जाने से स्तन कट जाता है।

स्तन सूज जाना

इस रोग में थनों से दूध की जगह जल या पतला-सा दूध निकलता है या छिछड़े से निकलने लगते हैं। थनों में पीप पड़ जाती है। गाय पैर चौड़े करके चलती है। चोट लगने, कीड़ों के काटने या थनों में दूध जमा रहने से यह रोग हो जाया करता है।

चिकित्सा—(१) अरण्डी के गर्म तेल का सेक दें।

(२) नीम के पत्तों का वफारा दें।

(३) घी, काली मिर्च, और नीबू का रस खाने को दें।

(४) दही और गुड़ खिलायें।

गर्भाशय का बाहर निकल आना

निर्बल ढोरों की योनि का अन्दर का भाग बाहर निकल आया करता है। ऐसा होने पर बड़ी सावधानी से हाथों को साफ करें और कारबोलिक आयल से चुपड़ कर गर्भाशय को फिर हाथ से अन्दर पहुंचा दें, फिर योनि से पट्टी बांध दें। ढोर बैठने न दें और खाने को को हल्का चारा दे।

कई बार ऐसा भी होता है कि कई पशुओं की योनि के अन्दर का भाग समय-समय पर बाहर निकल आया करता है। इसको 'सेल निकलना' भी कहते हैं। ऐसा होने पर शराब में कपूर मिलाकर पिलायें। फिटकरी के जल से योनि पर छींटे दें। बालू की पोटली का सेक करें। अरण्डी के तेल की पुट्ठों पर मालिश करें।

जेर का न गिरना

गच्चा होने के पश्चात जब देर तक जेर न गिरे तो जानवर को कष्ट होता है, उसके लिये कड़वा तेल दें।

चावल के मांड में सोंठ डालकर पिलायें।

यदि अधिक गर्म दवा देना आवश्यक हो तो गुड़ में आधा पाव सोंठ, आधा पाव अजवायन और एक छटांक पीपल डाल कर खिलायें।

गर्भपात

समय से पहले बच्चा हो जाने पर गाय को बहुत कष्ट होता है वेदना की तो कुछ पूछो ही न। जिस जगह पर बच्चा गिरा हो उस स्थान को फिनायल और चुने के पानी से धो डालना चाहिए। पशु की योनी को फिटकरी या नीम के पत्तियों के पानी से धो दें।

धोने के लिये गरम पानी देना चाहिए।

गरम जल में आधा पाव काली मिर्च डालकर पिलायें।

पेट में कीड़े पड़ना

कई बार ढोर के पेट में छोटे-छोटे कीड़े पड़ जाते हैं। इनके पड़ने से बहुत कष्ट होता है।

चिकित्सा-(१) प्याज दो तोला, सनई की पत्ती दो तोला खूब घोटकर जल मिलाकर दिन में दो बार पिलायें।

(२) हींग सवा तोला, गन्धक पीसी हुई एक छटाँक आधा सेर जल में मिलाकर दिन में दो बार पिलायें।

(३) अनार की जड़ का छिलका आठ रत्ती, पानी में पीस कर पिलायें।

(४) आधा सेर खिसारी की दाल, रात को जल में भिगो दें। प्रात: काल वह जल पिला दें और थोड़ी देर के वाद वह दाल भी खिला दें तो सब कीड़े निकल जायेंगे।

वायु नली के कीड़े

छोटे-छोटे अण्डे पेट में जाकर जमा हो जाते हैं, वहाँ पर फिर उसमें से कीड़े उत्पन्न होते है जो कि बहुत कष्ट देते हैं।

गाय को सूखी खांसी उठती है। ऐसा जान पड़ता है जैसे कि गले में कोई चोज अटकी हुई है। गऊ हर समय गले को खुजाती रहती है और उसकी देह भी खुश्क हो जाती है।

● पहला नुस्खा ●

तारपीन का तेल एक छटांक, अलसी का तेल तीन छटांक, पानी आधा पाव। इन तीनों चोजों को आधा सेर चावलों के मांड के साथ गऊ को दिन में दो बार दें।

● दूसरा नुस्खा ●

अलसी का तेल आधा पाव, तारपीन का तेल ढाई तोला, जीरा ढाई तोला। तीनों औषधियों को दिन में दो बार दें।

● तीसरा नुस्खा ●

प्रात: काल तीन छटांक चूने का पानी और सायं काल आधी छटांक नमक में दें।

● चौथा नुस्खा ●

नाक में गन्धक का धुआं दें। लोहे को लाल करके गले में दाग दें।

घाव के कीड़े

घाव को साफ रखने से, उसको नित्य मैला रखने से उसमें कीड़े पड़ जाया करते हैं। जो कि बाद में बहुत कष्ट देते हैं।

घाव पर मक्खियां उस पर विष्टा कर दिया करती हैं। उन घावों को भली-भांति साफ न दिया जावे तो उनमें भी कीड़े पड़ जाया करते हैं।

घावों को यदि हुक्के के पानी से साफ करते रहें तो उनमें कीड़े नहीं पड़ते।

● पहला नुस्खा ●

शरीफा या सीताफल के पत्ते हुक्के के पानी में पीसकर घाव में भरने से भी कीड़े मर जाते हैं।

● दूसरा नुस्खा ●

गुलाबांस की पत्तियों को सरसों के तेल में पीसकर घाव में भरने से कीड़े मर जाते हैं।

● तीसरा नुस्खा ●

अरने कण्डों के अंगारों को कड़वे तेल में पीसकर घाव में भर दें तो कीड़े मर जाते हैं।

● चौथा नुस्खा ●

तमाखू के पत्ते और फिटकरी पीसकर घाव में भरने से कीड़े मर जाते हैं।

● पांचवां नुस्खा ●

एक पाव तारपीन का तेल और एक तोला कपूर, आग पर गरम करके पिचकारी करने से घाव के कीड़े मर जाते हैं।

● छटा नुस्खा ●

पुराने घाव में वच पीसकर भर देने से कीड़े मर जाते हैं।

लोम कटी

पशु की लम्बी बीमारी के बाद, उसके रोमों में बहुत छोटे-छोटे कीड़े पड़ जाते हैं जिससे वह अपनी देह को खुजाता रहता है। यहां तक कि खुजाते-खुजाते बाल उड़ जाते हैं।

पहला नुस्खा

एक पाव सुरती दो सेर जल में डालकर चूल्हे पर चढायें, आधा सेर पानी रह जाये तो उतार लें। इस पानी को ढोर की देह पर लगाये। सूख जाने पर और लगायें फिर साबुन से धो डालें चार दिन तक ऐसा करें।

दूसरा नुस्खा

गन्धक आधा सेर, तारपीन का तेल आधा सेर, अलसी का तेल डेढ़ पाव। सबको चूल्हे पर चढ़ाकर गरम करें। नीचे उतार कर ठण्डा करके लगावें।

कलीली

यह कीट गाय के शरीर के नरम भागों में पँजे गाढ़कर चीपट जाता है और बहुत ही कष्ट देता है। इनको हाथों से चुन-चुनकर अलग कर दें।

बल की पत्ती और सेम की पत्ती समान भाग लेकर जल में पीस कर लगाएं। सूख जाने पर फिर लगायें। तीन बार ऐसा करें। टाट के टुकड़े से रगड़ कर जल में धो डालें।

कीड़ों को दूर करने की मरहम

पहला नुस्खा

भिलावा आधा पाव, निबोली की गिरी आधा पाव, कड़वा तेन आधा सेर, राल एक छटाँक, काली मिर्च दो तोला।

तैयार करने की विधि—भिलावा और निबोली की भिगी दोनों को कूट लें और कड़वे तेल में चुल्हे पर चढावें। जब जल जाये तो उतार कर खूब रगड़े। इस के रश्चात कच्ची राल और काली मिर्च दोनों को बारीक पीसकर मिलायें और घाव पर चुपड़ दें।

● दूसरा नुस्खा ●

सरसों का तेल एक सेर, नीम का तेल एक पाव, कनेर की पती एक पाव, प्याज एक-पाव, भिलावा एक छटांक, नीलथोथा दो तोला।

प्रथम तेलों को चूल्हे पर चढ़ाकर कनेर की पती और प्याज कुचल कर मिला दे। इसके बाद भिलावा और नीलाथोथा पीस कर डाल देंवे। जब जल जावे को रगड़कर कीड़ों वाली जगह पर लगाएँ, कीड़े मर जाएँगे।

पक्षाघात

वायु के किसी अङ्ग पर प्रकोप से और आहार-विहार में सम-विषम होने से यह रोग ढ़ोरों को हो जाया करता है। इसके कारण मवेशी का अङ्ग शक्तिहीन हो जाता है। और वह चलने फिरने से बिल्कुल रह जाता है।

चिकित्सा—'पक्षाघात' के होने पर सब से पहले जुलाब देना चाहिए। उसके पश्चात् निम्नलिखित औषधियों को प्रयोग में लाएँ।

● पहला नुस्खा ●

कुचले का अर्क २० बूंद थोड़े से जल में मिलाकर दिन में दो बार पिलाएं।

नोट—कुचले का अर्क आपको अंग्रेजी दवा बेचने वालों के यहाँ मिल सकता है।

● दूसरा नुस्खा ●

अदरक (पिसा हुआ) दो तोला, हींग छः माशा, देशी शराव एक छटांक। तीनों औषधियों को मिलाकर दो-दो घण्टा पश्चात् पिलाते रहें।

बैल और उनके रोग

को

चिकित्सा

पीठ की सूजन

बहुत बोझ लादने से बैल या भैंसे की पीठ सूज जाती है। इसका ईलाज यह है कि जल में कपड़ा भिगोकर उसकी गद्दी बांध दें और जब तक सूजन दूर न हो तब तक उस पर जल टपकाते रहें यदि सूजन न मिटे तो निम्नलिखित औषधियां काम में लावें।

● पहला नुस्खा ●

सोया के बीज एक छटांक, तम्बाकू के पत्तों की भस्म दो तोला, गौरैया की विष्टा एक तोला। तीनों औषधियों को पीस कर जल में सानकर गरम करके लेप करें।

● दूसरा नुस्खा ●

गऊ के दूध में थोड़ा-सा नमक डालकर पक्का लें और एक कम्बल का टुकड़ा भिगोकर प्रातः काल तीन दिन तक बाँधे तो सूजन बिल्कुल दूर हो जावेगी।

झरिला

जिस तरह मनुष्य को प्रमेह हो जाता है उसी तरह बैल को झरीला हो जाता है। झरीला में वीर्य के प्रतिदिन झड़ने से बैल शक्तिहीन होता चला जाता है। जिस प्रकार मनुष्य के प्रमेह के लिए सैकड़ों औषधियां हैं उसी प्रकार बैलों के "झरीला" रोग के लिए भी अनेक नुस्खे हैं। देखिये—

● पहला नुस्खा ●

झड़बेरी की छाल दो तोला, बबूल की छाल दो तोला, केले की जड़ एक तोला, छुहारा एक छटांक, गाय का खालिस दूध एक सेर। सब चीजों को दूध में पकाकर बैल को खिलावें।

● दूसरा नुस्खा ●

बेर की पत्तीं दो तोला, अनार की पत्ती दो तोला, बबूल की पत्ती दो तोला, बबूल की सेंगरी दो तोला, सब औषधियों को महीन पीसकर बैल को खिलावें।

● तीसरा नुस्खा ●

सफेद खैर दो तोला, कतीरा दो तोला, आंवला दो तोला। तीनों औषधियों को शाम को भिगो दें और प्रातःकाल बैल को खिलायें। ग्यारह दिन तक खिलाने के बाद "झरोला" रोग निश्चय ही मिट जायेगा।

● चौथा नुस्खा ●

मूली का बीज एक तोला, सौंफ एक तोला, सफेद जीरा एक तोला, जौ का आटा आवश्यकतानुसार।

पहले औषधियों को कूटकर और पीसकर जौ के आटे को मांडकर गोला बनाकर उसमें रखकर एक सप्ताह तक बैल को खिलायें।

पांचवां नुस्खा

बबूल की सेंगरी जिनमें बीज न पके हों आधा सेर लें और आधा सेर बेसर लें दोनों को मिलाकर बैल को खिलायें।

छठा नुस्खा

पीपल की लाख दो तोला, कतीरा दो तोला, खैर दो तोला, सफेद जीरा पांच तोला, साठी चावल आधा सेर।

तैयार करने की विधि—गाय के दूध में साठी के चावल पकाये और उसमें पहली चारों दवायें डालकर बैल को खिलायें। भगवान की कृपा से इक्कीस दिन में "झरीला" जड़ से मिट जाता है।

तिला

"तिला" रोग गाय, भैंस ओर बैल को हुआ करता है। इस रोग में पशु का श्वांस अधिक चलता है, देह दुबली हो जाती है। शरीर का रङ्ग बदल जाता है। भूख बन्द हो जाती है।

पहला नुस्खा

नीम के वृक्ष में से बहने वाला पानी लेकर आधा सेर के करीब नाल द्वारा बैल को पिलायें।

दूसरा नुस्खा

काले तिल एक पाव, सोंठ एक पाव, सफेद मूसली एक पाव, मिश्री एक पाव, गेहूं ढाई सेर।

तैयार करने की विधि— पहली चारों दवाओं को कूट-पीस कर घी में मिलायें। रात में गेहूं भिगो दें। प्रातः काल उन्हें

कुटवाकर उनमें ऊपर वाली कटी हुई औषधियां मिला दें। अब पन्द्रह गोलियां तैयार करें। एक गोली प्रातः काल और एक गोली सायं काल बैल को खिलायें। यह गोलियां "तिला" की रामबाण औषधि है।

बैल का पेट फूलना

कारण—शरद ऋतु में ज्यादा मेहनत करने से, वदहजमी से गर्मियों में बैल को अधिक दौड़ाने से, वायु के बन्द होने पर, दाना खाने और चारा चरने के बाद मेहनत करने से भी बैल का पेट फूल जाता है।

लक्षण—इस रोग में मवेशी की बाई तरफ अधिक फूली हुई और दाई कम, फूली हुई होती है। दबाने से पेट ढोल की तरह बोलता है। बैल बेचैन हो जाता है। नाक और मुँह से आग की तरह श्वांस लेता है। यदि फौरन ही इस रोग की चिकित्सा न की और ध्यान न दिया जाये तो बैल का दम रुक जाता है और वह समाप्त हो जाता है।

चिकित्सा—(१) वदहजमी से पेट फूलने पर बैल को कुटकी, लहसुन, काला जीरा तीनों औषधियों को पीसकर गोला सा बना कर बैल को खिलावें।

(२) यदि गरमी का मौसम हो और बहुत दौड़ने से बैल का पेट फूल जाय तो हरी मेंहदी के पत्ते जल में औटाकर बैल के मुंह में डालें।

(३) सफेद जीरा, सौंफ, धनियां, जौ के आटे में मिलाकर दें तो फूला पेट ठीक हो जाये।

(४) यदि वायु के बन्द होने से पेट फूल जाये तो हुक्के के पानी से सानी भिगोवें और थोड़ी देर के पश्चात् हाथ से मल कर पानी छानकर नाल में भरकर ढोर को पिलावें।

(५) लाल चींटियां के बिल की मिट्टी आधा पाव लेकर जल में घोलकर वह जल बैल को पिला दें। इससे वातु खुलकर पेट ठीक हो जाएगा।

(३) आक के फूल दो तोला पानी में पीसकर एक पाव कड़वे तेल में डालकर नाल से बैल को पीला दें, एक घण्टे के वाद बैल का पेट ठीक हो जाएगा।

(७) दाना खाकर काम लेने पर यदि बंल का पेट फूल जाय तो एक पाव सरसों का तेल लेकर एक छटांक खारो नमक मिलाकर नाल में भरकर बैल को पिलावें।

एक अचूक औषधि

धाय के फूल आधा पाव, गांजा आधा पाव, सफेद कत्था आधा पाव, गुलकन्द एक सेर।

सब दवाओं को मिलायें और प्रतिदिन प्रातःकाल आधा पाव, यह औषधि बैल को खिलाएं। लाभ होगा।

अञ्जीर की जड़ की छाल, हरि मेंहदी के पत्ते, काली मिर्च। तीनों चीज़ें बराबर-बराबर लेकर सिरके में पीसकर पेट पर लेप करें।

अकस्मात पेट के फूल जाने पर एक छटांक सरसों लेकर दोनों कानों में भर दें। ऊपर से हुक्के का पाना डाल दें आराम हो जाएगा।

करसा

यह रोग बैल और भेस को हुआ करता है। इसमें बल का पेट बहुत फूल जाता है। वह बार-बार थोड़ा-थोड़ा मूत्र करता है। गोबर सूखा और सख्त करता है।

● पहला नुस्खा ●

हल्दी तीन छटांक, सांभक नमक तीन छटांक, काली मिर्च तीन छटांक, सरसों का तेल एक पाव।

पहली तानों दवाओं को महीन पीसकर तेल में मिलाकर नाल में भरकर सात दिन तक बैल को पिलावें।

● दूसरा नुस्खा ●

हल्दी एक छटांक, सौंठ एक छटाँक, गाय का दूध दो सेर।

हल्दी और सौंठ को पोसकर दूध में पकाकर बैल को पिलाएं और भगवान की लीला देखें।

● तीसरा नुस्खा ●

सूखा अमचूर जल में पकावें और छिपटियां निकाल कर आधा सेर घी डाल कर नाल से पिलावें।

नोट—अमचूर हमेशा मिट्टी के बर्तन में पकाना चाहिए।

घेघा यानी हाऊ रोग

यह बहुत खराब बीमारी है और बड़ी कठिनता से दूर होती है। तराई में रहने वाले पशुओं को यह रोग हुआ करता है।

कारण—नदी के किनारे की मटोली घास चरने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण—हलक के नीचे एक थैली लटक जाती है। पशु को दस्त बहुत आते हैं और बहुत निर्बल हो जाता है।

● पहला नुस्खा ●

घोड़ावच, चीता, अजवायन, हरड़ एक-एक छटांक लेकर कड़वे तेल में सानकर खिलायें।

● दूसरा नुस्खा ●

कुटकी, काला जीरा, सांभर, नमक, तीनों औषधियाँ टका-टका भर लेकर पीस लें और आठ दिन तक खिलायें।

● तीसरा नुस्खा ●

सज्जो, जवाखार, सेंधा नमक, आंबा हल्दी, पीपल, सरसों सब समान भाग लेकर गरम करें।

● चौथा नुस्खा ●

मूल के बीज और कलमी शोरा दोनों समान भाग लेकर जल में पीसकर लेप करें।

● पांचवाँ नुस्खा ●

कुटकी आधा पाव, काली मिर्च आधा पाव, हींग दस माशा, अफीम दस माशा, बच्छनाग दस माशा, कड़वी तुम्बी आधा पाव, शराब आधा पाव।

सब दवाओं को कूट-पीस छानकर शराब में डालकर गोलियां छः छः माशा की बनाकर, प्रतिदिन एक गोली दें।

छटा नुस्खा

अजवायन सिरका में पीसकर प्रात:काल और सांयकाल एक-एक छटांक को मात्रा में दोनों को पीसकर खिलायें।

सातवां नुस्खा

काले धतूरे की पत्ती, जड़ समेत मकोय, काला जीरा, मैदा ककड़ी इन सब को समान भाग लेकर जल के साथ घोलकर गरम करके हाऊ पर लेप करें।

आठवां नुस्खा 'वफारा'

नीम, बकायन और संभालू, तीनों पत्ते समान भाग लेकर चूल्हे पर चढ़ाकर पानी में जोश दें। और इनका वफारा दें ठण्डी होने पर पत्तियां निकाल कर बांध दें।

श्वांस रोग

कारण—कमजोर बैल से अधिक दौड़ने का काम लेने से खांसी के देर तक रहने से, हाजमे के देर तक खराब रहने से श्वांस रोग हो जाता है।

लक्षण—बैल जीभ निकाल कर खड़ा रहता है। उसका श्वाँस उखड़ जाता है।

पहला नुस्खा

सफेद जीरा एक पाव, मेंहदी के सूखे पत्ते एक पाव, खर एक छटांक, कतीरा एक छटांक, रसौत तीन तोला।

सबका बारोक पीसकर तीन भाग कर लें और सांयकाल को जल में भिगोकर बैल को पिलावें।

● दूसरा नुस्खा ●

किशकिश १० तो०, मुनक्का २० तो०, पीपल १० तो०, काली मिर्च १० तो०, सौंफ १० तो०, अदरक १० तो०, जीरा सफेद १० तो०, बिहीदाना १० तोला, मुहलटी १० तो०, बबूल का गोंद आवश्यकतानुसार।

सब दवाओं को कूट-पीस छानकर बबूल के गोंद के जल में सानकर एक-एक गोली दें, रोग मिट जायगा।

● तीसरा नुस्खा ●

मिश्री एक पाव, सोंफ एक पाव, काली मिर्च ७ तो०, कंजा की मिंगी १ तो०, जौं का आटा आवश्यकतानुसार।

चारों दवाओं को कूट-पीस छानकर दो भाग कर लें। जौ के आटे का पिंडा बनाकर उस पिंडे में एक भाग डालकर, एक पिंड प्रातः काल और दूसरा साँयकाल बैल को दें।

● चौथा नुस्खा ●

सोंफ एक तो०, कुलंजन एक तो०, काली मिर्च एक तो०, खांड आधा पाव, गाय का दूध आधा सेर।

सब चीजों को मिलाकर नाल में भर प्रातः काल बैल को पिला दें।

● पांचवां नुस्खा ●

प्याज भलीभांति कुचलकर और कतीरा महीन करके उसमें मिलायें। बैल को पहले जल पिलायें और फिर यह दवा खलायें।

● छटा नुस्खा ●

नीम की पत्ती का रस, कड़वा तेल और गाय की दही तीनों वस्तुएँ समान भाग लेकर मिलाएँ और सात दिन तक बैल को पिलाएँ।

● सातवां नुस्खा ●

एक पाव प्याज के टुकड़े करके उन पर नमक छिड़क दें। पहले जल पिलावें और ऊपर से वह प्याज खिलावें।

● आठवां नुस्खा ●

बैल को एक मास तक प्रतिदिन आधा पाव शराब पिलावें।

● नौवां नुस्खा ●

सोंठ, अतीस, सोंफ, मिश्री, कालीं मिर्च सब समान भाग लेकर छान पोसकर रख लें और प्रतिदिन रात को आधा पाव लेकर, जौ के आटे में मिलाकर बैल को खिलावें।

● दसवां नुस्खा ●

दो तोला शोरा जों के आटे में मिलाकर बैल को खिलायें

जहरबाद

इस रोग में बैल की गर्दन सूज जाती है। वह खान-पान का त्याग कर देता है। इस रोग में बैल को बड़ा कष्ट हैोता है।

● पहला नुस्खा ●

कुटकी एक छटांक, पीपल एक छटाँक, बायविड़ङ्ग एक छटांक, चीता एक छटांक, चिरायता एक छटाँक, काकड़ीसिंगी एक छटांक, सोंठ एक छटांक, काला मिर्च एक छटांक, काला जीरा एक छटांक, सफेद जीरा एक छटांक, लहसून एक पाव, बंडार एक पाव।

सब दवाओं को कूट-पीस छानकर, लहसून और बंडार को बारिक पीसें फिर सबको मिलायें और गेहूं के आटे में सानकर एक सप्ताह तक बैल को खिलायें।

● दूसरा नुस्खा ●

एक तो० कुटकी, एक तो० बंडार, टका भर काला जीरा जौ के आटे में मिलाकर दिन में कई बार खिलायें।

● जहरबाद के लिए मसाला ●

चीता एक पाव, चिरायता एक पाव, काकड़ासिंगी एक पाव जवाखार एक पाव, कुटकी एक पाव, भांग एक पाव, वड़ी पीपल एक पाव, पीपला मूल एक पाव, ढाक के वीज एक पाव, गूगल एक पाव, संभालू के पते(शुष्क) एक पाव, मरोड़फली एक पाव, सज्जी आधा सेर, साँभर आधा सेर, सेंधा नमक आधा सेर, काला जीरा आधा सेर, सफेद जीरा आधा सेर, घुड़बच आधा सेर, हींग आधा सेर, अजवायन देशी आधा सेर, अजवायन खुरसानी आधा सेर, राई आधा सेर, अदरक आधा सेर, इन्द्रायन का फल आधा सेर, नीम की पत्तियां आधा सेर, काली मिर्च आधा सेर, छोटी हरड़ आधा सेर, वड़ी हरड़ दो सेर, बंडर दो सेर, कचरी दो सेर, सोंठ दो सेर, बहेड़ा दो सेर, सहजने को छाल दो सेर, पोदीना दो सेर, प्याज दो सेर, कुचला छिला हुआ तीन छटांक‘ सुहागा फूला हुआ आधा पाव, फिटकरी फूली हुई आधा पाव।

सब औषधियों को कूट-छान कर आधा-आधा पाव के गोले तैयार करलें। एक गोला प्रतिदिन खिलाने से चाहे किसी किस्म का जहरबाद हो मिट जाता है।

जहरवाद के लिये लेप

मकोय, काला जीरा और बंडार तीनों को पीसकर गुनगुना करके लेप करदें। ऊपर महुआ के पत्ते बांध दें।

चालीसा मसाला

हरड़ आधा सेर, बहेड़ा आधा सेर, आंवला आधा सेर, सोंठ आधा सेर, पीपल एक पाव, मिच भांडगी एक पाव, अमल-तास एक पाव, अजमोद एक पाव, भांग एक पाव, तवाशीर एक पाव, मूढ़ एक पाव, सांभर नमक एक पाव, सोंचर नमक एक पाव, खारी नमक एक पाव, जवाखार एक पाव, घोड़ावच एक पाव, गूगल एक पाव, सहजने की छाल चार सेर, सौंफ एक सेर, काला जीरा आधा पाव, सफेद जीरा आधा पाव, हल्दी आधा पाव, ढाक के बीज आधा पाव, आंबा हल्दी आधा पाव, बेलगिरी आधा पाव, काकड़ासिंगी आधा पाव, फिटकरी (फूला की हुई) आधा पाव, सुहागा (फूला किया हुआ) आधा पाव, असगन्ध आधा पाव, सोया के बीज आधा पाव, हुलहुल आधा पाव, पठानी लोध आधा पाव, मरोड़फली आधा पाव, कुटकी आधा पाव।

सबको कूट-पीस छान लें। मसाला तैयार है। प्रतिदिन आधा पाव बैल को देने से जहरवादादिक रोग उसके समीप नहीं फटक सकते हैं। इस 'चालीसा मसाला' को आप बहुत बड़ी प्रोवेन्शन हो समझिये।

महुआ बीसा

महुआ बीसो में बैल के कानों तक भौंहें सूज जाती है। बैल बहुत बेचैन हो जाता है और किसी तरह से भी चैन नहीं पड़ता।

चिकित्सा—एक सेर महुआ लेकर पीसकर, बारिक करो फिर उसमें एक पाव गुड़ मिलाकर छाछ में मिलायें और बैल को पिलायें। चार पांच दिन तक ऐसा करने से महुआ वीसी रोग मिट जाता है।

फीलपांव रोग

प्रसिद्ध रोग है इस रोग में बैल का पांव सूजकर हाथी के ांव जैसा हो जाता है पशु को इस रोग में चलने फिरने में वहुत कठिनाई होती है।

चिकित्सा —अजवायन, सेंधा नमक, बायबिडङ्ग, सोंठ और ीपल दो-दो तोला, लेकर दूने गुड़ में सानकर दो महीने तक बैल को खिलायें।

उपरोक्त औषधि से यदि आराम न हो तो नश्तर लगवा कर ानी निकलवाने के बाद घाव को धोयें और निम्नलिखित महरम गायें।

तिल के तेल में गन्धक पीसकर लगायें।

एक छटांक खजूरों को दो दिन तक पानी में भिगोयें इसके ाद मलकर, उसमें दो तोले सज्जी और जवाखार डालकर इस ानी को दो मास तक यदि फीलपांव के रोग वाले पशु के पांव र लगाया जावे तो रोग मिट जाता है

मनिया फूटो या रोबो

इस रोग में बैल की त्वचा के नीचे बहुत बारिक कीड़े पड़ र रींगते हैं और त्वचा में छेद कर डालते हैं। इन छेदों में से अक्सर खून बहुत आता है। इस रोग के होने पर बैल खाना-पीना छोड़कर निर्बल होता चला जाता है।

पहला नुस्खा

एक तोला काले सांप की केंचुली, गुड़ में मिलाकर खिला देने से सब कीड़े निकल जाते हैं।

दूसरा नुस्खा

भुजियल चिड़िया को पैरो सहित आटे में बन्द करके गोला वनाकर बैल के मुख में भर देने से मनिया फूटी रोग मिट जाता है।

तीसरा नुस्खा

एक महीना तक, दिन में तीन चार बार जितना प्याज बैल खा सके उसे खिलायें। ऐसा करने से सब कोड़े मर जायेंगे। और बैल तन्दुरुस्त हो जायेगा।

बिहासा

इस बिमारी में बैल के पेट से पसीना निकलता है और निर्वल होता चला जाता है।

गाय, बेल, भैंस भैसा सभी ढोरों को यह रोग होता है।

चिकित्सा—विहसा नामक वृक्ष के पत्ते आधा पाव पीसकर नाल में भरकर एक सप्ताह तक बैल को खिलायें।

हलक की सूजन

हलक में सूजन होने पर बैल खान-पान त्याग देता है और दिन पर दिन कमजोर होता चला जाता हैं।

चिकित्सा—इन्द्रायण की जड़ दो तोला, कुटकी दो तोला, काला जीरा दो तोला, सफेद जीरा दो तोला, मीठा इन्द्र जौ दो

तोला, हल्दी दो तोला, रूमी मस्तंगी टका भर, वंशलोचन टका भर, सोठ आधा पाव, काली मिर्च आधा पाव।

सब दवाओं को कूट–पीस छानकर, थोड़ी–थोड़ी औषधि बैल को खिलाते रहें।

मेझुकी का अलाई

यह रोग बैल की जीभ के ऊपर हुआ करता है। इसमें बैल दिन पर दिन कमजोर होता चला जाता है। उसके खान–पान में बहुत अधिक कष्ट होता है। अतः वह अच्छी तरह से खा–पी नहीं सकता।

चिकित्सा—बगुली के पंख उखाड़कर उसका मांस बैल को खिलायें। मेझुकी रोग मिट जाएगा।

वरजतिया नामक सांप को सुखा लें और उसमें से एक तोला वजन के बराबर लेकर पीसकर एक छटांक हल्दी में मिलाकर, पांच दिन तक बैल को खिलायें। वह तन्दुरुस्त हो जायेगा।

पेशाब में खून आना

इस बीमारी में पहले तो बैल सुस्त हो जाता है। थोड़ी देर के बाद उसके पेशाब में खून आता है।

चिकित्सा—(१) मठा और खांड मिलाकर पिलायें। पेशाब में खून आना बन्द हो जायेगा।

(२) कन्धी के पत्ते एक पाव लेकर बकरी के सेर भर दूध में मिलाकर दोनों समय पिलायें, रोग मिट जायेगा।

(३) बबूल की पत्तियां एक पाव, दो तोला हल्दी पीसकर जल में घोलकर नाल में डालकर पिलायें। मूत्र में रूधिर आना बन्द हो जायेगा।

जुलाब की दवा

यदि उपरोक्त औषधियां में से किसी एक का प्रयोग करने से किसो किस्म का आराम न हो तो बैल को निम्नलिखित जुलाब दें।

नुस्खा—मेथी एक टकाभर, अजवायन एक टकाभर, हल्दी एक टकाभर, कसौंदो टकाभर, बकायन टकाभर, कंघी टकाभर, कंजा के पत्ते टकाभर, गांडर को जड़ टकाभर, प्याज टकाभर, लहसुन टकाभर, जल दो सेर।

सब दवाओं का जल में पीसकर नाल में भरकर बैल को पिलायें।

गर्मी से लाल मूत्र आना

इस रोग में बैल की भूख घट जाती है, शरीर कमजोर हो जाता है, मूत्र सुर्ख रंग का आता है।

चिकित्सा—एक पाव सफेद तिल रात को पानी में भिगोकर प्रातः काल घोलकर बैल को पिलायें।

आम की सूखी फांक लेकर रात को पानी में भिगो दें। दूसरे दिन प्रातः काल पानी मलकर काठ को फेंक दें और पानी बैल को पिला दें। इसी तरह एक सप्ताह तक पिलाने से बैल का लाल मूत्र का रोग मिट जाता है।

फुड़ियों की चिकित्सा

(१) सोया के बीज, हल्दी, धनियां बाबूना के पत्ते समान भाग लेकर पानी में पीसकर गरम करके बांध दें।

(२) नीम की छाल, अजवायन, अरूसे के पत्ते समान भाग लेकर गरम करके बांधें।

(३) गेरू, जामून की छाल, नीम के पत्ते, मकोय के पत्ते पानी में मिलाकर गुनगुना कर के लेप कर दें ।

(४) सेमर की छाल, नीम के पत्ते, मकोय के पत्ते पानी में मिलाकर गुनगुना करके लेप कर दें ।

(५) सेमर की छाल और कचनार जल में पकाकर बांधें ।

फुड़िया पकानें कें लिए औषधियाँ

(१) गेहूँ का दलिया और दही पकाकर बांधने से भी फोड़ा पक कर फूट जाता है ।

(२) कबूतर की बींट, मुर्गी का अण्ड़ा, देशी राई (बारीक पिसी हुई) इन सब औषधियों को जल में पिसवाये । जब भली-भांति पिस जायें तो जल में इनको पकाएं और फुड़ियों पर बांध दें ।

(३) गगल और शहद मिलाकर पीस लें और फिर गर्म करके बांध दें । फोड़ा पककर फूट जाएगा ।

(४(मुलहटी, संभालू के पत्ते, मैंनफल सब चीजों को पानी के साथ घोटें और गरम करके फोड़े पर बांधे । इससे पककर फूट जाएगा ।

यदि इन सब औषधियों के प्रयोग में लाने के पश्चात् भी फोड़ा न फूटे तो उसको नश्तर से चिरवा ड़ालें ।

नश्तर सें चीरने के पश्चात् घाव में लगाने की श्रौषधियां

नीम की पत्तियाँ और थोड़ा-सा नमक पीसकर टिकिया बना लें और इस टिकिया को चिरे हुए स्थान पर रखने से घाव

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साफ हो जायेगा। टिकिया पर थोड़ा सा शहद चुपड़ कर घाव पर रखना चाहिए। इसके बाद मरहम लगानी चाहिए।

मरहम का पहला नुस्खा

आरने कण्डों की भस्म और सीम का चूना, दोनों दो–दो पैसाभर लें और अलसी का तेल एक पाव भर पकाकर मरहम बना लें और इसे घाव पर नित्यप्रति लगाते रहें।

मरहम का दूसरा नुस्खा

किरकेंटा के पांव और पूंछ काटकर फेंक दें और आंतें मोठे तेल यानी तिल के तेल में मिला कर पका लें और ध्यान रखें कि तेल जलने न पावे। इस तेल को जखम पर चुपड़ते रहने से जखम बहुत जल्दी भरता है।

खनाजीर यानी कंठमाला के लिए मरहम

कड़वा तेल तीन पाव लें और उसमें मनुष्य के बाल एक छटांक भर डाकर भली भांति पकावे, फिर उसमें आधा पाव देशी साबून डालकर मरहम बनायें।

यह मरहम पशुओं की कण्ठमाला के लिये बहुत लाभदायक है। यही नहीं, खनाजीर का रोगी मनुष्य भी इसको अपने घाव पर लगाकर तन्दुरुस्ती को प्राप्त हो सकता है।

नासूर

मरहम का पहला नुस्खा

जर्द मोम यानी पीला मोम एक टका भर, आधा पाव गाय का घी। दोनों चीजों को आग पर रखकर भलीभांति पिघला कर उनमें एक–एक तोला सिंदूर, राल, नीलाथोथा, मुर्दासन

कूट–पीस और छानकर पकाएं और कपड़े की बत्ती बनाकर इस तेल में भिगोकर जख्म के अन्दर भर दिया करें।

● नासूर के लिये दूसरा नुस्खा ●

एक पाव कड़वे तेल में तीन तोला मोम डालकर आग पर पकाएं, फिर मुर्दासन, हल्दी गुलानार (शुष्क), सेरमा, फिटकरी (फूला), बारहसिंगा और घोड़े के नाखून की भस्म; यह सब औषधियां दो–दो तोला लेकर कूट पीस और छानकर पकाएं और मरहम बनाएं।

इस मरहम को घाव के ऊपर चुपड़ते रहें और कपड़े की बत्ती बनाकर इस तेल को घाव के अन्दर दे दिया करें।

कुम्हेंड़ी

कुम्हेड़ी बैल के सींगों से हो जाती है। प्रथम आँखों से पानी बहता है, इसके पश्चात् सींगों की जड़ गल जाती है और खाल् सड़ जाती है। इसके पश्चात सींग झड़ जाते है।

इस रोग का इलाज नहीं है।

चोखरा (जरा)

यह एक कीड़ा होता है जिसके मुख में सफेद झाग निक–लता है।

यह कीड़ा सर्दियों के मौसम में घास में रहता है। इस घास को जब बैल खाता है तो उसको 'चोखरा" नामक रोग हो जाता है। इस बीमारी के हो जाने के बाद पशु के शरीर का रङ्ग स्याह पड़ जाता है।

चिकित्सा—(१) नीम की हरि पत्तियों का रस आधा सेर

निकाल लें और गाय का दही आधा सेर मिलाकर नाल में भर कर बैल को पिला दें, चोखर का रोग दूर हो जाएगा।

(२) कुम्हड़ा पीसकर और उसको निचोड़ कर उसका पानी निकालकर बैल को पिलायें।

(३) घी में काली मिर्च डाल का पिलायें।

(४) एक सेर करेले का मलीदा करके बैल को खिलायें।

गरमी से होनें वाले रोग कुछ रोग

गरमी से अण्डकोषों पर सूजन

गरमी में बैल के अण्डकोषों पर सूजन आने पर दाचीनी और गुड़ पीसकर जल में मिलाकर लेप करें।

काले तिल पानी में पीसकर आग पर पकाकर. लेप करने से सूजन जाती रहती है।

सूजन का बफारा

गेंदा के पत्तों को जल में उबाल कर उसका बफारा दें और उसी पानी से धो डालें।

जोगिया अरण्ड के पत्ते पानी में उबाल कर उसका बफारा दें और पानी से धो डालें।

एक तोला काली मिर्च पीसकर लेप करके गेंदे के पत्ते बाँध दें।

सूजन में खानें की औषधियाँ

जवाखार, गेरू, पीपल, सोंठ एक-एक तोला लेकर भली-भाँति खरल करें। एक तोला दवा आधा पाव शराब के साथ प्रतिदिन खिलायें।

गर्मी के दस्तों की चिकित्सा

लक्षण—गरमी के दस्तों से बैल का श्वास अधिक चलता है। प्यास भी अधिक लगती है तथा शरीर अधिक गरम रहता है।

(१) अलसी आधा पाव जौ के आटे में सानकर दें।

(२) आधा पाव फालसा की छाल कूट-पीसकर जौ के आटे में मिलाकर बैल को दें।

(३) रात को एक छटांक कतीरा पानी में भिगो दें और प्रात काल खिला दें। यदि इस तरह न खाये तो जौ के आटे में मिला कर खिलावें।

इन तीनों औषधियों के दो भाग कर लें और एक-एक मात्रा जौ के आटे में मिलाकर बैल को दोनों समय दें।

सर्दी के दस्तों की चिकित्सा

जब बैल को सर्दी के दस्त लग जाते हैं तो बैल का पेट गुड़गुड़ की आवाज करता है। प्यास बन्द हो जाती है। शरीर ठण्डा रहता है। और गोबर से दुर्गन्ध आती है।

इन दस्तों के लिए मैं चूर्ण का सर्वोतम नुस्खा निम्न में लिख रहा हूं।

नुस्खा—सांभक नमक, सधा नमक, जवाखार, सज्जी, हरड़, बहेड़ा, आंवला, हल्दी, छोटी हल्दी, सफेद जीरा, काला जीरा, भांग, देवदारु, काली मिर्च, पीपलामूल, मूली के बीज, सोया के बीज, वायबिड़ङ्ग, शतावर, नागौड़ी, असगन्ध, अजवायन, अजमोद, सहजने की छाल, प्रत्येक औषधि एक-एक तोला लेकर

कूट पीसकर चूर्ण बनायें और प्रतिदिन यह चूर्ण दो तोला की मात्रा में बैल को खिलायें। भगवान की कृपा से बैल के सर्दी व बादी के पतले दस्तों का रोग मिट जाता है।

सरदी से सूजन की चिकित्सा

काला जीरा, अजवायन और गेरू जल में पीसकर एक सप्ताह तक प्रतिदिन लेप करें। बैल की सूजन वह जोकि सरदो के कारण हो, मिट जाती है।

बादी से बैल के पांव की गांठें सूजने की चिकित्सा

बादी से बैल के पांव की गांठें सूज जाती हैं। उसमें निम्न लिखित लेप करें और मसाला दें।

(वादी से बैल के पैर की गांठें सूज जाती हैं)

● लेप का नुस्खा ●

जोगिया अरण्ड की जड़ की छाल, धतूरे के पत्ते, संभालू के पत्ते और भांग समान भाग पीस, गुनगुना करके लेप करें।

● मसाले का नुस्खा ●

वायविडंग, भाँग, अजवायन, सहजने की छाल, निर्गुण्डी, ढाक के बीज, सेंधा नमक।

सब औषधियों को बारीक पीसकर चूर्ण बनालें। दो तोला चूर्ण घी में मिलाकर एक मास तक पशु को खिलायें तो रोग दूर हो जाता है।

✱ सर्दी व गर्मी से बैल के शरीर में गाँठ निकलना ✱

सर्दी या गर्मी से बैल के शरीर में किसी जगह सख्त गांठ निकल आवे तो सोंठ पीसकर सिरके में मिलाकर गरम करके उस पर लेप करें।

गज चर्म

बड़ा ही बुरा रोग है। बैल के सारे शरीर का चमड़ा हाथी के चमड़े की नाईं सख्त हो जाता है। उसको पसीना आना बन्द हो जाता है।

लेप का पहला नुस्खा

कैथ, नीम और बकायन को जड़ों की छाल, सांठ की जड़, पंवाड़ के बीज, हल्दी, दारुहल्दी, पद्‌यख, कूठ, जटामांसी, गायविड़ग, सिंदूर और चन्दन।

इन सब औषधियों को समान भाग लेकर पानी में घोलें और छः गुना सरसों का तेल चूल्हे पर चढ़ाकर दवाओं वाला पानी उसमें डाल दें। जब सारा पानी जलकर केवल तेल बाकी रह जाय तो पत्थर की सिल पर डालकर रगड़ डाले और बाद रगड़ने के शीशी में डाल लेवें।

यह तेल बैल के शरीर पर मलें तो गजचर्म रोग निश्चय ही दूर हो जायगा।

दूसरा नुस्खा

काली मिर्च, मैनसिल, हल्दी, दारूहल्दी, सफेद कनेर की छाल, आक की जड़ की छाल, तबकिया हरताल, कूठ, इन्द्रायन की जड़, लाल चन्दन।

इन सब औषधियों को समान भाग लेकर पीस लें और अनब्यायी गाय के मूत्र में सान लें। औषधि से चोथाई गाय के गोबर का रस निचोड़कर मिला दें और छः गुना कड़वे तेल में डालकर चूल्हे पर चढ़ा दे। जब भली भांति पक जावे तो शीशे के जार में डाल लें और बैल के शरीर पर चुपड़ते रहे, बैल रोग मुक्त हो जायगा।

तीसरा नुस्खा

सूखे हुए आँवलों को जल के साथ पीसकर बैल के शरीर पर चुपड़ने से भी 'गज चर्म' रोग मिट जाता है।

चौथा नुस्खा

आम की सूखी फांकों में थोड़ा-सा नमक डालकर, तांबे के पात्र में रखें और पानी डाल डालकर सिवाते रहें। एक रस हो जावे तब बैल के शरीर पर मलें।

हेलुआ

हेलुआ रोग में सूजन हलक से उतरकर पूंछ तक आ जाती है।

पहला नुस्खा

एक पत्थर को गरम करके उस पर बकरी का दूध डालकर उसके धूँएं से सेकें।

पहला नुस्खा

काला जीरा, गेरु, अजवायन, इन तीनों को जल के साथ घोटकर थोड़ा-सा सिरका मिलाकर लेप करो।

तीसरा नुस्खा

सोसन की जड़, अदरक, काली मिर्च, इन तीनों औषधियों को पीसकर प्रातः काल और सायंकाल खाने को दें।

चौथा नुस्खा

काला जीरा एक पाव, हल्दी एक पाव, काली मिर्च एक सेर पीसकर सबको मिलायें और प्रतिदिन एक छठांक की मात्रा में बैल को खिलायें। भगवान ने चाहा तो एक सप्ताह में वह तन्दुरुस्त हो जायगा।

पांचवाँ नुस्खा

सौंठ, पीपल, काली मिर्च, वायविडंग, चिरायता, सफेद जीरा, शतावर, गेरू, सोयाबीन, काला जीरा, कुटकी, काकड़ासिंगी, लहसुन। सब औषधियों को समान भाग लेकर बारिक पीस लें और चने के आटे में खिलावें।

पर

एक प्रकार का उड़ने वाला सर्प जब बैल के शरीर के उपर से होकर गुजर जाता है तो उसके सारे शरीर पर छाले पड़ जाते हैं और यदि समय पर चिकित्सा न की जावें तो खाल चटक जाती है।

चिकित्सा—गेहूं का भूसा एक कोने में डालकर सुलगा दें और धुआँ बैल के शरीर में लगायें।

चोट लग जाने पर औषधियां

हल्दी दो तोला, साबुन एक तोला, पानी आवश्यकतानुसार दोनों औषधियों को जल में डालकर चूल्हे पर चढ़ायें, गरम-गरम यह दवा सूजन पर लगायें।

दीवार की नौनियां मिट्टी जल मे औटाकर सूजन पर मलें।

इमली, संभालू और मकोय के पत्तों को जल में उबालकर पहले तो भाप देवें। फिर जल के कुछ ठण्डा हो जाने पर सूजन पर तरेड़ा देवें।

अरण्ड के बीज वड़ गोंद, अलसी और काले तिल पीसकर सूजन पर लगायें तो सूजन दूर हो जावे।

आंवा हल्दी, चन्दन रस, काले तिल समान भाग लेकर जल में पीस लें और आग पर गरम करके दोनों समय लेप करते रहें।

चोट की सूजन दूर करने के लिए पोटली

नुस्खा—प्याज की गांठ दो दाना, हल्दी दो तोला, चन्दन रस दो तोला, गेहूं का मैदा आधा पाव, घी आवश्यकतानुसार।

पहली चारों दवाओं को घी में सानकर दो पोटलियां तैयार करके और सुहाते-२ सेकें।

उपरोक्त औषधियों में यदि किसी एक से भी आराम मालूम न होवे तो सूजन वाली जगह के बाल मुंडवा कर जोकें लगायें।

सर्दी की सूजन मिटाने के लिये कुछ नुस्खे

(१) ईंट व पत्थर को गरम करके सेकें।

(२) अमर बेल, मकोय और संभालू के पत्ते इन तीनों को पीसकर प्रातःकाल गरम करके लेप करें।

(६) ग्वारपाठे का गूदा एक छटांक, मुसव्वर एक तोला महीन पीसकर गरम करके सात दिन तक लेप करें प्रभु कृपा से सूजन अवश्य मिट जायगी।

(४) गेरू और काला जीरा पिसवा कर जल में मिलाकर गरम करके लेप करने से सर्दी की सूजन जाती रहती है।

(५) गेरू और अजवायन को जल में पीसकर आग पर गरम करके लेप करें।

चोट के लिए मालिश का नुस्खा

मुर्गी के अण्ड १६ दाना, अफीम एक तोला, सूअर की चर्बी आधा सेर, कड़वा तेल एक पाव, आंवा हल्दी आधा पाव, गेरू एक छटांक। इन सबको पीसकर मिला लें और दोनों समय चोट वाले स्थान पर मालिश करके कण्डों से सेक दें।

बैल का पेशाब बन्द हो जाना

जब बैल का पेशाव बन्द हो जाता है तो वहुत बैचेन हो जाता है। पिछली लातों को पेट पर मारता है. कभी उठता है, कभी बैठता हैं। बार-बार पेशाव करने की कोशिश करता है।

चिकित्सा—आधा पाव शराव और आधा पाव गाय का खालिश घी मिलाकर पिलायें।

दो तोला कलमी शोरा महीन पीसकर एक सेर दूध में डाल कर नाल में भरकर पिलायें।

बालों की दो जूएं दोनों कानों में डाल दें।

बैल की गर्दन की नस चढ़ जाना

जिस प्रकार मनुष्य की गर्दन की नस चढ़ जाने से उसकी गर्दन अकड़ जाती है उसी तरह से बैल की गर्दन की नस व पुट्ठा चढ़ जाने से उसकी गर्दन अकड़ जाती है और वह इधर उधर नहीं हो सकता। उसका कष्ट इतना वढ़ जाता है कि बेचारा खड़ा रहता है और चारे के लिए मुँह तक नहीं खोलता।

चिकित्सा—गेरू और साबुन समान भाग लेकर सरसों के तेल में पकायें और पांच दिन तक इस तेल को मालिश करें। गर्दन ठीक हो जायेगी और उसकी अकड़न जाती रहेगी।

बैल क शरीर में जुएं पड़ना

बैल के शरीर में छोटी-छोटी जुएं पड़कर उसके लिए वहुत वड़े कष्ट का कारण बन जाती हैं वह जुएं उसके रोमों को बीनकर खा जाती है बैल दिन पर दिन कमजोर होता चला जाता है।

चिकित्सा—(१) सीताफल (शरीफा) के वीज जल में पीस कर लगायें।

(२) हल्दी और सरसों के तेल को मिलाकर पशु के शरीर पर चुपड़ते रहें।

(३) आरने कण्डों की राख जल में घोलकर बैल के शरीर पर लगायें।

कटक वायु

अधोवायु के वन्द होने से बैल का पेट बहुत फूल जाता है और बहुत बेचैन होकर धरती पर अपने पांव रगड़ता है।

इस रोग का यूनानी नाम 'कुलञ्ज है।

● पहला नुस्खा ●

गाय का खालिस घी और दूध गरम करके नाल द्वारा बैल के पेट में उतरे ।

● दुसरा नुस्खा ●

लहसून और काली मिर्च, एक पाव जल में पीसकर इस जल में चने का आटा सनवा कर गोला वनायें और बैल के पेट में उतार दें।

● तीसरा नुस्खा ●

एक छटांक खारी नमक पीसकर बारिक करके एक पाव गुड़ में मिलाकर जल में औटायें और बैल को पिलाये।

● चौथा नुस्खा ●

एक पाव अरण्ड का तेल एक सेर गाय के दूध में मिलाकर गरम करके बैल को पिलायें ।

बत्ती

इस रोग में बैल को गुदा में बत्ती चढ़ाई जाती है । उसका नुस्खा यह है—

इन्द्रायन के फल का गुदा और देशी शराब समान भाग लेकर दोनों को पीसकर कपड़े की वत्ती पर चुपड़ लें और उस बत्ती को बैल की गुदा में दवा दे।



बकरी, मेंढ़ा और हिरन

के

रोग व उनकी चिकित्सा

खांसी

चिकित्सा—एक छटांक गिलोय, एक तोला सौंठ, एक जायफल कूट पीसकर चूर्ण बनाकर उसे मांड के साथ पिलादें ।

खुराक—दूध पिलायें । नमक डालकर मांड दें ।

पेट का फूलना

अधिक खा जाने से बकरी का पेट फूल जाया करता है । यदि ऐसा हो जावे तो उसकी निम्नलिखित चिकित्सा करें ।

(१) कच्ची हल्दी का पानी और शहद मिलाकर खिलावें ।

(२) कच्ची हल्दी (चूरा) एक छटांक, दूब का रस एक छटांक, पुराना गुड़ आधा पाव ।

इन चीजों को मिलाकर पीसें और बकरी को खिलायें ।

पतले दस्त या दस्तों में खून आना

काली मिर्च (महीन की हुई) एक तोला, सेंधा नमक ढाई तो०, सफेदा ढाई तोला, सबको कूट पीसकर चूर्ण बनायें और बकरी को खिलायें।

अजवायन आधा तो०, खड़िया मिट्टी ढाई तोला, चिरायता एक तोला।

इन सबको अलग-अलग पीसकर मिलायें और दिन में एक या दो बार बकरी की अवस्था देखकर खिलाये।

पेट में दर्द

अदरक और प्याज का रस, हींग और नमक मिलाकर आधी कच्ची आधी भुनी हुई अजवायन के साथ खिलायें।

कच्चे नारियल का पानी, थोड़ा पुराना गुड़ डालकर गरम करके दें।

कदम के पत्तों का रस, अजवायन का अर्क गुड़ के साथ खिलायें।

ज्वर

लक्षण—बकरी को ज्वर हो जाने पर उसके नाक और मुँह से पानी बहता है, खांसती है, नाक से श्वांस न लेकर मुंह से श्वांस लेती है।

चिकित्सा—कपूर एक तोला, चिरायता एक तोला, गिलोय डेढ़ तोला, तीनों औषधियों को पीसकर मिलाकर खिलायें।

काला जीरा एक तो०, पुराना गुड़ एक छटांक, शोरा चौथाई

तोला, तीनों चीजों को पीसकर मिलायें और गरम भात की फेन के साथ खिलायें।

यदि बकरी को अजीर्ण हो और उसका पेट कुछ बड़ा मालूम हो तो उसका इलाज शुरु करने से पहले निम्नलिखित जुलाब दें।

शोरा तोला, देशी शराब ३ छटांक, कपूर एक तोला।

पहले शराब में कपूर को मिलायें बाद में शोरा मिलायें और फिर बकरी को खिलायं।

सूजन

बकरी या हिरन के शरीर का कोई भाग सूजने पर मेंहदी की पत्तियों को जल में पीसकर मटर के पत्तों में रखकर सेक कर सूजन के स्थान पर बांध दे।

सहजने की छाल जल में पीसकर सुजन वाली जगह पर दिन में दो तीन बार लेप करें।

फोड़े

हिरन, मेंढ़ा या बकरी की देह में फोड़े होकर कीड़े पड़ जायें तो निम्नलिखित इलाज करें।

कोयला बारीक पिसा हुआ, अलसी महीन की हुई, दोनों चीजें एक तोला लेकर मिलादें और घाव पर बांधें।

पतले दस्त या दस्तों में खून आना

काली मिर्च (महीन की हुई) एक तोला, सेंधा नमक ढाई तो०, सफेदा ढाई तोला, सबको कूट पीसकर चूर्ण बनायें और बकरो को खिलायें।

अजवायन आधा तो०, खड़िया मिट्टी ढाई तोला, चिरायता एक तोला।

इन सबको अलग–अलग पीसकर मिलायें और दिन में एक या दो बार बकरी की अवस्था देखकर खिलाये।

पेट में दर्द

अदरक और प्याज का रस, हींग और नमक मिलाकर आधी कच्ची आधी भुनी हुई अजवायन के साथ खिलायें।

कच्चे नारियल का पानी, थोड़ा पुराना गुड़ डालकर गरम करके दें।

कदम के पत्तों का रस, अजवायन का अर्क गुड़ के साथ पिलायें।

ज्वर

लक्षण—बकरी को ज्वर हो जाने पर उसके नाक और मुँह से पानी बहता है, खांसती है, नाक से श्वांस न लेकर मुंह से श्वांस लेती है।

चिकित्सा—कपूर एक तोला, चिरायता एक तोला, गिलोय डेढ़ तोला, तीनों औषधियों को पीसकर मिलाकर खिलायें।

काला जीरा एक तो०, पुराना गुड़ एक छटांक, शोरा चौथाई

तोला, तीनों चीजों को पीसकर मिलायें और गरम भात की फेन के साथ खिलायें।

यदि बकरी को अजीर्ण हो और उसका पेट कुछ बड़ा मालूम हो तो उसका इलाज शुरु करने से पहले निम्नलिखित जुलाब दें।

शोरा तोला, देशी शराब ३ छटांक, कपूर एक तोला।

पहले शराब में कपूर को मिलायें बाद में शोरा मिलायें और फिर बकरी को खिलायें।

सूजन

बकरी या हिरन के शरीर का कोई भाग सूजने पर मेंहदी की पत्तियों को जल में पीसकर मटर के पत्तों में रखकर सेक कर सूजन के स्थान पर बांध दें।

सहजने की छाल जल में पीसकर सुजन वाली जगह पर दिन में दो तीन बार लेप करें।

फोड़े

हिरन, मेंढ़ा या बकरी की देह में फोड़े होकर कीड़े पड़ जायें तो निम्नलिखित इलाज करें।

कोयला बारीक पिसा हुआ, अलसी महीन की हुई, दोनों चीजें एक तोला लेकर मिलादें और घाव पर बांधें।

नीम के पत्ते दो तोला और गाय का खालिस घी एक तोला, दोनों को खूब पीसकर घाव पर लगायें।

पेट के कीड़ें

आधी छटांक आंवला, दो तोला अनार की जड़ की छाल का रस, इन दोनों में रत्ती कपूर मिलाकर पिलायें।

नीम और नीबू के पत्ते हुक्का के पानी में पीसकर थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर पिलायें।

सींग टूटना

कोयला पीसकर उसमें थोड़ा-सा अरण्डी का तेल मिलाकर लगायें। दर्द दूर होकर घाव ठीक हो जाएगा।

पक्षाघात

देह के किसी भाग पर बात का प्रकोप होने से यदि बकरी हिलने-जुलने से रहे तो गन्धक, नीम के पत्ते, शोरा और काला नमक घोटकर बात वाली जगह पर लेप करें।

धतूरे के पत्ते पर अफीम और अरण्डी का तेल चुपड़कर गरम-गरम उक्त स्थान पर बांध दें।

—●—

कुत्ते के रोग

और

उनकी चिकित्सा

खांसी

गेठेला, अकरकरा, गुञ्जा मूल, तिवड़, तेजपात, वहेड़ा, इन सब पदार्थों को समभाग लेकर पानी में उबालें, पानी के आधा रह जाने पर, गाढ़ा-२ लेकर गले में मालिश करदें।

पुराना गुड़ छः तोला, काला नमक दस तोला, गन्धक पिसी हुई पांच तोला, चारों चीजों को महीन करें और पानी में तर करें और दिनभर धूप में रखकर सुखायें, फिर आवश्यकतानुसार शहद मिलाकर चटनी बनायें और थोड़ी-थोड़ी खिलायें।

ज्वर

ज्वर आ जाने पर कुत्ता सुस्त हो जाता है। उनकी देह गरम हो जाती हे तथा उसकी आंखे सुर्ख हो जाती हैं। उसका खान-पान छुट जाता है।

चिकित्सा—काली मिर्च, सफेद जीरा, हल्दी, धौलो दूब, सेंधा नमक, सब चीजों का आधा २ तो० लेकर मिलावें और ढाई तोला की मात्रा में लेकर एक मिट्टी के बर्तन में आधा सेर जल के साथ उबालें। आधा पाव जल रह जाने पर यह काढ़ा आधा प्रातःकाल और आधा सांयकाल कुत्ते को पिलावें।

अजवायन ढाई तोला, कपूर तीन माशे, मेथी ढाई तोला, काला जीरा एक तोला। इन सब औषधियों को अधकुचला कर आधा सेर जल में डालकर मिट्टी के बर्तन में उबालें। जब पानी आधा पाव रह जाए तो उतार लें। आधा सुबह और आधा शाम को कुत्ते को पिलायें।

पेचिश

पेचिश यानी मरोड़ जिसमें दर्द के साथ खून व आँव मिला बार-बार दस्त हो कोई चीज न आये, हाथ लगाने से चमक उठे। तड़फें, आराम से न बैठे। कभी इधर को जाए कभी उधर को, बहुत बेचैन हो।

चिकित्सा—शहद एक छटांक, तेजपात आधी छटांक, गुग्गुल आधा तो०। इन सब चीचों को बारीक पीसकर कपड़छान करके शहद में मिलाकर ५-६ दिन तक कुत्ते को चटायें।

अरण्डी का तेल (कांस्ट्रायल), धतूरे के पत्तों का रस, अजवायन का अर्क, करंज की छाल, बाँस के पत्तों को उबाल कर उनका पानी, पीपल के पत्तों को उबाल कर उनका पानी, हस्तितुण्डी के पत्तों का रस समान भाग लेकर भलीभांति मिलायें और धीरे-धीरे कुत्ते के पेट पर मालिस कर।

मालिश तीन चार दिन तक दिन में चार पाँच वार करें। कुत्ता तन्दुरुस्त हो जायेगा।

पक्षियों के रोग और उनकी चिकित्सा

पक्षियों के रहने का स्थान—यानी मुर्गीखाना ऊँची जमीन पर बनाना चाहिए। वह खुला साफ और हवादार होना चाहिए। प्रत्येक मुर्गीखाने के सामने थोड़ी सी खुली जगह अवश्व होनी चाहिए। छः मास के पश्चात इस खुली जगह की जमीन छः इन्च के लगभग खोदकर मिट्टी दूर फेंक देनी चाहिए और उनके स्थान पर नई मिट्टी वहाँ ढ़लवा देनी चाहिए। पक्षियों को होने वाली बीमारितों की रोकथाम की यह सर्वोप्रथम विधि है।

खुराक—प्रायः लोग मुर्गियों को गंदा और झूठा भोजन देकर पालते है। यह ठीक नहीं, गन्दे भोजन से जानवर बहुत जल्द रोगो हो जाता है। मुर्गी तो एक फैक्ट्री की भांति है। जब तक हम उसको ऐसा भोजन न खिलायेंगे जो अण्डों को तैयार करने के लिये आवश्यक है मुर्गी कभी अण्डे न देगी। अच्छी और बुरी खुराक के सम्बन्ध में निम्न में एक उदाहरण दे रहा हूं। जिससे आपको पता चल जायेगा कि अच्छी और बुरी में क्या अन्तर है और बुरो खुराक जानवर को देने में क्या फल होता है।

दो स्त्रियों ने मुर्गी पाली हुई थी। एक स्त्रा के पास छत्तीस और दूसरी के पास सौ मुर्गियां थी। किन्तु एक दिन

पशुओं के समाचार पत्र में निकला कि पहली स्त्री जिसके पास छत्तीस मुर्गियां थीं एक सौ इक्कीस अण्डे मिले और दूसरी स्त्री जिसके पास सौ मुर्गियाँ थीं एक भी अण्डा न मिला। उसका कारण केवल यह था कि पहली स्त्री अपने जानवरों का पालन पोषण अच्छी तरह से करती थी और दूसरी स्त्री जिसके पास सौ मुर्गियां थी उनका अच्छी तरह से ध्यान न रखती थी और जानकारी न होने के कारण उनको खराब व गन्दा भोजन देती थी।

इस घटना से पाठकों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उनको लाभ तभी हो सकता है यदि उनके देख रेख के सम्बन्ध में हर तरह को जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् उनका पालन उसी तरह से करें जैसे कि करना चाहिए।

सस्ता परन्तु पौष्टिक भोजन

जहां तक हो सके मुर्गे और मुर्गियों को सस्ता व पौष्टिक भोजन खिलाओ ताकि खर्च कम हो। इस बात को ध्यान में रखते हुए चोकर (छान) और मांड मिलाकर खिलाना बहुत ही लाभदायक है। मछली की अपेक्षा मांस की चर्वी जो कसाईयों से सस्ते दामों पर मिल सकती है, टुकड़े करके खिलाई जा सकती है। विलायत में सूअर का रद्दी मांस जो बहुत सस्ता होता है कोमा बनाकर उबाल कर और ठण्डा करके खिलाते हैं जो कि बहुत ही लाभदायक प्रमाणित हुआ है। इस तरह मंहगी सब्जी के स्थान पर सस्ती सब्जी खिलाई जा सकती है।

शरद ऋतु में अण्डें की माग एक दम बढ़ जाती है और उसके साथ ही अण्डों के दाम भी दुगने हो जाते हैं। इसलिये शरद ऋतु में अधिक अण्डे प्राप्त करके दुगना लाभ उठाया जा सकता है किंतु यह भी देखा गया है कि मुर्गियां

शरद ऋतु में अण्डे कम देती हैं। यदि हम चाहते हैं कि मुर्गियां सर्दियों में भी ठीक तरह से अण्डे दें और इसके साथ ही वह स्वस्थ भी रहें तो हमें उनकी आवश्यकताओं का भलीं भांति ध्यान रखना चाहिए।

वसन्त ऋतु में मुर्गियां सर्दी के मौसम की अपेक्षा अण्डे अधिक देती है और खुराक वायुमण्ड़ल के गरम होने के कारण सर्दियों को अपेक्षा कम खाती हैं। इसका कारण यह है कि वसन्त ऋतु में वायु मण्डल के गरम होने के कारण अण्डे अधिक देती है अतः सर्दियों में अधिक अण्डे प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है मुर्गियों को ऐसा भोजन दिया जाए जो कि कुछ गरम हो। सप्ताह में दो तीन बार थोड़ा सा मांस का कीमा उवालने के पश्चात् ठण्डा करके खिलाना वहुत लाभदायक प्रमाणित हुआ है। यदि ऐ सा न करेंगे तो मुर्गियों की अण्डे देने की शक्ति बहुत कम हो जाएगी।

व्यापार की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि मुर्गी पालने वाले सज्जन कुछ ऐसे जानवर तैयार करें जो कि नुमायश में इनाम प्राप्त कर सकें। यदि एक दो जानवरों को इनाम मिल जावे तो फिर कारोबार की उन्नति की कुछ न पूछिये। यों तो मालिक मुर्गीखाने के लिए यह जरूरी है कि वह अपने हर जानवर के स्वास्थ्य की और पूरा-२ ध्यान दें परन्तु जो जानवर उसे नुमायश में भेजने हों उनके स्वास्थ्य की और ध्यान देना अत्यावश्यक है। दूसरे जानवर यदि बीमार हो जाये तौ इसमें इतनी हानि न होगी जितनी कि नुमायश के लिये तैयार किये जाने वाले जानवरों के बोमार होने से होगी। अतएव ऐसे जानवरों के स्वास्थ्य की और पूरा-२ ध्यान देना आवश्यक है। नुमायश में जाने वाले जानवरों के लिये बच्चे जनवरी में

निकलने चाहिये और नर बच्चों को हड्डी की राख गन्दम आटे में मिलाकर देनी चाहिये। तथा मांस का कीमा उबालने के पश्चात ठन्डा करके थोड़ी सी प्याज मिलाकर खिलानी चाहिये। आटे में थोड़ी सी गन्धक मिलाकर भी शाम को कभी-कभी खिलानी चाहिये ताकि उसके बाद जानवर पानी न पी सके। चिलगोजे, मूंगफली और बादाम की गिरी भी कभी-२ खिलाना लाभदायक है।

नुमायसी पक्षियों को अलग दरबों में रखना चाहिये। ऐसा करने से रोगी होने की दशा में उनके रोग का फौरन ही पता चल सकता है। एक दरबे में एक से लेकर छः तक पक्षी रखे जा सकती है। उनके अङ्ग ठीक तरह से बढ़ रहे हैं इस बात का बहुत ही ध्यान रखना चाहिये।

ताज—ताज के बढ़ाने के लिए गरम दूध में चोटी भिगो कर उस पर नित्य प्रति वैसलीन की मालिश करनी चाहिये।

कान—नुमायस को भेजने से पहले कानों को धोकर किसी मुलायम कपड़ें से साफ करके उन पर धीरे-२ मक्खन मलाना चाहिये ऐसा करने से कान लम्बे और चौड़े हो जाते हैं। सफेदी बढ़ाने के लिए दूध से धोकर सूख जाने पर उन पर थोड़ा सा पाऊडर डाल देना चाहिये।

टांगों की सफाई—कई मुर्गों की टाँगें रंगदार और कई की टांगें सफेद होती हैं। टांगों को गरम पानी और साबुन लेकर एक शक्त बुरूश के साथ खूब साफ किया जाये, अच्छी तरह सुखाने के के पश्चात तेल या बैसलीन की भलीभांति मालिश करदी जाये।

परों का चमकीला करना—सफेद परों वाले जानवरों को रोटी और दूध देना चाहिये।

काले रंग की मुर्गियों को अलसी के बीज उबाल कर एक चाय का चमचा प्रातः काल की खुराक में मिलाकर खिलाना चाहिये ।

नोट—याद रखें कि अलसी के बीज सफेद रंग की मुर्गीयों को कदापि न देना चाहिये ।

थोड़ा सा मछली का तेल भी दे सकते हैं परन्तु अधिक मात्रा में न देना चाहिये । आपको सुगमता के लिए निम्न पक्षियों के भोजन का वर्णन उनके रंगों के अनुसार कर रहा हूं ।

सफेद रंग की मुर्गीयों के लिय भोजन

प्रात:काल—चोकर(आटे की छानन) एक भाग, मांस का कीमा उबाल कर आधा भाग, जई का आटा दो भाग । इन तीनों चीजों को यदि दूध में भिगोकर खिलाया जाये तो अच्छा है, नहीं तो जल में तर करके खिलाया जाये अथवा रोटी को दूध में तर करलें और उसमें जई का आटा मिलाकर खिलायें ।

मध्यान्ह—उबले हुये चावलों में थोड़ा जई का आटा डाल-कर खिलाया जाये । सायंकाल—गेहूँ दिये जायें ।

पीले रंग के पक्षियों के लिए भोजन

प्रात:काल—चौकर (छानन) एक भाग, मकई का दलिया एक भाग, मांस का कीमा उबाल कर आधा भाग, भूसी पानी में उबाल कर दो भाग ।

मध्यान्ह—उबले हुये चावल एक भाग, जई का दलिया आधा भाग, मकई का दलिया आधा, भाग ।

सायंकाल—गेहूं तीन भाग, मकई एक भाग ।

काले रंग के पक्षियों के लिए भोजन

प्रातःकाल—चोकर एक भाग, गोश्त का कीमा उबाला हुआ आधा भाग, अलसी के बीज चौथाई भाग ।

मध्यान्ह—चावल उबाल कर एक भाग, भूसी उबाल कर एक भाग, मकई का आटा उचित मात्रा में ।

सायंकाल—दली हुई मकई एक भाग, दले हुए मटर एक भाग, गेहूं दो भाग ।

यदि अलसी के बीज न मिले तो उनके स्थान पर भोजन में चोथाई चमचा प्रति जानवर के हिसाब से कार्ड लीवर आयल (मछली का तेल) पिलाया जा सकता है ।

उपरोक्त खुराक के अतिरिक्त सब्जी प्रत्येक दशा में देना लाभदायक है । इसके लिए उनको दोनों समय कुछ काल के लिये बाग में छोड़ दिया जाय, जहां से जानवर इत्यादि खा सके वरन् हरा साग इत्यादि काटकर उनको खिलाया जावे ।

बच्चों की खुराक

बच्चों को कुछ दिनों तक खुश्क चावल खिलाने के बाद धुला हुआ बाजरा चुगाना चाहिए, इसके अतिरिक्त कीड़े मकोड़े दीमक और टिड्डी बहुत लाभदायक भोजन है । कभी-२ साग पात और सब्जी तरकारी भी देनी चाहिए ।

अधिक भोजन की आवश्यकता उस समय होती है जबकि जानवर को लड़ाई के लिए तैयार किया जा रहा हो । चूजा जब आठ दस मास का होता है तो उसे लड़ाई के लिये तैयार किया जाता है इन दोनों में मुर्गे को एक बार जल, दो बार भोजन दिया जाता है पहली खुराक प्रातः काल दस वजे और दूसरी चार बजे

शाम को दी जाती है। जल तीन बजे पिलाया जाता है। पहली खुराक अण्डे और बादाम की होती है और दूसरी धुले हुये बाजरे की।

प्रारम्भ में एक अण्डे की जर्दी और पांच बादाम दिये जाते हैं। कई बार दो तीन बादामों से शुरू करते हैं। किन्तु ठीक मात्रा पांच बादामों की है। फिर धीरे-२ बढ़ाते-२ बीस बादाम करदें।

तैयारी के दिनों में जब अण्डा, बादाम शुरू किया जाता है तो व्यायाम भी साथ ही शुरू किया जाता है। बरना मुर्ग खुराक की अधिकता सहन नहीं कर सकता और लड़ाई के लिये भी तैयार नहीं हो सकता।

घावों की चिकित्सा

मुर्ग लड़ाई में बुरी तरह से घायल हो जाते हैं उसका मुँह तो बहुत बुरी तरह से जखमी हो जाता है। इसके लिये लड़ाई के बाद सात दिन तक नित्य प्रति एक छोटी सी गद्दी से मुर्ग के शरीर को सेका जाये और निम्नलिखित विधि से उसकी चिकित्सा की जावे।

(१) एक पान लगा हुआ (जिसमें कत्था चूना बराबर के लगे हुये हों) लेकर मुंह में चबाकर उसकी पीक फूंक के साथ मुर्ग के मुँह पर मारी जावे।

२—गर्म पानी में फिटकरी मिलाकर उस पानी से मुर्ग के मुंह को साफ करने की विधि यह है कि रुई का टुकड़ा लेकर इस पानी में उसको भिगोकर उसमें मुंह को धो दिया जाय, इससे जखम बहुत जल्द मिट जायेंगे।

पक्की खुराक

अण्डे की जर्दी और घी आवश्यकतानुसार लें, घी थोड़ा गर्म करें अण्डे की जर्दी और चीनी मिलाकर हलवा सा तैयार

करें हलवा गर्म हो और नर्म हो, सख्त बिल्कुल न हो यह पक्की खुराक कहलाती है। इसे एक साल से अधिक के मुर्गे को देना चाहिये।

मुर्गे का पेट साफ करना

लड़ाई के वाद मुर्गे का पेट साफ करने के लिये गुड़, हल्दी और काली मिर्च देकर उसका पेट साफ करदें।

पाचन शक्ति

पाचन शक्ति के लिए मुर्गे के मुँह में एक चुटकी कालो मिर्च डाल दिया करें, इससे मुर्गे की पाचन शक्ति ठोक रहती है।

सरदी के जोर के लिये

मुर्गे को दाने में अजवायन खिलाते रहें, इससे मुर्गा सरदी से होने वाले रोगों से बचा रहेगा ओर हाजमा भी ठीक रहेगा।

मुर्गे का परों का काटना

यदि शरद ऋतु मुर्ग पर काटे तो चने के छिलकों वालों दाल को भिगोकर उसका पानी पिलादे।

आंख पर चोट लगना

यदि किसी दूसरे मुर्ग के साथ लड़नें से आंख में चोट लग जाय तो लाल फिटकरी का फूला करके वर्षा के जल में या स्वच्छ जल (भाप का पानी) में घोलकर दस–दस मिनट के अन्तर से आंख में डालते रहें और मुर्ग को अन्धेरे में रखें ताकि वह प्रकाश को न देख सके।

॥ समाप्त ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh